पंद्रह प्रभावशाली

रेडियो प्रवचन

★

★

★

लेखक

सनी डेविड

प्रकाशक :

मसीह की कलीसिया

बॉक्स नं० ३८१५

नई दिल्ली-११००४६

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेश

(भाग पांच)

प्रथम संस्करण १९७७

मुद्रक :

पाईनियर फाईन आर्ट प्रेस,

अजमेरी गेट, दिल्ली-६

परीचय

एक बार फिर मुझे इस बात से बड़ी ही प्रसन्नता है, कि यह अवसर व सम्मान मुझे प्राप्त है कि मैं आपका परीचय भाई सुनी डेविड के रेडियो प्रवचनों के इस पांचवें भाग से कराऊं। इस बात को ध्यान में रखकर, कि अपने प्रचारक व उनके प्रवचनों से जिस अच्छी तरह से मैं परीचित हूं, मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि उनके प्रवचन रेडियो तथा इस पुस्तक के माध्यम से श्रोताओं व पाठकों के लिये बड़े ही लाभदायक तथा महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

पिछले कुछ वर्षों में भाई डेविड ने हिन्दी तथा अंग्रेज़ी में अनेकों लेख लिखे हैं। मैं आपको यह भी बताना चाहता हूं, कि अंग्रेज़ी में छपनेवाली हमारी मासिक पत्रिका "बाइबल टीचर" के वे सह-सम्पादक भी हैं, और साथ ही कलीसिया के अनेकों अन्य कार्यों में भी वे खासे व्यस्त हैं। किन्तु, इन सब कार्यों के होते हुए भी, पिछले लगभग दो वर्षों से वे निरन्तर "सत्य सुसमाचार" कार्यक्रम में बोल रहे हैं।

इन पाठों के द्वारा, हम आपका ध्यान विशेष रूप से इस विषय पर दिलाना चाहते हैं, कि आप जानें कि पवित्र बाइबल उन अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण बातों के बारे में क्या कहती है जिनका सम्बन्ध आपकी आत्मा से है। आपको अवश्य ही उस योजना के बारे में पता होना चाहिए, जिसका प्रकाशन परमेश्वर ने अपने पवित्र वचन में किया है, जो बताती है कि उद्धार पाने के लिये आपको क्या करना चाहिए। आपको अवश्य ही ज्ञात होना चाहिए, कि प्रभु की कलीसिया, सच्ची उपासना, और मसीही जीवन वास्तव में क्या है। इसलिये, हम आपको प्रोत्साहित करके कहना चाहते हैं, कि आप अपनी बाइबल के प्रकाश में इस पुस्तक

को गम्भीरता से पढ़ें। और हां, जब आप सच्चाई को जान लेते हैं तो उस पर चलने का निश्चय करें।

अंत में, हम भाई फ्रांसिस डेविड और सैमसन डेविड का भी धन्यवाद करना चाहते हैं, जिन्होंने कार्यक्रम में एनाउन्सर के रूप में भाग लिया। और हम उन सब का भी धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने उन गानों में भाग लिया जो "सत्य सुसमाचार" कार्यक्रम में सम्मिलित हैं।

अब, इन्ही बातों के साथ, हम आपको इस पुस्तक को पढ़ने का निमन्त्रण देते हैं।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली

लेखक की ओर से

आपके हाथ में यह पुस्तक उन पन्द्रह प्रवचनों का संकलन है जिन्हें मैंने, विशेष रूप से, रेडियो द्वारा प्रसारण के उद्देश्य से लिखा था। इन्हें संदेश या पाठ भी कहा जा सकता है। प्रत्येक पाठ का अपना ही एक विषय है, परन्तु इन सब का केवल एक ही लक्ष्य है, और वह यह है, कि आप को अन्धकार के बन्धनों से छुड़ाकर ज्योति के खुले वातावरण में पहुंचाए, जहां आप स्वयं अपने रचयिता को वास्तव में पहिचान सकें। मेरे उद्धारकर्त्ता ने कहा, **"सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"** (यूहन्ना ८:३२)।

हां, हमारे रेडियो कार्यक्रम के नियमित श्रोता इस बात से भलि-भांति परीचित हैं, कि इस से पूर्व रेडियो प्रवचनों की चार अन्य पुस्तकों का प्रकाशन हमारे यहां से हो चुका है। उन्हीं पूर्वसंकलित ६२ प्रवचनों में इन पन्द्रह प्रवचनों को जोड़ने के उद्देश्य से प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन किया गया है।

यह मेरी प्रार्थना है, कि जबकि आप प्रभु के वचन के प्रकाश में इस पुस्तक को पढ़ते हैं, तो वह आपकी अगुवाई करे।

सनी डेविड

सत्य सुसमाचार
पोस्ट बॉक्स न० ३८१५
नई दिल्ली ११००४९

विषय-सूची

१.	शिष्यता का दाम	... ९
२.	यीशु का क्रूस	... १९
३.	मसीह का लोहू	... २८
४.	ढिठाई का पाप	... ३८
५.	कलीसिया का संक्षिप्त इतिहास	... ४७
६.	वे बुद्धिमान् थे	... ५८
७.	मसीह में	... ६६
८.	केवल एक	... ७५
९.	परमेश्वर की दृष्टि में	... ८३
१०.	आप किस मूल्य पर बेच रहे हैं ?	... ९३
११.	प्रार्थना कैसे करें	... १०१
१२.	आप क्या चुनेंगे ?	... ११०
१३.	क्रोधित, शोकित, या आनन्दित	... ११८
१४.	सब मनुष्य दुख क्यों भोगते हैं ?	... १२६
१५.	आप कैसे सुनते हैं ?	... १३४

१

शिष्यता का दाम

मित्रो

आप में से कुछ लोग कभी-कभी कदाचित् यह सोचते हों कि इन सब बातों से, जो हम आप लोगों को बार-बार बताते हैं, हमारा क्या उद्देश्य है ? हमारा उद्देश्य किसी भी प्रकार से आपका मनोरंजन करना नहीं है। जिन बातों के ऊपर हम आपका ध्यान दिलाना चाहते हैं वे बातें वास्तव में बड़ी ही गम्भीर हैं। हम आप को आप के जीवन का उद्देश्य बताना चाहते हैं; हम आपको आप की आत्मा का महत्त्व दिखाना चाहते हैं। हम आपको यह बताना चाहते हैं कि मनुष्य अपने पापों में खोया हुआ है; उसे मुक्ति की आवश्यकता है। क्योंकि इस जीवन के बाद हर एक मनुष्य का न्याय होगा, और उस न्याय के अनुसार हर एक मनुष्य आत्मिक रूप से या तो परमेश्वर के साथ, या नरक की ज्वाला में अनन्तकाल तक रहेगा।

हम आपको बताना चाहते हैं, कि परमेश्वर अपनी पुस्तक बाइबल में कहता है कि "मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" (इब्रानियों ९ : २७) और यह "अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किए हों पाए।" (२ कुरिन्थियों ५ : १०)।

"सो प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं.....

अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। सो हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है : हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो" क्योंकि "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५ : ११, १९-२१)।

हम आपको बताना चाहते हैं कि एक ही परमेश्वर है, और उस एक परमेश्वर का केवल एक ही मार्ग है जिस पर चलकर मनुष्य परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकता है। और वह एक मात्र मार्ग है, यीशु मसीह, परमेश्वर का एकलौता पुत्र। परमेश्वर ने यीशु को इस संसार में भेजा सि वह खोए हुओं को ढूंढ़े और बचाए। प्रभु यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)। इसलिये, परमेश्वर पिता के पास आने के लिये; अपनी आत्मा की मुक्ति प्राप्त करने के लिये; हर एक मनुष्य के लिये यह बड़ा ही आवश्यक है कि वह यीशु मसीह के पीछे चले, क्योंकि वह परमेश्वर का मार्ग है। इसी कारण, प्रभु यीशु ने आरम्भ में अपने प्रथम चेलों को आज्ञा देकर कहा, "इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती २८ : १९, २०)।

इस तरह से, कोई भी मनुष्य यीशु का एक चेला बन सकता है। परन्तु हर एक मनुष्य यीशु का चेला नहीं हो सकता। उस समय, जब कि यीशु पृथ्वी पर था बहुतेरे लोग उसके पीछे हो लिए थे, परन्तु उन में

से हर एक उसका चेला नहीं था; क्योंकि उन में से सब में वे विशेषताएं नहीं थीं जिन्हें यीशु के एक चेले में होना आवश्यक है। एक स्थान पर हम पढ़ते हैं, कि एक बार "जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उस ने पीछे फिरकर उन से कहा, यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़केबालों और भाईयों और बहिनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। और जो कोई अपना क्रूस न उठाए; और मेरे पीछे न आए; वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता। तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की विसात मेरे पास है कि नहीं? कहीं ऐसा न हो कि जब नेव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें: कि यह मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर सका! या कौन ऐसा राजा है, कि दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहिले बैठकर विचार न कर ले, कि जो बीस हज़ार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हज़ार लेकर उसका सामना कर सकता हूं, कि नहीं? नहीं तो उसके दूर रहते ही, वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा। इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" (लूका १४: २६-३३)।

यहां प्रभु यीशु के कहने का अभिप्राय यह है; कि इससे पहिले कि कोई मनुष्य उस के पीछे चलने का विचार करे, उसे बैठकर उस दाम को गिन लेना चाहिए जो उसे चुकाना पड़ेगा। अर्थात्, उसे यीशु के कारण सब कुछ त्यागने के लिये तैयार रहना चाहिए। सो, वह दाम क्या है?

उसने कहा, "जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।" (मत्ती १०:३७)। उसके कहने का अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि मनुष्य अपने माता-पिता, बेटा-बेटी,

भाई-बहिन इत्यादि से प्रेम न रखे। परन्तु उसका अर्थ है, कि यदि कोई भी मनुष्य मेरे पीछे आना चाहे, और इनमें से किसी से भी मुझ से अधिक प्रेम रखे तो वह मेरे योग्य नहीं। प्रभु चाहता है कि उसका अनुयायी सबसे अधिक उसको प्रिय जाने, सबसे अधिक उसी से प्रेम रखे। इसका अर्थ क्या है ? एक अन्य स्थान पर प्रभु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" (यूहन्ना १४:१५)। इसलिये, यीशु का चेला केवल वही मनुष्य हो सकता है जो अपने जीवन में सबसे पहिला स्थान केवल उसी की आज्ञाओं को दे। इसके अतिरिक्त मनुष्य के पास अपने प्रेम को उसके प्रति व्यक्त करने का और कोई साधन नहीं है। हमें अपने माता-पिता इत्यादि से प्रेम रखना चाहिए, हमें उनकी आज्ञाओं को मानना चाहिए, परन्तु यदि उन की कोई आज्ञा हमें प्रभु यीशु की आज्ञा को मानने से रोकती है, तो उनकी उस आज्ञा को मानने के विपरीत हमें प्रभु की आज्ञा को मानना चाहिए। अर्थात्, हम प्रभु के सच्चे चेले केवल तभी हो सकते हैं, जबकि हमारा प्रेम, उसके प्रति इतना अधिक हो कि संसार का कोई भी प्राणी वा कोई वस्तु इतनी सामर्थपूर्ण न हो कि हमें उसकी आज्ञाओं को मानने से रोक सके या हमें उस से अलग कर सके। इसी तरह के प्रेम का वर्णन करके प्रेरित पौलुस कहता है, "कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा ?" और फिर वह पूछता है, "क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई या जोखिम, या तलवार ?" और वह कहता है, "क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।" (रोमियों ८ : ३५, ३८-३९)। सो यीशु का एक सच्चा चेला होने के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य सबसे अधिक केवल उसी से प्रेम रखे।

और केवल यही नहीं, परन्तु प्रभु ने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपना प्राण खो दे, या उस की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?" (लूका ९ : २३-२५)। यहाँ हम देखते हैं, कि प्रभु मनुष्य की आत्मा के बड़े महत्त्व को उसे दिखाता है। अर्थात्, यदि मनुष्य संसार की सारी वस्तुओं को प्राप्त करे, और यदि उसके पास यीशु नहीं है, तो उसे क्या लाभ प्राप्त होगा? क्योंकि संसार की कोई भी वस्तु और सारी वस्तुएं मिलकर भी उसकी आत्मा को बचाने की सामर्थ नहीं रखतीं। सो अपनी आत्मा को बचाने के लिये आवश्यक है कि मनुष्य यीशु के पीछे चले, और यहां तक कि उस के पीछे चलने के लिये यदि उसे अपने प्राणों को भी खोना पड़े तो पीछे न हटे। क्योंकि उसने कहा, "जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लियें अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा।" यह दाम वास्तव में बहुत बड़ा है, परन्तु तौभी यीशु के पीछे चलने के लिये यह आवश्यक है।

इस बात पर ध्यान दें, कि प्रभु किसी को भी अपने पीछे ज़बरदस्ती आने को नहीं कहता, परन्तु वह स्पष्ट रूप से कहता है कि "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे।" इसलिये, हर एक मनुष्य को अपनी इच्छा से यह चुनना है कि वह यीशु के पीछे चलेगा या नहीं। और यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे"। इस कारण, यदि कोई मनुष्य यीशु के पीछे चलने का निश्चय कर लेता है, तो यह आवश्यक है कि वह अपने आप से इन्कार करे। उसे जानना चाहिए, कि अब वह नहीं परन्तु मसीह उसमें रहता है। और इसलिये, अब यीशु मसीह की इच्छा उसकी इच्छा होनी चाहिए। उसे अपने आप

पर अब कोई अधिकार नहीं; क्योंकि अब यीशु उसका प्रभु है; और उसी की इच्छा पूर्ण करना उसका कर्त्तव्य है। कोई भी मनुष्य वास्तव में यीशु का चेला नहीं हो सकता यदि वह अपने आप से इन्कार न करे। उसे अपने आप से इंकार करना चाहिए, जब उसके सामने परीक्षा आए; उसे अपने आप से इंकार करना चाहिए जब उसके सामने स्वार्थ आए। प्रेरित पौलुस कहता है, "जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। बरन मैं अपने प्रभु यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं जिस कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं, और उस में पाया जाऊं।" (फिलिप्पियों ३ : ७-९)।

सो हम देखते हैं, कि प्रभु यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।" इस से हम समझते हैं, कि जो कोई भी यीशु के पीछे आना चाहता है उसे अपनी ही इच्छा से आना है; उसे अपने आप से इन्कार करना है, और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए उसके पीछे चलना है। यहां प्रभु का अभिप्राय क्रूस के उस निशान से नहीं है जिसे लोग अकसर अपने गले या हाथ में लेकर चलते हैं। वास्तव में, क्रूस दुख वा संकट का प्रतीक है। कोई भी मृत्यु इतनी दुख-पूर्ण वा यातना-दायक नहीं है जितनी की क्रूस की मृत्यु, और कोई भी मार्ग इतना कठिन वा संकट-पूर्ण नहीं है जितना की यीशु का मार्ग। अपना क्रूस उठाकर यीशु के पीछे चलने का अभिप्राय उन दुखों व कठिनाईयों से है जो उसके पीछे चलने के कारण निश्चित हैं। प्रभु का मार्ग सकरा मार्ग है, उसके भीतर प्रवेश करने का फाटक सकेत है, और उस पर केवल वही मनुष्य चल सकता है, जो प्रति दिन अपना क्रूस उठाकर उसके पीछे चलने के लिये तैयार है। इसमें कोई संदेह नहीं, कि यह दाम बहुत

बड़ा है। परन्तु प्रभु ने कहा, कि यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो उसे यह दाम चुकाना आवश्यक है।

इसलिये, जो कोई भी मनुष्य यीशु के पीछे चलना चाहता है, उसे चाहिए कि पहिले वह हिसाब लगा ले कि उसके पीछे चलने के कारण उसे क्या-क्या देना होगा। किन्तु, अकसर देखने में आता है, कि बहुतेरे लोग पहिले इस बात का हिसाब लगाते हैं, कि यीशु का नाम अपने ऊपर रखने के कारण उन्हें क्या-क्या मिलेगा! नए नियम में, एक स्थान पर हम पढ़ते हैं, (देखिए लूका ९ : ५७-६२), कि एक बार जब यीशु और उसके चेले मार्ग में जा रहे थे, "तो किसी ने उस से कहा, जहां-जहां तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूंगा।" इस पर "यीशु ने उस से कहा, लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं।" इसके बाद हम फिर नहीं पढ़ते कि वह व्यक्ति यीशु के पास दोबारा आया या उसके पीछे चला। वह यीशु के पीछे चलना तो चाहता था, परन्तु उसने दाम नहीं गिना था। कदाचित् उस ने यीशु को अनेकों आश्चर्यकर्म करते देखा होगा, या उस ने सुना होगा कि उसने हज़ारों लोगों को भोजन खिलाकर तृप्त किया, हर प्रकार की बीमारियों से अनेकों लोगों को चंगा किया। सो उस ने अपने मन में सोचा हो, कि उसके पीछे चलने से कदाचित् उसकी सारी सांसारिक कठिनाईयां दूर हो जाएंगी। परन्तु जब प्रभु ने उस से कहा, कि लोमड़ियों और पक्षियों के पास अपने-अपने बसेरे हैं परन्तु उसके पास सिर धरने तक को जगह नहीं, तो वह मनुष्य फिर उसके पीछे नहीं चला। ऐसे ही, आज भी संसार में ऐसे बहुतेरे लोग हैं जो यीशु के पीछे केवल तभी चलना चाहते हैं यदि उन्हें कोई व्यक्तिगत लाभ प्राप्त हो। परन्तु ऐसे लोग वास्तव में यीशु के चेले कभी नहीं हो सकते, क्योंकि प्रभु ने कहा, कि यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो वह अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे चले।

फिर, लिखा है कि "उस ने दूसरे से कहा, मेरे पीछे हो ले; उस ने कहा; हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं। परन्तु प्रभु ने उस से कहा, "मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।" यहाँ, यह व्यक्ति भी यीशु के पीछे हो लेने के लिये तैयार था, परन्तु उसके पीछे चलने की उसे इतनी चिन्ता नहीं थी जितनी कि अपने मरे हुए पिता को गाड़ने की उसे चिन्ता थी। वास्तव में, इस में कोई बुराई नहीं कि वह अपने पिता को गाड़ना चाहता था। परन्तु बुराई इसमें है कि प्रभु के पीछे चलने से अधिक वह अपने पिता को गाड़ने को महत्त्व दे रहा था। उसने कहा, कि पहिले मुझे जाने दे। सो प्रभु ने उस से कहा, कि मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे। अर्थात्, वे जो मेरे पीछे नहीं चल रहे हैं, जो मुझ में नहीं हैं, और इस तरह से अपने पापों में मरे हुए हैं, यह उनका काम है कि वे मुझ से पहिले किसी और बात की चिन्ता करें या मुझ से पहिले किसी और वस्तु को स्थान दें। परन्तु यदि मेरे पीछे हो लेना चाहता है तो तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।

इसी तरह से, "एक और ने भी कहा; हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूँगा; पर पहिले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं। यीशु ने उस से कहा; जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।" सो एक बार फिर हम देखते हैं, कि यह व्यक्ति यीशु के पीछे हो लेना चाहता था, परन्तु इस से पहिले वह अपने घर जाकर अपने लोगों से विदा लेना चाहता था। इस बात में भी हम देखते हैं कि कोई बुराई नहीं है, कि वह अपने घरवालों से विदा लेना चाहता था। परन्तु विशेष बात यह है, कि उस ने कहा, "पर पहिले मुझे जाने दे।" इस पर, यीशु ने उस से कहा, "जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।"

कोई भी मनुष्य वास्तव में यीशु का सच्चा अनुयायी तब तक नहीं हो सकता, जब तक कि वह अपने जीवन में सब से पहिला स्थान उसे न दे। इसीलिये उसने कहा, जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं, और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।"

मित्रो, जबकि प्रभु का मार्ग "सकरा मार्ग" है और उस पर चलना वास्तव में कठिन है, परन्तु इसके बदले में जो प्रभु ने अपने लोगों को देने की प्रतिज्ञा की है उसकी तुलना मनुष्य के किसी भी बलिदान से नहीं की जा सकती। इसीलिये, प्रेरित अपने मसीही भाईयों को लिख-कर कहता है, "सो हे मेरे प्रिय भाईयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।" (१ कुरिन्थियों १५ : ५८)

मनुष्य के लिये उसकी आत्मा से बढ़कर और कोई वस्तु अधिक महत्त्व नहीं रखती। यदि मनुष्य सारे जगत और सारी वस्तुओं को भी प्राप्त करे और अपनी आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य की आत्मा से बढ़कर सृष्टि की कोई भी अन्य वस्तु महत्त्व नहीं रखती। इसी कारण उसने अपने पुत्र यीशु को संसार के सब लोगों के लिये बलिदान कर दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।

यदि आप आज यीशु में विश्वास लाएंगे, और अपने पापों से मन फिराएंगे, और उसके नाम से अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे, तो वह आपकी आत्मा का उद्धार करेगा, और आपको अपनी उस कलीसिया में मिलाएगा, जिस में उस के लोग हैं, और जिसे लेने के लिये वह एक दिन वापस आ रहा है ताकि वे सदा उसके साथ रहें। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८, ४१, ४७; यूहन्ना १४:१-३)।

प्रभु यीशु ने कहा, जो प्राण देने तक मेरे प्रति विश्वासी बना रहेगा उसे मैं जीवन का मुकुट दूंगा। (प्रकाशितवाक्य २:१०)।

क्या कोई वस्तु ऐसी है जो आपको प्रभु के पीछे हो लेने से रोक रही है? याद रखें, "जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है" प्रभु ने कहा, "वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।"

२

यीशु का क्रूस

संसार में लगभग सभी मनुष्य किसी न किसी बात पर घमन्ड करते हैं। कुछ लोग अपने धन पर घमन्ड करते हैं। वे सोचते हैं, कि उनके पास बहुत धन है, और उसके द्वारा वे कोई भी वस्तु प्राप्त कर सकते हैं। वे निरन्तर अपने धन को बढ़ाते रहते हैं, और उनके जीवन में यदि किसी भी वस्तु का सब से अधिक महत्त्व होता है तो वह उनका धन होता है। वे उस पर बड़ा घमन्ड करते हैं।

फिर, बहुतेरे लोगों को इसी तरह की कुछ अन्य वस्तुओं पर बड़ा गर्व होता है। कुछ लोगों को घमन्ड होता है, कि उनके पास अपना एक बड़ा अच्छा घर है ; वे एक मकान के मालिक हैं, या उनकी बहुत सी ज़मीन है, या उनके पास बहुत सारी खेती-बाड़ी है। कुछ लोग शायद घमन्ड करें कि हमारे पास एक मोटर-गाड़ी है, या हमारे पास एक बहुत बढ़िया रेडियो है, या कोई और वस्तु है। कुछ लोगों के घमन्ड का कारण उनकी शक्ति हो सकती है। वे कदाचित् सोचें कि हम बड़े शक्तिवान् हैं ; हम अपनी शक्ति से बड़े-बड़े काम कर सकते हैं। इसी तरह से कुछ अन्य लोग अपनी बुद्धि पर बड़ा घमन्ड करते हैं, वे सोचते हैं कि उन्हें कभी कोई कुछ नहीं सिखा सकता। वे अपने आपको बहुत पढ़ा-लिखा और बुद्धिमान् समझते हैं, उन्हें अपनी शिक्षा पर बड़ा गर्व होता है। ऐसे ही अनेकों अन्य लोग संसार की तरह-तरह की वस्तुओं में घमन्ड करते हैं।

परन्तु हम एक मनुष्य को जानते हैं, जो इनमें से किसी भी वस्तु पर घमन्ड नहीं करता था। उसका नाम पौलुस था। एक जगह हम पढ़ते हैं, कि जब अन्य लोग अपनी शारीरिक दशा पर घमन्ड कर रहे थे, तो उसने कहा, "पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमन्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।" (गलतियों ६:१४)।

जबकि अन्य लोगों का घमन्ड संसार की वस्तुओं पर या अपने ऊपर होता है, पौलुस कहता है कि मेरा घमन्ड केवल प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर है। कुछ लोग क्रूस की निन्दा करते हैं, वे क्रूस पर यीशु की मृत्यु को तुच्छ समझते हैं, वे यीशु के क्रूस की कथा को सुनकर उसका ठट्ठा वा उपहास करते हैं। कुछ लोग यीशु के क्रूस के कारण ठोकर खाते हैं। वे उसकी अनेकों शिक्षाओं की कदाचित् सराहना करते हैं, वे उसे एक बड़ा अच्छा गुरु, या शिक्षक मानते हैं, वे उसके जीवन वा सिद्धान्तों से बड़े ही प्रभावित हैं। परन्तु वे यह कभी भी स्वीकार नहीं करना चाहते कि यीशु उनके पापों के कारण क्रूस के ऊपर मारा गया। क्रूस उनके लिये वास्तव में एक ऐसे बड़े पत्थर के समान है जिसके पास आकर वे ठोकर खाकर गिर जाते हैं। सो जबकि कुछ लोग क्रूस की निन्दा करते हैं, और जबकि कुछ लोग क्रूस के कारण ठोकर खाते हैं। पौलुस कहता है, कि मैं यीशु के क्रूस पर घमन्ड करता हूं!

शायद आप जानना चाहें, कि क्या पौलुस के पास घमन्ड करने को कोई और वस्तु नहीं थी? वास्तव में, यदि पृथ्वी पर कोई भी ऐसा मनुष्य हुआ हो, जिसके पास संसार की वस्तुओं पर घमन्ड करने का सबसे अधिक अधिकार हो, तो वह स्वयं पौलुस ही था। वह एक बुद्धिमान् मनुष्य था। वह एक सुनहरी वंशावली, अर्थात् इस्राएल या याकूब के घराने से था, जिस से परमेश्वर ने अनेकों प्रतिज्ञाएं की थीं। यहूदियों में

एक फ़रीसी का बड़ा मान सम्मान होता था, क्योंकि वह उनकी धार्मिक व्यवस्था का गुरु होता था, और पौलुस स्वयं एक फ़रीसी था। इसके अतिरिक्त, वह जन्म से ही एक रोमी था, अर्थात् वह रोम का रहनेवाला था, वह रोम का नागरिक था। यह बात उन दिनों में जबकि रोम संसार भर में एक शक्तिशाली राज्य था बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानी जाती थी। कहा जाता है, कि उन दिनों रोम के नागरिक बनने के लिये लोग बहुत धन देकर नागरिकता मोल लिया करते थे। क्योंकि राज्य में ऐसी अनेकों सुविधाएं थीं जो केवल एक रोमी को ही प्राप्त होती थीं। परन्तु पौलुस जन्म से ही रोम का एक नागरिक था। फिर, हम उसकी शिक्षा के ऊपर ध्यान करते हैं, और हम देखते हैं, कि उसने उस समय के एक बहुत बड़े शिक्षक अर्थात् गमलीएल के द्वारा शिक्षा प्राप्त की थी। गमलीएल का यहूदियों के बीच में बड़ा आदर व सम्मान था, वह एक फ़रीसी, व्यवस्थापक तथा उच्च कोटि का शिक्षक था। फिर हम पौलुस के मन-परिवर्तन को देखते हैं, अर्थात् किस प्रकार वह यहूदी धर्म छोड़कर एक मसीही बना ; यह घटना बड़ी ही आश्चर्यजनक थी। हम पढ़ते हैं, कि उस समय पौलुस मसीह और मसीह की कलीसिया का एक कट्टर विरोधी था। उसने बहुतेरे मसीही लोगों को मरवाने में अपनी साक्षी दी, उसने सैकड़ों मसीही लोगों को बन्दी-गृह में डाल-डालकर उन पर घोर अत्याचार किया। और, मसीही लोगों को सताने की इसी धुन में एक दिन जब वह दमिश्क की ओर चला जा रहा था, तो एका-एक उसके चारों ओर आकाश से बड़ी ज्योति चमकी। और हम पढ़ते हैं कि पौलुस की आंखों की ज्योति जाती रही और वह भूमि पर गिर पड़ा, और उसे ये शब्द सुनाई पड़े, "हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ?" पौलुस ने, जिसका इब्रानी नाम शाऊल था, जब यह जानना चाहा कि यह आवाज़ किसकी है, तो प्रभु ने उस से कहा, "मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है।" और प्रभु ने उसे आज्ञा देकर कहा, कि "अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है, वह तुझ से कहा

जाएगा" तब हम पढते हैं, कि जो लोग शाऊल के साथ जा रहे थे, वे यह सब सुनकर बड़े ही आश्चर्य चकित हुए। और तब वे लोग शाऊल का हाथ पकड़कर उसे नगर के भीतर ले गए। तीन दिन के बाद, प्रभु ने हनन्याह नाम के अपने एक चेले को पौलुस के पास भेजा, जिसने आकर "उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिससे तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।" और तुरन्त शाऊल की आखों की रोशनी वापस आ गई, वह फिर से देखने लगा। और फिर हम पढ़ते हैं, कि उसने पौलुस से कहा, "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" सो उसने उठकर बपतिस्मा लिया। (देखिए प्रेरितों ९ तथा २२ अध्याय)।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि जिस स्थिति में पौलुस एक मसीही बना वह बड़ी ही आश्चर्य-पूर्ण थी। उसकी प्रभु से बातचीत हुई थी, उसने उसकी आवाज़ को सुना था; यह बड़े गर्व की बात थी। एक मसीही बनने के बाद, पौलुस ने प्रभु की कलीसिया की अनेकों मन्डलियों की स्थापना की, नए नियम की २७ पुस्तकों में से उसने लगभग १४ पुस्तकों को लिखा। और प्रभु की कलीसिया में पौलुस का बड़ा महत्त्व था।

सो, इस प्रकार से हमने देखा, कि पौलुस के पास एक शक्तिशाली दिमाग़ था। वह एक ऊंचे वंश से था। उसका सम्बन्ध एक बड़े ऊंचे संगठन से था। उसकी नागरिकता रोमी थी। उसने बड़ी ऊंची शिक्षा प्राप्त की थी। उसका एक मसीही बनना बड़ा ही आश्चर्य-जनक था। कलीसिया में वह एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति था। परन्तु उसे इनमें से किसी भी बात पर घमन्ड न था। वह कहता है, "पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमन्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का

जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।" उसका घमन्ड केवल यीशु मसीह के क्रूस पर था।

अपनी एक और पत्री में वह लिखकर कहता है, "पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख सकता हूं यदि किसी और को शरीर पर भरोसा रखने का विचार हो, तो मैं उससे भी बढ़कर रख सकता हूं। आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्राएल के वंश, और बिन्यामीन के गोत्र का हूं; इब्रानियों का इब्रानी हूं; व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो फ़रीसी हूं। उत्साह के विषय में यदि कहो तो कलीसिया का सतानेवाला; और व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था। परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। बरन मैं अपने प्रभु मसीह की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं: जिसके कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूं।" (फिलिप्पियों ३:४-८)।

एक मसीही बनने के बाद पौलुस का सम्पूर्ण दृष्टिकोण बदल गया था। जिन बातों पर वह पहिले घमन्ड किया करता था, अब उन्हीं बातों को वह कूड़ा-करकट समझता था। अब उसके जीवन में घमन्ड करने की केवल एक ही बात थी, और वह था "मसीह का क्रूस।" कदाचित् हम पूछें, कि पौलुस क्यों मसीह के क्रूस पर घमन्ड करता था? इसके कुछ विशेष कारण हैं।

सबसे पहिली बात यह है, कि यीशु का क्रूस परमेश्वर के प्रेम का निशान है। पवित्र बाइबल बताती है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)। परमेश्वर की दृष्टि में पाप से अधिक कुछ भी घृणाजनक नहीं है। परन्तु वह मनुष्य से प्रेम करता है। पाप का दन्ड बड़ा

ही भयानक था। परन्तु परमेश्वर का प्रेम बड़ा ही महान् था। उसने अपने एकलौते पुत्र यीशु को इस संसार में भेज दिया। फिर उसने संसार के सब लोगों के पापों को लेकर उसके ऊपर रखा, और हम सबके कारण उसे क्रूस की भयानक मृत्यु के हवाले कर दिया। इसलिये, हम पढ़ते हैं कि "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:८)।

एक बार मैंने एक कहानी पढ़ी थी, जो कुछ इस प्रकार थी: किसी समय एक लड़का था जो अपने माता-पिता के साथ आनन्द से रहता था। एक दिन वह लड़का अपने माता-पिता का विरोध करके उन से लड़कर घर से चला गया। बहुत दिन बीतने पर, एक दिन जब वह अपने छोटे से घर में बीमार पड़ा था, और उसके पास घर में कुछ भी न था, और न कोई उसकी देख-भाल करनेवाला था, तो उसे अपने माता-पिता के घर की याद आई। उसने अपने मन में सोचा, कि मैं अपने माता-पिता के घर में कितने आनन्द के साथ रहता था, और यहां मैं कितना दुख उठा रहा हूं। सो उसने अपने माता-पिता को एक पत्र लिखा, जो कुछ इस प्रकार था: उसने कहा, मैंने जो कुछ किया है उसके लिये मैं बड़ा शर्मिन्दा हूं, मैंने अपराध करके आपको दुख पहुंचाया है। क्या आप मेरे अपराध को क्षमा कर देंगे? क्या आप अभी भी मेरे से प्रेम करते हैं? मैं घर वापस आना चाहता हूं, क्या आप मुझे घर में स्वीकर करेंगे? और उसने कहा, कि यदि आप मुझसे अभी भी प्रेम करते हैं, और मुझे घर में स्वीकार करने के लिये तैयार हैं, तो घर के सामने लगे पेड़ के ऊपर एक सफ़ेद कपड़ा लटका दें, क्योंकि उसे देखकर मुझे यह विश्वास हो जाएगा कि आप अब भी मुझ से प्रेम करते हैं।

और कुछ ही दिनों में वह लड़का अपने घर के लिये चल पड़ा।

रास्ते भर वह यही सोचता रहा, कि पता नहीं उस पेड़ के ऊपर सफ़ेद कपड़ा लटका होगा या नहीं, और वह बड़ी बेचैनी से घर के पास आने की प्रतीक्षा करने लगा। परन्तु कुछ ही समय बाद, जब गाड़ी ने उसके घर के पास से एक मोड़ लिया, तो वह आनन्द के मारे उछल पड़ा। उसने देखा कि उस पेड़ के चारों ओर अनेकों सफ़ेद कपड़े लटक रहे हैं, और यह इस बात का प्रमाण था कि उसके माता-पिता अब भी उस से बहुत-बहुत प्रेम करते थे। परन्तु, मित्रो, जब मैं यीशु के क्रूस के ऊपर देखता हूं तो वहां मुझे परमेश्वर का महान् प्रेम दिखाई देता है। वहां मैं देखता हूं कि परमेश्वर ने संसार के सब लोगों से इतना अधिक प्रेम किया, कि उसने अपने एकलौते पुत्र यीशु को उस क्रूस के ऊपर हर-एक मनुष्य के पाप के कारण बलिदान किया। यीशु का क्रूस वास्तव में, मनुष्य के प्रति परमेश्वर के महान् प्रेम का निशान है। वहां मैं परमेश्वर के प्रेम को अपने लिये उमन्डता हुआ देखता हूं।

दूसरी ओर, यीशु का क्रूस शान्ति का समाचार है। वहां हम परमेश्वर और मनुष्य के बीच शान्ति की स्थापना होते देखते हैं। मनुष्य परमेश्वर से दूर था, क्योंकि उसके पाप व अधर्म के काम उसके और परमेश्वर के बीच में एक ऐसी बड़ी दीवार बनकर खड़े हुए थे जो उसे अपने सृष्टिकर्त्ता के पास आने से रोकती थी। परन्तु जब परमेश्वर के पुत्र यीशु ने उस क्रूस के ऊपर अपना लोहू बहाया, तो वह हर एक मनुष्य के पाप का दाम था। पाप का वह दन्ड जिसे मनुष्य को स्वयं लेना था, प्रेमी प्रभु ने उसे अपने ऊपर लिया ; और उस क्रूस के ऊपर हरएक मनुष्य के बदले में स्वयं अपने आपको बलिदान किया। पाप की वह दीवार जो मनुष्य ने अपने और परमेश्वर के बीच स्वयं खड़ी की थी, यीशु ने क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा ढा दी। इस कारण, पवित्र बाइबल का एक लेखक कहता है, "पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है, जिसने दोनों को एक कर लिया : और अलग करनेवाली दीवार

को जो बीच में थी ढा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए।" (इफिसियों २ : १३-१६)। "और उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल मिलाप करके सब वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेल करले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की।" (कुलुस्सियों १:२०)। सो जब मैं यीशु के क्रूस के ऊपर विचार करता हूं, तो वहां मैं केवल परमेश्वर के प्रेम को ही नहीं देखता हूं, परन्तु यीशु का क्रूस मुझे इस बात की भी याद दिलाता है, कि मनुष्य, जो पहिले परमेश्वर से दूर और अलग था अब क्रूस पर उसके बलिदान के कारण परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकता है। क्योंकि यीशु ने क्रूस पर अपना पवित्र लोहू बहाकर परमेश्वर और मनुष्य के बीच बैर अर्थात् उस पाप रूपी दीवार को जो मनुष्य को परमेश्वर के पास आने से रोकती थी, ढा दिया है। अब मनुष्य यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकता है।

यीशु का क्रूस उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है। इसमें कोई संदेह नहीं, कि हज़ारों लोग यीशु के क्रूस की निन्दा करते हैं, बहुतेरे उसके कारण ठोकर खाते हैं ; और अनेकों लोगों के निकट यीशु का क्रूस मूर्खता है। किन्तु प्रेरित पौलुस कहता है, "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (१ कुरिन्थियों १:१८)।

जब यीशु क्रूस पर बलिदान हुआ, तो वह परमेश्वर की इच्छानुसार संसार के सब लोगों के लिये मारा गया। (इब्रानियों २:९)। पवित्र बाइबल कहती है, "पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों

के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया।" (इब्रानियों ५ : ८,९)।

आप भी यीशु के द्वारा अपने पापों से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं ; वह आपका भी उद्धारकर्त्ता बन सकता है, यदि आप अपने आपको उसकी आज्ञा मानने के लिये उसे सौंप दें। उसकी आज्ञाएं ये हैं, कि मनुष्य उस पर विश्वास करे, अपने पापों से मन फिराए, और अपने पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा ले। (यूहन्ना ८:२४ ; लूका १३:३; मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८)। जब मनुष्य इस प्रकार से प्रभु की आज्ञा मानता है, तो प्रभु उसे क्षमा करता है ; उसका उद्धार करता है, और उसे अपनी कलीसिया अर्थात् अपनी मन्डली में मिला लेता है। (प्रेरितों २:४७)। और अपने लोगों से प्रभु ने प्रतिज्ञा करके कहा, कि यदि वे उसके प्रति अन्त तक, प्राण देने तक, विश्वासी बने रहें, तो वह उन्हें अनन्त जीवन का वह मुकुट देगा जो कभी मुरझाने का नहीं। (प्रकाशितवाक्य २:१०)। क्या आप उस ईनाम को प्राप्त न करना चाहेंगे ?

३

मसीह का लोहू

आज हमारे पाठ का विषय होगा प्रभु यीशु मसीह का लोहू। ये शब्द कदाचित् आपको कुछ विचित्र से लगें। किन्तु, तौभी यीशु मसीह का लोहू मनुष्य की मुक्ति के निमित्त बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। अपने लोहू का वर्णन करके स्वयं प्रभु यीशु ने कहा, "क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।" (मत्ती २६ : २८)।

बाइबल के पहिले भाग, अर्थात् पुराने नियम को पढ़कर हम देखते हैं, कि उस समय व्यवस्था के अनुसार अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये लोग पशुओं के बलिदान चढ़ाया करते थे। ये बलिदान, जो प्रति वर्ष बार-बार चढ़ाए जाते थे, वास्तव में यीशु मसीह के उस महान् बलिदान की एक परछाई के स्वरूप में थे जो भविष्य में होनेवाला था। नए नियम का एक लेखक हमें बताता है, "क्योंकि व्यवस्था (**अर्थात् पुराना नियम**) जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उन का असली स्वरूप नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आनेवाले को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती। नहीं तो उनका चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिये कि जब सेवा करनेवाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें पापी न ठहराता। परन्तु उनके द्वारा प्रति वर्ष पापों

का स्मरण हुआ करता है। क्योंकि अनहोना है कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे।" (इब्रानियों १०:१-४)

और फिर यीशु मसीह के लोहू से पुराने नियम के बलिदानों की तुलना करके वह कहता है, "परन्तु जब मसीह आनेवाली अच्छी-अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उस ने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात् इस सृष्टि का नहीं। और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। क्योंकि जब बकरों और बैलों का लोहू और कलोर की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शुद्धता के लिये पवित्र करती है। तो मसीह का लोहू जिस ने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो। और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें। क्योंकि जहां वाचा बांधी गई है वहां वाचा बांधनेवाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धनेवाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती। इसीलिये पहिली वाचा भी बिना लोहू के नहीं बान्धी गई। क्योंकि जब मूसा सब लोगों को व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका, तो उस ने बछड़ों और बकरों का लोहू लेकर, पानी और लाल ऊन, और जूफा के साथ, उस पुस्तक पर और सब लोगों पर छिड़क दिया। और कहा, कि यह उस वाचा का लोहू है, जिस की आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे लिये दी है। और इसी रीति से उस ने तम्बु और सेवा के सारे सामान पर लोहू छिड़का। और व्यवस्था

के अनुसार प्राय: सब वस्तुएं लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती।" (इब्रानियों ९ : ११-२२)।

सो, जबकि बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती, और जब कि पशुओं का लोहू हमारे पापों को दूर नहीं कर सकता, तो आवश्यक था कि यीशु मसीह का लोहू मनुष्य के छुटकारे के लिये बहाया जाए। इसलिये हम पढ़ते हैं कि "जो पाप से अज्ञात था (अर्थात् यीशु मसीह) उसी को उस ने (अर्थात् परमेश्वर ने) हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५:२१)।

कुछ लोगों को यह समझने में बड़ी उलझन सी लगती है कि यीशु मसीह की मृत्यु क्योंकर हमारे जीवन का कारण बन सकती है? परन्तु हम अपने प्रति दिन के जीवन में देखते हैं, कि हमें शारीरिक बल और आराम देने के लिये सैकड़ों वस्तुओं को हर दिन मरना पड़ता है। सोचिए कि कितनी सब्जियां और फल, हमें जीवित रखने के लिये, प्रति दिन पेड़ों से काटे जाते हैं। फिर सोचिए उन सैकड़ों पशुओं के लिये जो प्रतिदिन इसलिये काटे जाते हैं ताकि उन का मांस खाकर लोग शक्ति प्राप्त कर सकें। इस समय मैं एक कुर्सी पर बैठा हुआ हूं, और मेरे सामने एक मेज़ रखी है; मैं जानता हूं कि एक दिन एक पेड़ काटा गया था, और उस की लकड़ी से ये दोनों वस्तुएं बनाई गईं थीं, और आज ये मेरे आराम का कारण हैं। इन सब वस्तुओं को मरना पड़ा, इन सब को अपने आपको देना पड़ा ताकि हमें जीवन और आराम मिले। इन सब बातों को ध्यान में रखकर, हमें यह समझने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि क्यों यीशु मसीह को हमारे लिये मरना पड़ा। वह इसलिये मरा ताकि हम जीवन पाएं। जैसे कि पवित्र शास्त्र बताता है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह

नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)।

पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "पर हम यीशु को जो स्वर्ग दूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे।" (इब्रानियों २ : ९)।

ये शब्द वास्तव में हमारे लिये बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं। ये हमें खुशी का एक बहुत बड़ा समाचार देते हैं। ये हमें बताते हैं कि यीशु मसीह ने हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखा। यीशु केवल यहूदियों के लिये नहीं मरा, वह केवल यूनानियों के लिये नहीं मरा, परन्तु वह संसार के हरएक मनुष्य के लिये मारा गया। उस ने उन सबके लिये भी मृत्यु का स्वाद चखा जो उस से पहिले हुए, और उन के लिये भी जो लोग उसके समय में रहते थे, और उन सब के लिये भी जो उसके बाद हुए और उनके लिये जो संसार के अन्त तक इस पृथ्वी पर होंगे। वह प्रत्येक मनुष्य के लिये मारा गया; उस ने हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखा। वह सम्पूर्ण संसार के लिये परमेश्वर का एक सिद्ध बलिदान था।

इसलिये यदि कोई यीशु मसीह में है तो उस पर दन्ड की आज्ञा न होगी (रोमियों ८ : १), क्योंकि वह मृत्यु से पार हो चुका है। वह कभी मृत्यु का स्वाद नहीं चखेगा; क्योंकि यीशु मसीह ने उसके स्थान पर उसके पापों के कारण मृत्यु का स्वाद चख लिया है। इस कारण, जब वह देह से अलग होकर इस संसार को छोड़कर जाएगा तो वह अनन्त जीवन में प्रवेश करेगा। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा।" (यूहन्ना ११:२५, २६)।

मान लीजिए, यदि आपके पास एक पत्र आए, जिसमें किसी ने लिखा हो कि मैंने डाक-घर में ५०,००० रु० जमा करवा दिए हैं। सो आप कहेंगे, ठीक है, मुझे इस बात से क्या मतलब, मेरे लिये इस में कोई प्रसन्नता की बात नहीं है। परन्तु मान लीजिए, उस पत्र में लिखा हो, कि मैं ने डाक घर में आप के नाम पर ५०,००० रु० जमा करवा दिए हैं! अब आप क्या करेंगे? आप मुस्कराएंगे, आप उस पत्र को बार-बार पढ़ेंगे, आप बहुत प्रसन्न होंगे, आप इस समाचार को अपने मित्रों, और सम्बन्धियों को देंगे। क्यों? क्योंकि आप बड़े खुश हैं। आपको एक खुशी की खबर मिली है, आपको एक सुसमाचार मिला है—कि आप के नाम पर ५०,००० रु० जमा किए जा चुके हैं।

सो जब हम पढ़ते हैं, कि यीशु मसीह इसलिये मारा गया, ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे। तो यह सुसमाचार हर एक मनुष्य के लिये है। यीशु केवल मरा ही नहीं, परन्तु उसने हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखा। प्रेरित पौलुस कहता है, "कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।" सो यीशु हमारे पापों के कारण मरा, ताकि उसके बलिदान के द्वारा हम जीवन पाएं। पवित्र शास्त्र कहता है, "क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में रहता है" (लैव्यव्यवस्था १७ : ११) और प्रभु यीशु ने अपना लोहू बहाया ताकि हम अनन्त मृत्यु से बचकर अनन्त जीवन में प्रवेश करें।

प्रभु यीशु के लोहू के महत्त्व को कदाचित् इस उदाहरण से और ठीक से समझा जा सकता है। बहुत समय पूर्व मैंने एक पुस्तक में पढ़ा था, कि एक बार दो लड़के थे जिनका घर रेल की पटरी के पास था। एक दिन स्कूल से वापस आने के बाद जब दोनों छोटे लड़के खेल रहे थे, तो खेलते-खेलते वे दोनों रेल की पटरी के बीचो-बीच जा खड़े हुए।

कुछ ही देर में वे दोनों खेल में इतने मगन हो गए कि उन्हें रेल-गाड़ी के आने की आवाज़ का भी ध्यान न रहा। कुछ और पास आने पर गाड़ी ने सीटी दी, लेकिन उन्हें उसका भी पता न चला। किन्तु उन लड़कों की मां बाहर आंगन में झाड़ू लगा रही थी, रेल की आवाज़ सुनकर उसका ध्यान अपने बच्चों की ओर गया। उस ने देखा कि वे दोनों पटरी के बीच में बैठे अपने खेल में मस्त हैं; वह ज़ोर से चिल्लाई परन्तु उन लड़कों ने कोई ध्यान नहीं दिया। और रेलगाड़ी बहुत पास आ चुकी थी। सो वह अपनी पूरी शक्ति से पटरी की ओर भागी, और उस ने अपने दोनों हाथों से उन लड़कों को धक्का देकर पटरी के बाहर कर दिया, परन्तु वह स्वयं पटरी के बीच जा गीरी। और कुछ ही पल में रेलगाड़ी धड़धड़ाती हुई वहां से गुज़र कर चली गई। जब वे दोनों लड़के भूमि पर से उठे, तो उन्हों ने देखा कि जिस जगह पर कुछ ही क्षण पूर्व वे खेल रहे थे उसी स्थान पर उनकी माँ की लोथ पड़ी है, और चारों ओर लोहू बह रहा है। तब उन्हें ध्यान आया, कि उन्हें बचाने के लिये उनकी माँ ने अपना लोहू बहाया।

जब वे दोनों लड़के बड़े हुए, तो उनकी दृष्टि में संसार की कोई भी वस्तु अपनी मां के लोहू से बढ़कर न थी। वे अपनी मां के बड़े ही धन्यवादी थे। उनके मनों में उसके बहाए हुए लोहू के लिये बड़ी कृतज्ञता थी। क्योंकि वे जानते थे कि जिस जगह उन्हें मरना चाहिए था, वहां उनकी मां ने अपने आप को बलिदान कर दिया। उस ने अपना लोहू बहाया ताकि वे बच जाएं। आप और मैं कदाचित् इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते कि वे दोनों अपनी माँ के कितने अधिक कृतज्ञ व आभारी होंगे।

परन्तु उस मां ने केवल अपने दो लड़कों को बचाने के लिये अपने प्राण दिए। किन्तु पवित्र बाइबल कहती है, कि प्रभु यीशु मसीह ने

हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखा; उसने अपना लोहू बहुतों के पापों की क्षमा के निमित्त बहाया;' वह हम सब के लिये मारा गया। क्योंकि वास्तव में, हमें अपने पापों के कारण अनन्त मृत्यु का स्वाद चखना आवश्यक है, हमें अपने पाप की मजदूरी, अर्थात्, अनन्त मृत्यु का दन्ड पाना आवश्यक है। क्योंकि परमेश्वर का पवित्र न्याय सब मनुष्यों के विषय में कहता है, "कि वे सब के सब पाप के वश में हैं·····कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। सब भटक गए हैं, सबके सब निकम्मे बन गए हैं, कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं। उन का गला खुली हुई कब्र है। उन्हों ने अपनी जीभों से छल किया है : उन के होठों में सापों का विष है। और उन का मुंह श्राप और कड़वाहट से भरा है। उनके पाँव लोहू बहाने को फुर्तीले हैं। ऊनके मार्गों में नाश और क्लेश है। उन्होंने कुशल का मार्ग नहीं जाना। उन की आंखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं·····इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" रोमियों ३ : १०-१८, २३)।

सो यह है संसार में प्रत्येक मनुष्य का एक चित्र। वह अपने पापों में खोया हुआ और आशा-रहित है। और परमेश्वर का वचन कहता है, "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है·····।" (रोमियों ६ : २३)।

आज के इस प्रगतिशील संसार में मृत्यु का आना बड़ी ही साधारण सी बात है। प्रतिदिन हज़ारों लोग इस संसार को सदा के लिये छोड़-कर चले जाते हैं। कदाचित् हम पूछें, कि वे सब कहां जाते हैं? वास्तव में, आप और मैं, और संसार में कोई भी अन्य मनुष्य यह नहीं जानता कि वे सब कहाँ जाते हैं। परन्तु परमेश्वर जानता है कि वे सब कहां जाते हैं। उस निश्चित समय का वर्णन करके परमेश्वर का वचन कहता है, "तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी·····क्योंकि

परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।" (सभोपदेशक १२ : ७, १४)। हम यह भी पढ़ते हैं, कि प्रभु ने अधर्मियों की ओर संकेत करके कहा, "और ये अनन्त दन्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती २५ : ४६)।

सो वे लोग जो अपने पापों में; अपनी खोई हुई आशाहीन् स्थिति में इस संसार को छोड़कर चले जाते हैं, वे परमेश्वर के न्याय के अनुसार अनन्त दन्ड भोगेंगे। उन्हें फिर दोबारा मन फिराव का अवसर न मिलेगा, क्योंकि मनुष्यों के लिए एक बार मरना और फिर न्याय का होना निश्चित है। (इब्रानियों ९ : २७)। तौभी न जाने कितने लोग इसी भयानक स्थिति में अब तक अनन्तकाल में पार हो चुके हैं। किन्तु, मित्रो, परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उस ने आज भी हमें यह सुअवसर दिया है, कि हम अपना मन फिरा सकते हैं, और इस से पहिले कि हम सदा के लिये इस संसार को छोड़कर चले जाएं, हमारे पास यह सुन्दर अवसर है कि हम यीशु मसीह के द्वारा अपना मेल परमेश्वर के साथ स्थापित कर सकते हैं।

न केवल बाइबल यहीं बताती है कि सब ने पाप किया है, और "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है," परन्तु बाइबल यह भी बताती है कि "परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६ : २३)। इसलिये, परमेश्वर के वरदान प्रभु यीशु मसीह के द्वारा कोई भी मनुष्य पाप के दन्ड अनन्त मृत्यु से छूटकर अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकता है। यीशु वास्तव में सब मनुष्यों के लिये परमेश्वर का बरदान है। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)। इस बात पर ध्यान दें, कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु

को जगत के सब लोगों के लिये दे दिया। उस ने हम सबसे ऐसा प्रेम रखा; "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्ति-हीनों के लिये मरा।" और यह सच है, "परमेश्वर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" इसलिये पवित्र वचन कहता है, "सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे?" (रोमियों ५ : ६, ८, ९)।

मनुष्य पापी और अधर्मी है। परन्तु यीशु ने अपना लोहू बहाया ताकि उसके लोहू के कारण मनुष्य धर्मी ठहरे। सो फिर मनुष्य कैसे मसीह के लोहू के द्वारा धर्मी ठहर सकता है? प्रभु यीशु ने अपने लोहू के बारे में कहा "क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।" (मत्ती २६ : २८)। और उसकी मृत्यु के बाद, लोगों को सुसमाचार सुनाने के बाद, प्रेरित पतरस ने उन से कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले....." (प्रेरितों २ : ३८)। सो इस प्रकार से जब मनुष्य परमेश्वर के बरदान यीशु में विश्वास करता है, और अपने पापों से मन फिराकर उसके नाम से बपतिस्मा लेता है, तो उसका सम्बन्ध यीशु के लोहू से स्थापित हो जाता है। क्योंकि यीशु ने अपना लोहू अपनी मृत्यु में बहाया, और प्रेरित पौलुस कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों ६ : ३, ४)।

यीशु हमारे पापों के लिये मारा गया, वह गाड़ा गया, और जी उठा। जब हम उसमें विश्वास लाकर और अपना मन फिराकर

बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़े जाते हैं तो हम उसकी मृत्यु और गाड़े जाने की समानता में हो जाते हैं, और फिर जब हम बपतिस्मा लेकर जल में से बाहर आते हैं तो हम उसके जी उठने की समानता में बन जाते हैं। इसी बात पर बल देकर, प्रेरित पौलुस कहता है, कि बपतिस्मा लेकर "यदि हम उसकी समानता में उस के साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उस के जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।" (रोमियों ६ : ५)।

मित्रो, परमेश्वर ने सारे जगत से प्रेम रखा; और अपने पुत्र यीशु को सारे जगत के पापों के लिये क्रूस पर दन्डित किया। प्रभु यीशु ने सारे जगत के लोगों के लिये अपना लोहू बहाया, और इसलिये, अब "परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है।" (तीतुस २ : ११)। क्या आप उसके अनुग्रह को प्राप्त करने के लिये तैयार हैं? आपको चाहिए कि आप परमेश्वर के अनुग्रह, यीशु में विश्वास करें और उसकी आज्ञाओं का पालन करें। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है, क्योंकि यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यहन्ना १४ : ६)।

४

ढिठाई का पाप

भजन संहिता १९:१३ में परमेश्वर से प्रार्थना करके दाऊद कहता है, "तू अपने दास को ढिठाई के पापों से भी बचाए रख; वे मुझ पर प्रभुता करने न पाएँ! तब मैं सिद्ध हो जाऊँगा, और बड़े अपराधों से बचा रहूँगा।"

यहां कदाचित् आप जानना चाहें कि ढिठाई के पाप से यहां क्या अभिप्राय है? ढिठाई के पाप को समझने में राजा उज्जियाह के उदाहरण से बढ़कर कोई अन्य उदाहरण हमें नहीं मिलता। राजा उज्जियाह के बारे में हमें पुराने नियम में २ इतिहास की पुस्तक के २६ अध्याय में मिलता है। मसीह से लगभग ८०० वर्ष पूर्व, जब उज्जियाह सोलह वर्ष का था, तो उसके पिता अमस्याह की मृत्यु के बाद, वह यहूदा देश का राजा बना। हम पढ़ते हैं, कि वह यरुशलेम में बावन वर्ष तक राज्य करता रहा। वह एक अच्छा राजा था, वह उस समय परमेश्वर से डरता था और उसकी खोज में लगा रहता था। इस कारण, परमेश्वर ने उसे बहुतायत से आशीषित भी किया था। परमेश्वर की सहायता से उसने अनेकों देशों पर विजय प्राप्त की; उसने बड़े-बड़े भवन इत्यादि बनवाए; उसके पास अनेकों जानवर और बहुत सारी खेती थी। उसकी सेना में हज़ारों शूरवीर थे। उसने अपने समय के वैज्ञानिकों की सहायता से बड़े-बड़े अद्‌भुत हथियार और यन्त्र भी बनवाकर तैयार किए। लिखा है, जब तक वह परमेश्वर की खोज में लगा रहा, तब तक परमेश्वर उसे भाग्यवान किए रहा। "और उस की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई,

क्योंकि उसे अद्‌भुत सहायता यहां तक मिली कि वह सामर्थी हो गया।"

परन्तु फिर, जैसे कि नीतिवचन का बुद्धिमान् लेखक कहता है, कि "विनाश से पहिले गर्व, और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड होता है।" (नीतिवचन १६.१८)। सो हम राजा उज्जियाह के बारे में पढ़ते हैं, लिखा है, "परन्तु जब वह सामर्थी हो गया, उसका मन फूल उठा; और उसने बिगड़कर अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वासघात किया, अर्थात वह धूप की वेदी पर धूप जलाने को यहोवा के मन्दिर में घुस गया। और अजर्याह याजक उसके बाद भीतर गया, और उसके संग यहोवा के अस्सी याजक भी जो वीर थे गए। और उन्होंने उज्जियाह राजा का सामना करके उससे कहा, हे उज्जियाह यहोवा के लिये धूप जलाना तेरा काम नहीं, यह हारुन की सन्तान अर्थात् उन याजकों का ही काम है, जो धूप जलाने को पवित्र किए गए हैं। तू पवित्र स्थान से निकल जा; तू ने विश्वासघात किया है, यहोवा परमेश्वर की ओर से यह तेरी महिमा का कारण न होगा। तब उज्जियाह धूप जलाने का धूपदान हाथ में लिये हुए झुंझला उठा। और वह याजकों पर झुंझला रहा था, कि याजकों के देखते-देखते ही यहोवा के भवन में धूप की वेदी के पास ही उसके माथे पर कोढ़ प्रगट हुआ। और अजर्याह महा-याजक और सब याजकों ने उस पर दृष्टि की, और क्या देखा कि उसके माथे पर कोढ़ निकला है! तब उन्होंने उसको वहां से झटपट निकाल दिया, वरन यह जानकर कि यहोवा ने मुझे कोढ़ी कर दिया है, उसने आप बाहर जाने को उतावली की।" और मित्रो, "उज्जियाह राजा मरने के दिन तक कोढ़ी रहा, और कोढ़ के कारण अलग एक घर में रहता था।"

सो राजा उज्जियाह के इस वृत्तान्त में हमें ढिठाई के पाप का एक बहुत अच्छा उदाहरण मिलता है। उज्जियाह राजा के दिनों में

परमेश्वर के लोग पुराने नियम के अनुसार परमेश्वर की उपासना करते थे। पुराने नियम के अनुसार, मन्दिर में वेदी पर धूप जलाने का अधिकार परमेश्वर ने केवल याजकों को ही सौंपा था। केवल वे ही मन्दिर के भीतर जाकर धूप जलाने का काम कर सकते थे। और राजा उज्जिय्याह इस बात को बड़ी अच्छी तरह से जानता था कि यह परमेश्वर की एक स्पष्ट आज्ञा है। परन्तु उस समय उज्जिय्याह बहुत सामर्थी हो गया था, और सामर्थ के कारण उसका मन गर्व वा घमण्ड से फूल उठा था। उसे अपने ऊपर इतना घमण्ड हो गया था, कि अपने गर्व में उसने परमेश्वर की आज्ञा को भी तुच्छ जाना। और यहाँ तक कि जब परमेश्वर के याजकों ने उसे याद दिलाकर कहा कि इस कार्य को करने की आज्ञा परमेश्वर ने उसे नहीं परन्तु याजकों को दी है, तो वह क्रोध के मारे झुंझला उठा। उसका मन इतना अधिक फूल उठा था कि उसे न तो मनुष्यों की और न परमेश्वर की कोई चिन्ता थी। यहां मुझे अपने एक कवि का वह शैर याद आता है, "ज़फ़र आदमी उसे न जानिएगा, हो वो कितना भी साहेब-ए-फ़हमो-ज़का, जिसे ऐश में याद-ए-खुदा न रही, जिसे तैश में खौफ़-ए-खुदा न रहा।" सो उज्जिय्याह सामर्थी होकर अपनी ऐश के नशे में परमेश्वर की आज्ञा की याद तक भुला बैठा ; और जब याजकों ने उसे परमेश्वर की आज्ञा को याद दिलाया तो वह तैश में भरकर झुंझला उठा। किन्तु, उसे इसका भी आभास न रहा कि जिस परमेश्वर ने उसे इतना अधिक आशीषित किया था, वही पराक्रमी परमेश्वर उसे एक ही दिन में कंगाल, और हां, एक कोढ़ी भी बना सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं, जैसे कि बुद्धिमान् लेखक कहता है, "विनाश से पहिले गर्व, और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड होता है।" और इसमें भी कोई संदेह नहीं, कि राजा उज्जिय्याह ढिठाई के पाप का अपराधी था। क्योंकि उसने जानबूझकर परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा था।

किन्तु ढिठाई का पाप मनुष्य के इतिहास में कोई नया नहीं है।

यह अपराध पृथ्वी पर उतना ही पुराना है जितना कि स्वयं मनुष्य। और आज भी संसार में हज़ारों लोग खुले आम परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं का विरोध करके यही अपराध कर रहे हैं। पवित्र शास्त्र उन लोगों के बारे में कहता है, कि उनका विवेक मानों जलते हुए लोहे से दागा गया है, (१ तीमुथियुस ४:२), जिस पर कोई प्रभाव नहीं होता, क्योंकि वे बार-बार सुन कर भी परमेश्वर की इच्छा पर नहीं चलते, परन्तु अपनी इच्छानुसार चलते हैं, वे ढीठ और हठी हैं। (२ पतरस २:१०)।

उदाहरण के रूप से, परमेश्वर का वचन स्पष्टता से बताता है कि मनुष्य की मुक्ति का केवल एक ही सुसमाचार है। प्रेरित पौलुस इस सुसमाचार के बारे में वर्णन करके कहता है कि "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये··· उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।" (रोमियों १:१६)। और एक अन्य स्थान पर वह अपने मसीही भाईयों को लिखकर कहता है, "हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूँ, जिसे तुमने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैंने सबसे पहिले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।"(१ कुरिन्थियों १५:१-४)।

सो यहाँ हम देखते हैं, कि वह कहता है, कि हे भाईयो मैं तुम्हें वही सुसमाचार सुनाता हूँ जो पहिले सुना चुका हूं, अर्थात् एक नया सुसमाचार नहीं परन्तु वही जो पहिले सुना चुका हूँ। और उस सुसमाचार का उन्होंने अंगीकार किया था, और वे उसमें स्थिर थे, और उसी

सुसमाचार के द्वारा उनका उद्धार हुआ था। और वह उद्धार का सुसमाचार यह है "कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।" फिर, एक और जगह वह उनसे यूं कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि जिसकी आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो और जिसकी मानते हो, चाहे पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है ? परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिसके सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।" (रोमियों ६:१६-१८)।

यहाँ प्रेरित मसीही लोगों से कह रहा है, कि मसीही बनने से पहिले वे पाप के दास थे क्योंकि वे शैतान की बातों पर चलते थे। परन्तु अब वे पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए, क्योंकि वे उस उपदेश के माननेवाले बन गए जो उन्हें सुनाया गया था। और वह उपदेश यही था, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। किन्तु, उन्होंने इस उपदेश को माना था; वे उसके साँचे में ढाले गए थे !

परन्तु किस तरह से उन्होंने उस उपदेश को माना था ? क्या वे वास्तव में यीशु मसीह की तरह मारे गए थे, गाड़े गए थे, और जी उठे थे ? वह यह भी कहता है, कि पाप से छुड़ाए जाने से पहिले वे उस उपदेश के सांचे में ढाले गए थे। कदाचित आप जानते हैं कि एक सांचा क्या होता है। साँचों का उपयोग खिलौने इत्यादि बनाने के लिये किया जाता है। जिस वस्तु से खिलौने और ऐसी ही अन्य वस्तुएं बनती हैं उसे पहिले सांचों में ढाला जाता है, और जिस आकार का

वह सांचा होता है बिल्कुल ठीक उसी आकार की वह वस्तु बन जाती है। यदि हम केवल एक ही तरह के सांचे का उपयोग करें तो उस से केवल एक ही आकार की वस्तुएं बनती चली जाएंगी। सो वे लोग पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास बन गए थे, क्योंकि उन्होंने केवल उसी एक उपदेश को माना था जिसके सांचे में वे ढाले गए थे। और हमें याद है, कि वह उपदेश यह है, कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मारा गया, गाड़ा गया, और जी उठा। सो अब यदि वे इस उपदेश के सांचे में ढाले गए थे या इसकी समानता में ढाले गए थे, तो यह अवश्य है कि वे यीशु मसीह की तरह मरे, और गाड़े गए और जी उठे। परन्तु याद रखें, कि वे यीशु मसीह की तरह वास्तव में नहीं मर गए, न वे उसकी तरह वास्तव में एक कब्र में गाड़े गए, या जी उठे। परन्तु उन्होंने इस सुसमाचार को माना था, और वे इस उपदेश के सांचे में ढाले गए थे। सो आइए, अब देखें कि वे लोग किस प्रकार से इस उपदेश के सांचे में ढाले गए थे।

रोमियों ६ अध्याय में वह उनसे कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी उसके साथ जुट जाएँगे।" (रोमियों ६:३-५)।

यहां इस बात को देखें कि प्रेरित उनका ध्यान इस सच्चाई पर दिलाकर कहता है कि मसीह का बपतिस्मा लेने के द्वारा वे उसकी मृत्यु और उसके गाड़े जाने, और उसके जी उठने की समानता में जुट गए हैं। सो इसलिये, बपतिस्मा लेकर उन्होंने उस सुसमाचार को

माना था, और इस प्रकार से वे उसके सांचे में ढाले गए थे। वास्तव में मसीह के सुसमाचार के सांचे में ढ़ाले जाने का और कोई उपाय है ही नहीं। और जब कि पाप से छुटकारा प्राप्त करने के लिये यह अवश्य है कि मनुष्य इस उपदेश के सांचेमें ढाला जाए, तो यह आवश्यक है कि मनुष्य मरे, गाड़ा जाए और जी उठ। और ऐसा केवल बपतिस्मा लेकर ही किया जा सकता है। क्योंकि जब कोई मनुष्य यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनकर उस में विश्वास लाता है, और अपने पापों से मन फिराता है, अर्थात् पाप के जीवन को छोड़ने का निश्चय करता है, तो वह यह स्वीकार करता है कि उसका पुराना मनुष्यत्व यीशु मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, क्योंकि यीशु उसके पापों के लिये मारा गया, सो इस तरह से वह यीशु मसीह की मृत्यु की समानता में जुट जाता है। परन्तु यीशु केवल मारा ही नहीं गया वह मृत्यु के बाद एक कब्र में गाड़ा भी गया। सो पाप से मन फिराकर यीशु की मृत्यु की समानता में हो जाने के बाद, वह मनुष्य बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़ा जाता है, और इस प्रकार से वह यीशु की मृत्यु और गाड़े जाने की समानता में हो जाता है। परन्तु यीशु हमारे पापों के लिये केवल मारा और गाड़ा ही नहीं गया, वह जी भी उठा और उस कब्र में से, जिसमें वह गाड़ा गया था, सदा के लिये बाहर आ गया। सो उपदेश के सांचे में ढाले जानेवाला वह मनुष्य अपने पापों के लिये मर करके और जल रूपी कब्र के भीतर गाड़े जाकर, न केवल यीशु की मृत्यु और गाड़े जाने की समानता में जुट जाता है, परन्तु बपतिस्मे के जल से बाहर आकर वह यीशु मसीह के जी उठने की समानता में भी जुट जाता है।

सो, जब प्रेरित उन्हें कहता है, "कि तुम जो पाप के दास थे तौ भी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिसके सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।" तो हम जानते

हैं कि इस से उसका अभिप्राय यह है, कि जब उन्होंने पहिली बार यीशु का यह सुसमाचार सुना कि वह हमारे पापों के लिए मर गया, गाड़ा गया, और जी उठा; तो उन्होंने उस पर विश्वास लाकर अपना मन फिराया और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लिया। इस प्रकार से वे उसके सुसमाचार के सांचे में ढाले गए और उनका उद्धार हुआ। (मरकुस १६:१५-१६; प्रेरितों २:३८)।

यह समझना हमारे लिये वास्तव में कितना सरल है। परन्तु बहुतेरे लोग जान-बूझकर यीशु मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। और यह कहने के विपरीत, जैसा कि प्रभु यीशु ने कहा, कि "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा"; (मरकुस १६ : १६)। यह कहने के विपरीत, जैसा कि प्रेरित ने लोगों से कहा, कि "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।" (प्रेरितों २:३८)। वे लोगों को सिखाते हैं कि अपने मन में केवल यीशु को स्वीकार कर लो तो तुम्हारा उद्धार हो जाएगा। क्या यह शिक्षा बाइबल की शिक्षा का स्पष्ट विरोध नहीं करती ? वे लोग जो इस प्रकार की शिक्षा का प्रचार करते हैं, क्या वे परमेश्वर के वचन का सामना करके ढिठाई के पाप के अपराधी नहीं हैं ?

हां, यह सच है, कि पवित्र बाइबल बताती है कि हमारा उद्धार विश्वास के द्वारा होता है, (यूहन्ना ३:१६), और बाइबल यह भी बताती है कि हमारा उद्धार मन फिराने के द्वारा होता है (लूका १३: ३), और यह भी कि हमारा उद्धार बपतिस्मे के द्वारा होता है (१ पतरस ३:२१)। परन्तु कहीं पर भी बाइबल इस प्रकार की शिक्षा नहीं देती कि मनुष्य का उद्धार केवल विश्वास लाकर, या केवल मन फिराकर, या केवल बपतिस्मा लेकर होता है। कोई भी मनुष्य यीशु मसीह के सुसमाचार को माने बिना अर्थात् उसके सुसमाचार के सांचे

मैं ढाले बिना मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिये, यदि आप अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको चाहिए कि आप यीशु मसीह में विश्वास करें और अपने पापों से मन फिराएं, और बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़े जाएं। इस प्रकार से आप यीशु मसीह के सुसमाचार के सांचे में ढल जाएंगे, और उसके द्वारा पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास बन जाएंगे।

याद रखें, कि इसके अतिरिक्त कोई और सुसमाचार है ही नहीं। परन्तु बहुतेरे लोग अपने कानों की खुजली के कारण और-और प्रकार के सुसमाचार सुनना चाहते हैं। और कुछ लोग यीशु मसीह के सुसमाचार को तोड़ मरोड़कर बिगाड़ना चाहते हैं। इस तरह के कुछ लोग मसीह के प्रेरितों के समय में भी थे। सो प्रेरित उनसे लिखकर कहता है, "मुझे आश्चर्य होता है, कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिरकर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं, पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुमको सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो श्रापित हो।" (गलतियों १:६-८)।

मित्रो, मेरा विश्वास है, कि आप इन बातों के ऊपर विचार करेंगे, और मसीह यीशु के सुसमाचार के सांचे में ढाले जाने का निश्चय करेंगे, ताकि पाप से छुड़ाए जाकर आप धर्म के दास बन जाएं। आईए, दाऊद की तरह परमेश्वर के सामने नम्र होकर कहें कि "तू अपने दास को ढिठाई के पापों से भी बचाए रख, वे मुझ पर प्रभुता न करने पाएं। तब मैं सिद्ध हो जाऊँगा, और बड़े अपराधों से बचा रहूंगा।" आमीन। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे।

५

कलीसिया का संक्षिप्त इतिहास

मनुष्य के आदि इतिहास के पन्ने पलटने से हमें पता चलता है, कि मनुष्य अकसर परमेश्वर के मार्ग से फिरता रहा है। जैसे कि हम देखते हैं, कि आरम्भ में जब परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की, तो परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन नाम की एक सुन्दर बाटिका में रखा। वहां हम देखते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें एक निश्चित आज्ञा देकर कहा था, कि वे उस बाटिका में लगे एक विशेष वृक्ष का फल न खाएं। परन्तु अभी कुछ ही समय बीता था कि आदम और हव्वा ने परमेश्वर की उस आज्ञा को तोड़ दिया। फलस्वरूप, परमेश्वर ने उन्हें दन्ड दिया और उस बाटिका में से उन्हें निकाल दिया।

फिर हम कैन और हाबिल नाम के आदम तथा हव्वा के दो पुत्रों के बारे में पढ़ते हैं। हम देखते हैं, कि वे दोनों भाई परमेश्वर को अपनी अपनी भेंट चढ़ाने को लाए। लिखा है, जबकि हाबिल की भेंट को तो परमेश्वर ने स्वीकार किया परन्तु कैन की भेंट को परमेश्वर ने स्वीकार नहीं किया। क्योंकि कैन की भेंट परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं थी। नए नियम में इब्रानियों की पत्री का लेखक कहता है, "विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाया" (इब्रानियों ११ : ४) इसका अर्थ यह हुआ, कि परमेश्वर ने इस विषय पर अपनी इच्छा को उन पर प्रकट किया था। क्योंकि विश्वास सुनने से होता है। (रोमियों १० : १७)। परन्तु कैन ने परमेश्वर की इच्छा

को महत्त्व नहीं दिया। उस ने परमेश्वर की आज्ञानुसार भट तो चढ़ाई परन्तु अपनी इच्छा के अनुसार।

बाइबल में उत्पत्ति की पुस्तक हमें आगे बताती है, कि नूह के दिनों के जल-प्रलय के बाद मनुष्य पृथ्वी पर फिर बढ़ने लगे। परमेश्वर ने उन्हें आशीष देकर कहा था "कि फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ।" (उत्पत्ति ९ : १)। परन्तु, हम पढ़ते हैं, कि परमेश्वर की इस इच्छा के विरुद्ध कि मनुष्य जाति पृथ्वी पर फैल जाए, वे लोग आपस में कहने लगे, "आओ हम एक नगर और एक गुम्मट बना लें, जिसकी चोटी आकाश से बातें करे, इस प्रकार से हम अपना नाम करें ऐसा न हो कि हम को सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े।" (उत्पत्ति ११ : ४)। उस समय वे सब लोग एक ही भाषा बोलते थे सो जब उन लोगों ने परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध एक गुम्मट बनाना आरम्भ किया, तो परमेश्वर ने उन की भाषा में अन्तर डाल दिया। और इस प्रकार से जब सब अलग-अलग भाषाएं बोलने लगे, तो एक दूसरे की बात न समझने के कारण वे उस गुम्मट को न बना सके।

मनुष्य द्वारा परमेश्वर की इच्छा के विरोध का एक और उदाहरण हमें इस्राएली लोगों के बारे में मिलता है। जब परमेश्वर, मूसा के साथ होकर, उन्हें मिस्र देश के दासत्व से छुड़ा लाया, तो मार्ग में परमेश्वर ने उन्हें मूसा के द्वारा अपनी आज्ञाएँ दीं। हम पढ़ते हैं, कि उनमें से एक आज्ञा यह थी, कि "तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है। तू उनको दन्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना।" (निर्गमन २० : ४, ५)। परन्तु, अभी कुछ ही समय व्यतीत हुआ था, कि हम देखते हैं कि उन्हों ने अपने लिये एक मूर्ति ढालकर बनाई और उस के आगे झुककर उसे दन्डवत करने लगे। और लिखा है, कि वे कहते थे कि यह हमारा सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है जो

हमें मिस्र देश के बन्धनों से छुड़ा लाया है।

मनुष्य द्वारा परमेश्वर के मार्ग को छोड़कर उस से फिर जाने के अनेकों अन्य उदाहरण भी दिए जा सकते हैं। और इन सब से हम देखते हैं कि किस प्रकार से मनुष्य सदियों से परमेश्वर के मार्ग से भटकता रहा है। यह बात बड़ी गम्भीर है। क्योंकि इसके प्रभाव से यीशु मसीह की कलीसिया भी बची न रह सकी। अपनी मृत्यु से पूर्व प्रभु यीशु ने प्रतिज्ञा करके कहा था कि **मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।**

और अपनी मृत्यु व जी उठने के पचास दिन बाद प्रभु ने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया; जबकि पिनतेकुस्त नाम के एक यहूदी पर्व्व के दिन, उसके चेलों ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उसके सुसमाचार को लोगों की एक बड़ी भीड़ के बीच में सुनाया। लिखा है, वे लोग सुनकर उस पर विश्वास लाए, और प्रभु की आज्ञानुसार उन्हों ने अपना मन फिराया, और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा लिया। और इस प्रकार से प्रभु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिला लिया। आगे हम पढ़ते हैं कि अन्य लोग जो इसी प्रकार से प्रभु की आज्ञाओं को मानकर उद्धार पाते थे उन्हें प्रभु प्रतिदिन अपनी कलीसिया में मिलाता रहा। (प्रेरितों २)।

कदाचित् आप जानना चाहें कि कलीसिया क्या है? कलीसिया का अर्थ है उन लोगों की एक मन्डली जिन्हों ने प्रभु की आज्ञाओं का पालन करके उस से उद्धार प्राप्त किया है। और यह मन्डली मसीह की है; क्योंकि उस ने कहा कि "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।" कलीसिया कोई एक धर्म नहीं है, परन्तु यह एक ऐसा संगठन है जिस में प्रभु उन सब लोगों को मिलाता है जिन्होंने उस के पीछे चलने का निश्चय कर लिया है।

प्रभु यीशु ने अपनी कलीसिया को आज्ञाएं दी हैं, सिद्धान्त दिए

हैं, जिन्हें हम "नया नियम" कहते हैं। नए नियम को लिखने के लिये प्रभु यीशु ने अपने प्रेरितों को प्रेरणा दी। नया नियम हमें बताता है, कि कलीसिया का नाम क्या है; उसकी उपासना क्या है; और उसका संगठन व कार्य क्या है। नया नियम मसीह की कलीसिया के लिये एक सम्पूर्ण "गाईड" है। आरम्भ के दिनों में सभी मसीही केवल नए नियम का ही अनुसरण करते थे। उनका एक विश्वास था, एक ही आशा थी, एक ही नाम था, एक ही प्रचार था। इसलिये वे सब केवल एक ही कलीसिया में थे, अर्थात्, मसीह यीशु की कलीसिया में। एक बार प्रभु यीशु ने शिक्षा देकर कहा था, कि बीज तो परमेश्वर का वचन है। और यह एक सर्वव्यापी सिद्धान्त है कि प्रत्येक बीज अपने स्वभाव व अपनी समानता पर ही उत्पन्न करता है। उदाहरण के रूप से, यदि हम चावल बोते हैं तो उसके स्थान पर हम गेहूं नहीं काटते परन्तु चावल ही काटते हैं; आम की गुठली से आम का पेड़ ही पैदा होता है। इसलिये, आरम्भ में जबकि मसीही लोग केवल परमेश्वर के वचन का ही प्रचार करते थे, तो उस आत्मिक बीज से केवल एक ही तरह के आत्मिक लोग उत्पन्न होते थे। अर्थात केवल "मसीही" और उनकी मंडलियां केवल "मसीह की कलीसियाओं" के नाम से जानी जाती थीं। (प्रेरितों ११ : २६; रोमियों १६ : १६)।

परन्तु प्रभु के प्रेरित जानते थे कि उनकी मृत्यु के बाद यीशु मसीह की कलीसिया में एक बड़ी भारी फूट उत्पन्न होगी; लोग सच्चाई से फिरकर झूठ की प्रतीति करेंगे; और अनेकों झूठे शिक्षक उठ खड़े होंगे जो कलीसिया को तित्तर-बित्तर कर देंगे। सो हम पढ़ते हैं, कि उन्होंने तभी से कलीसिया को इस गम्भीर स्थिति के बारे में बताना आरम्भ कर दिया। हम पढ़ते हैं, कि जब प्रेरित पौलुस यरूशलेम की ओर जा रहा था, तो उस ने इफिसुस नाम के एक स्थान पर रुककर वहाँ की कलीसियाओं के अध्यक्षों को बुलाकर उनसे कहा, कि "मैं परमेश्वर की

सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका। इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस में पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है। मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िये तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे।" (प्रेरितों २० : २७-३०)।

और एक अन्य स्थान पर, प्रेरित ने उन्हें फिर चिताकर कहा कि "आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्ट आत्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, जिनका विवेक मानों जलते हुए लोहे से दागा गया हो।" (१ तीमुथियुस ४ :१-२) और इसी बात पर वह फिर से बल देकर कहता है कि "क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे। और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएंगे।" (२ तीमुथियुस ४ : ३, ४)।

और धर्म का इतना बड़ा यह त्याग न केवल भविष्य में ही होने वाला था, परन्तु उस समय भी जबकि प्रेरित स्वयं जीवित थे, कुछ लोग सत्य-सुसमाचार से फिरकर झूठ की ओर झुकने लगे थे। गलतियां नाम के एक स्थान पर कलीसियाओं को लिखकर प्रेरित पौलुस कहता है : "मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिरकर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं, पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस

सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो श्रापित हो।" (गलतियों १ : ६-८)।

परन्तु यीशु के प्रेरितों की मृत्यु के बाद प्रभु की कलीसिया में शीघ्रता से परिवर्तन आने लगा। और लगभग १५० ई० स० तक अनेकों लोग सत्य से फिर चुके थे। उन दिनों में सारी कलीसियाएं "मसीह की कलीसियाओं" के नाम से ही जानी जाती थीं (रोमियों १६ : १६)। और प्रत्येक कलीसिया में कई अध्यक्ष या बिशप हुआ करते थे, जो कलीसिया की देख-भाल व चौकसी किया करते थे। हर एक कलीसिया अपने-अपने अध्यक्षों की देख-रेख में अपना-अपना कार्य सम्भालती थी। परन्तु इतिहास बताता है, कि कुछ ही समय बाद कुछ लोग एक अध्यक्ष को कलीसिया में दूसरे अध्यक्ष से ऊंचा उठाने लगे। जबकि कलीसियाओं में सारे अध्यक्ष पास्टर या बिशप कहलाते थे, क्योंकि वे कलीसिया की रखवाली करते थे, परन्तु वे लोग हर एक कलीसिया के अध्यक्षों में से केवल एक-एक अध्यक्ष को लेकर केवल उन्हीं को बिशप का नाम देने लगे। और फिर, धीरे-धीरे वह समय आया जब कि हर एक कलीसिया में से चुने हुए यह बिशप एक निश्चित स्थान पर इक्ट्ठा होने लगे, ताकि कलीसिया के काम के बारे में आपस में बातचीत करें। वे नए-नए नियम इत्यादि बनाने लगे। और ३२५ ई० स० में एक नया धर्म-सिद्धान्त लिखा गया, जिसे हम "निसेनी क्रीड" के नाम से जानते हैं। इस से पूर्व मसीही लोग केवल नए नियम की ही शिक्षाओं पर चलते थे। परन्तु अब, प्रभु यीशु के नए नियम के अतिरिक्त, अनेकों अन्य सिद्धान्त इत्यादि बनाए जाने लगे। और जो मसीही लोग मनुष्यों के बनाए हुए इन नियमों व सिद्धान्तों को नहीं मानते थे उन्हें अविश्वासी कहा जाने लगा।

फिर, सन् ६०६ में एक और बड़ी घटना घटी, कलीसियाओं में से

जितने भी बिशप नियम इत्यादि बनाने के लिये इकट्ठा हुआ करते थे, उन सब में से एक बिशप को सम्पूर्ण कलीसिया का मुख्य बिशप चुना गया, प्रत्यक्ष ही, वह बिशप रोमी बिशप था। उस बिशप को "पोप" का नाम दिया गया। उस बिशप का नाम बोनीफ़ेस थर्ड था। पोप शब्द का अर्थ है पापा या पिता। पवित्र बाइबल के अनुसार यीशु मसीह कलीसिया का सिर है। (कुलुस्सियों १ : १८)। परन्तु अब पोप कलीसिया का सिर बन गया। और कलीसिया यीशु मसीह की नहीं, परन्तु रोमन कैथलिक नाम से कहलाने लगी। उस समय रोमी साम्राज्य शक्तिशाली था, और कलीसिया पर रोम का गहरा प्रभाव था।

शीघ्र ही रोमन कैथलिक कलीसिया ने एक नियम निकाला, कि रोमन कैथलिक प्रीस्ट के अतिरिक्त कोई भी अन्य व्यक्ति बाइबल को नहीं पढ़ सकता। उनका कहना था कि बाइबल को केवल प्रीस्ट लोग ही पढ़ व समझ सकते हैं। सो जनसाधारण से बाइबल की प्रतियाँ छीनी जाने लगीं, सैंकड़ों बाइबल की प्रतियाँ जलाई गईं। बाइबल को खोकर लोग बिल्कुल अंधेरे में हो गए। अब हर एक धार्मिक विषय के बारे में जानने के लिये उन्हें रोमन कैथलिक प्रीस्टों के पास जाना पड़ता था और जो वे कहते थे उन्हें मानना पड़ता था। इसी बीच, रोमन कैथलिक कलीसिया १०५४ ई० स० में दो भागों में बंट गई। इसकी दूसरी शाखा ग्रीक ऑर्थोडक्स चर्च के नाम से जानी जाने लगी। इस बंटवारे का कारण यह था कि जबकि रोमन कैथलिक कलीसिया बपतिस्मे के स्थान पर जल का छिड़काव करती थी, कुछ लोगों ने इस शिक्षा का विरोध किया, क्योंकि बाइबल के अनुसार बपतिस्मे के द्वारा मनुष्य को जल के भीतर दफ़न होना चाहिए।

धीरे-धीरे रोमन कैथलिक कलीसिया ने नए नियम की मसीहीयत को बहुत बदल डाला। अब लोग उस कलीसिया को लगभग भूल चुके थे जिसका आरम्भ यीशु मसीह ने यरुशलेम में किया था। बाइबल

उपलब्ध न होने के कारण लोग केवल वही सुनते व विश्वास करते थे जो प्रीस्ट लोग उन्हें बताते थे। पोप की ओर से प्रीस्टों को यह भी अधिकार दिया गया कि वे उन लोगों के पाप क्षमा कर सकते हैं जो दान दें। रोम की सड़कों पर खुले आम पापों की क्षमा मोल लेने के प्रमाण-पत्र बिकने लगे। वास्तव में रोमन कैथलिक कलीसिया इस समय तक इतनी अधिक भ्रष्ट हो चुकी थी, कि १६ वीं शताब्दि में मार्टिन लूथर नाम के एक कैथलिक प्रीस्ट ने चर्च को सुधारने के प्रयत्न में कैथलिक विद्वानों को ललकारा। लूथर ने ९५ ऐसे प्रमुख कारण लिखे जिनके ऊपर, कैथलिक कलीसिया बाइबल के विरोध में चल रही थी। फलस्वरूप, मार्टिन लूथर का कैथलिक चर्च से बहिष्कार कर दिया गया। परन्तु लूथर ने कैथलिक कलीसिया के प्रत्येक विरोध का बड़ी बहादुरी से सामना किया। उस ने अपनी भाषा जर्मनी में बाइबल का अनुवाद किया। अब तक बहुतेरे लोग लूथर की बातों को समझने लगे थे और उसके साथ हो लिये थे। और इस प्रकार से एक नए आन्दोलन का आरम्भ हुआ, जिसे प्रोटेस्टेन्ट आन्दोलन कहा जाता है। जो चिंगारी मार्टिन लूथर ने फेंकी थी वह हवा खाकर आग के रूप में बदल गई। फिर क्या था, मार्टिन लूथर की ही तरह, जान कालविन और जॉन वेज़ली जैसे अनेकों अन्य प्रसिद्ध अगुवे उठ खड़े हुए। लोग कैथलिक चर्च को छोड़कर इन अगुओं के पीछे चलने लगे। जो लोग मार्टिन लूथर के साथ हो लिए वे लूथरन कहलाने लगे, जो जॉन कालविन के साथ हो लिये वे प्रेस्बटेरियन कहलाने लगे, और वे जो जॉन वेज्ली के साथ हुए वे मेथोडिस्ट कहलाने लगे। और इस प्रकार से भविष्य में अनेकों अन्य सम्प्रदाय जन्म लेने लगे। इसी बीच इंगलैण्ड के राजा हेनरी अष्ठम् ने रोम से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया, और सन् १५३४ में इस प्रकार से "चर्च आफ़ इंगलैण्ड" की स्थापना हुई।

परन्तु जबकि सन् ६०६ में रोमन कैथलिक चर्च की स्थापना हुई,

और १०५४ में ग्रीक आर्थोडक्स चर्च बना गया, और फिर १६वीं शताब्दि के बाद अनेकों अन्य साम्प्रदायिक कलीसियाओं का उदय हुआ, प्रभु की उस कलीसिया का क्या हुआ जिसे उसने यरुशलेम में ३३ ई० में बनाया था ?

१८ वीं शताब्दि में विभिन्न सम्प्रदायों के अनेकों प्रचारक, वा अगुवे, इस बात को समझने लगे कि जबकि हम कैथलिक चर्च में से निकलकर इसलिये आए ताकि हम बाइबल की सच्ची कलीसिया में इकट्ठे हों, परन्तु इसके विपरीत हम ने अनेकों कलीसियाएं बना ली हैं, जो अपने-अपने नियम व सिद्धान्तों पर चलती हैं; अलग-अलग नामों से कहलाती हैं। उन्हों ने कहा, जबकि बाइबल बताती है कि चेले आरम्भ में "मसीही" कहलाते थे (प्रेरितों ११ : २६), सो हम भी केवल मसीही कहलाएंगे; हम मनुष्यों के लिखे किसी भी क्रीड या धर्म-सिद्धान्त, जैसे कैटेकिज्म, मैनुएल, दुआ-ए-आम, इन्तख़ाबी सबक, इत्यादि के अनुसार नहीं चलेंगे, परन्तु हम केवल यीशु के "नए नियम" का ही अनुसरण करेंगे। उन्हों ने कहा, हम हर बात में केवल बाइबल के ही अनुसार चलेंगे, और जैसे आरम्भ में सारी कलीसियाएं "मसीह की कलीसियाएं" कहलाती थीं, (रोमियों १६ : १६), हम भी अब से केवल मसीह की कलीसिया के सदस्य होंगे। हम यीशु को इस आज्ञा का प्रचार करेंगे कि "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।" (मरकुस १६ : १६)। और जिस प्रकार से बाइबल बताती है कि जो विश्वास करके अपना मन फिराएगा और अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु के नाम से बपतिस्मा लेगा, उसे प्रभु स्वयं अपनी कलीसिया में मिलाएगा। (प्रेरितों २ : ३७-४१)।

हज़ारों लोग विभिन्न सम्प्रदायों को छोड़कर प्रभु की आज्ञा को मानने लगे। फलस्वरूप, आज संसार भर में हज़ारों की संख्या में मसीह की कलीसियाएं विद्यमान् हैं। ये लोग हर बात में केवल नए नियम

के ही अनुसार चलते हैं ।

परन्तु क्या यह संसार में पाए जानेवाले सैकड़ों सम्प्रदायों में से एक सम्प्रदाय है ? जी नहीं । यह वही कलीसिया है जिसका आरम्भ यीशु मसीह ने ३३ ई० स० में यरुशलेम में किया था, परन्तु जो कुछ समय के लिये संसार में खो गई थी । जिस प्रकार से मान लीजिये, हॉकी का खेल यदि आनेवाली पीढ़ियों में बिल्कुल खो जाए, और लगभग ५०० वर्ष तक इस खेल के बारे में किसी को कुछ ज्ञान न रहे । परन्तु ५०० वर्ष के बाद किसी के हाथ में वह पुस्तक आ जाए जिस में हॉकी के खेल के नियम इत्यादि लिखे हों । और वह व्यक्ति उस पुस्तक की सहायता से हॉकी के खेल का पुन: आरम्भ कर दे, तो क्या उस व्यक्ति ने किसी एक नए खेल का आरम्भ किया है ? जी नहीं । यह ठीक वही खेल होगा जो ५०० बर्ष पूर्व खेला जाता था । इसी तरह से नए नियम की सहायता से नए नियम की कलीसिया का पुन: आरम्भ एक नई कलीसिया की स्थापना नहीं है ।

आज संसार भर में मसीह की कलीसियाएं प्रभु यीशु के नाम के द्वारा उसके सब विश्वासियों से बिनती कर रही हैं, "कि तुम सब एक बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो ।"(१ कुरिन्थियों १ : १०)।

अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पूर्व, प्रभु यीशु ने अपने चेलों को सम्बोधित करके परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा, "मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों । जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिमे कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा ।" (यूहन्ना १७ : २०, २१) । जिस प्रभु ने आपको बचाने के लिये अपनी जान दे दी उसकी प्रार्थना का उत्तर

आज आप किस प्रकार से दे रहे हैं ? क्या आप आज उसी कलीसिया में हैं, जिसे उस ने स्वयं बनाया, और जिस में वह उन सबको मिलाता है जो उसकी मानते हैं ? कहां हैं आज आप ? प्रभु चाहता है कि आप उस में हों, क्योंकि आपकी आत्मा का उद्धार केवल उसी में है। और यदि आप उसमें होंगे तो आप उसकी कलीसिया में होंगे, क्योंकि कलीसिया उसकी देह है। (कुलुस्सियों १ : १८; इफिसियों १ : २२, २३; १ कुरिन्थियों १२ : १३, २७)।

६

वे बुद्धीमान् थे

आज हम अपने पाठ में सबसे पहिले मत्ती २:१-१२ को पढ़ेंगे। यहां हमारा परीचय कुछ अत्यन्त ही बुद्धिमान् लोगों से होता हैं। और हमारे पाठ का उद्देश्य यही होगा कि हम उनके जीवनों से आज अपने लिये शिक्षा प्राप्त कर सकें। जिन बातों के बारे में अब हम पढ़ने जा रहे हैं ये उस समय घटी थीं जब प्रभु यीशु ने इस संसार में जन्म लिया था। लिखा है :

"हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो देखो, पूर्व से कई ज्योतिषी यरुशलेम में आकर पूछने लगे, कि यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है ? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आए हैं। यह सुनकर हेरोदेस राजा और उसके साथ सारा यरुशलेम घबरा गया। और उसने लोगों के सब महायाजकों और शास्त्रियों को इकट्ठे करके उनसे पूछा, कि मसीह का जन्म कहां होना चाहिए ? उन्होंने उस से कहा, यहूदिया के बैतलहम में ; क्योंकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा यों लिखा गया है : कि हे बैतलहम, तू जो यहूदा के देश में है, तू किसी रीति से यहूदा के अधिकारियों में सबसे छोटा नहीं ; क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा। तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर उनसे पूछा, कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था। और उसने यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, कि जाकर उस बालक के विषय में ठीक-ठीक मालूम करो और जब वह

मिल जाए तो मुझे समाचार दो, ताकि मैं भी आकर उसको प्रणाम करूं। वे राजा की बात सुनकर चले गए, और देखो, जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था, वह उनके आगे-आगे चला, और जहां बालक था, उस जगह के ऊपर पहुंचकर ठहर गया। उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित हुए। और उस घर में पहुंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया; और अपना-अपना थैला खोलकर उस को सोना, और लोहबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई। और स्वपन में यह चितौनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले गए।"

प्रश्न यह है, कि वे बुद्धीमान् क्यों थे ? सबसे पहिले हम देखते हैं, कि वे बुद्धिमान् इसलिये थे क्योंकि वे यीशु को ढूंढ़ रहे थे। वे संसार के उद्धारकर्त्ता को ढूंढ़ रहे थे। अन्य लोगों में हमें यह बात दिखाई नहीं देती। अकसर लोग संसार की विभिन्न वस्तुओं की खोज में रहते हैं। कुछ लोग धन की खोज में रहते हैं, कुछ लोग आनन्द की खोज में रहते हैं, कुछ लोगों के जीवन का मूल उद्देश्य अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त करने का होता है। परन्तु वे लोग यीशु को ढूंढ़ रहे थे। परमेश्वर का भक्त यशायाह कहता है, "जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो; दुष्ट अपनी चाल-चलन और अनर्थकारी अपने सोच-विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।" (यशायाह ५५:६,७)। प्रभु यीशु ने कहा, "इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती ६:३३)। सो वे लोग बुद्धिमान् थे, क्योंकि हम देखते हैं कि वे यीशु को ढूंढ़ रहे थे। वे इस संसार के मुक्तिदाता और बचानेवाले को ढूंढ़ रहे थे। आप क्या ढूंढ़ रहे हैं ?

उन लोगों की बुद्धीमानी का एक दूसरा प्रमाण जो हमें मिलता है यह यह है कि यीशु को ढूंढ़ने में वे उस वस्तु का अनुसरण कर रहे थे जिसे उन्हें परमेश्वर ने दिया था, अर्थात् वह तारा जो उनके आगे-आगे चलता था। परमेश्वर ने उनके ऊपर केवल प्रभु यीशु के जन्म को ही प्रगट नहीं किया था, परन्तु उसने उन्हें, एक मार्गदर्शक भी दिया था जो यीशु को ढूंढ़ने में उनकी सहायता करेगा। सो वे लोग बुद्धीमान् थे क्योंकि वे यीशु को पाने के लिये उस वस्तु के पीछे चल रहे थे, उस निशान का अनुसरण कर रहे थे, जो उन्हें परमेश्वर की ओर से मिला था।

इसी प्रकार से परमेश्वर ने आज हमें भी एक मार्ग-दर्शक दिया है, जिसके पीछे चलकर ; जिसका अनुसरण करके, हम यीशु तक पहुंच सकते हैं। और यदि हम अन्त तक उसी के पीछे चलें तो हम अपनी आत्मा का उद्धार और अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त सकते हैं। वह मार्ग-दर्शक जो आज परमेश्वर ने हमें दिया है, वह है उसका वचन, पवित्र बाइबल। इस संसार में बाइबल के अतिरिक्त और कोई ऐसा मार्ग नहीं है जो हमें हमारी आत्मा के उद्धारकर्त्ता यीशु तक पहुंचा सके। परमेश्वर का केवल एक ही मार्ग है और वह है पवित्र बाइबल।

नए नियम में, इब्रानियों के नाम की पत्री के पहिले दो पदों में हम पढ़ते हैं कि "पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके, इन दिनों के अन्त में हमसे पुत्र के द्वारा बातें की..." इसका अर्थ यह है कि आरम्भ में लोगों के पास परमेश्वर का वचन लिखित रूप में नहीं था, उनके पास एक बाइबल नहीं थी, परन्तु परमेश्वर उस युग में कुछ विशेष लोगों के द्वारा अपनी इच्छा मनुष्यों पर प्रकट करता था। फिर उसने अपने वचन को अनेकों भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा प्रकट किया। उन भविष्य-द्वक्ताओं ने लोगों को बताया कि किस प्रकार से प्रभु यीशु का जन्म

होगा, वह किस प्रकार से मनुष्यों के पापों के कारण सताया और मारा जाएगा, और फिर जी उठेगा, और किस तरह से उसका स्वर्गारोहण होगा। इन सब बातों का इतिहास आज हमें बाइबल के पुराने नियम में मिलता है।

परन्तु, फिर, जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा अनुसार अपने पुत्र यीशु को इस संसार में भेजा। प्रभु ने कहा, "मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं, ताकि जो मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे। यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं। जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है : अर्थात् जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा। क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं की, परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या-क्या कहूं, और क्या क्या बोलूं। और मैं जानता हूं, कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये जो बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझसे कहा है वैसा ही बोलता हूं।" (यूहन्ना १२:४६-५०)।

सो आज इस युग में परमेश्वर ने हमसे अपने पुत्र के द्वारा बातें कीं। इस पृथ्वी पर रहकर प्रभु यीशु ने जो कुछ भी कहा या बोला वह सब परमेश्वर की ओर से था। इसलिये, यदि आज अपने बारे में हम परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहते हैं तो हमें चाहिए की हम यीशु की सुनें। यदि हम जानना चाहते हैं, कि हमारे जीवन का क्या उद्देश्य है ? हमारा उद्धार कैसे हो सकता है ? हम एक मसीही कैसे बन सकते हैं ? इस पृथ्वी पर हमारी मृत्यु के बाद हमारी आत्मा का क्या होगा ? तो हमें चाहिए कि हम यीशु के पास आकर उस से सुनें। अब प्रश्न यह है, कि हम यीशु को कैसे सुन सकते हैं ? इसका केवल एक

ही मार्ग है। और वह एक मार्ग है बाइबल को पढ़ने के द्वारा। बाइबल के नए नियम में हमें यीशु के उपदेश, उसकी शिक्षाएं, और उसकी आज्ञाएं मिलती हैं। सो परमेश्वर ने अपने वचन को, अपनी इच्छा को हमारे ऊपर प्रभु यीशु के द्वारा प्रकट किया, और प्रभु यीशु की सारी शिक्षाएं व आज्ञाएं उसके चेलों द्वारा नए नियम में लिखी गईं।

इसलिये परमेश्वर की इच्छा को जानने का केवल एक ही मार्ग है, अर्थात् पवित्र बाइबल। परमेश्वर ने मनुष्य को बाइबल एक मार्ग-दर्शक के रूप में दी है। यह एक ऐसा नक्शा है जिस पर चलकर हम जीवन के मार्ग को तय करके स्वर्ग तक पहुंच सकते हैं। बाइबल के बारे में २ तीमुथियुस ३:१६ में लिखा है, "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।" इसलिये, बाइबल परमेश्वर की इच्छा का सम्पूर्ण प्रकाशन है। बाइबल हमारे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देती है। बाइबल हमें बताती है, कि संसार की सृष्टि कैसे हुई, मनुष्य क्या है, उसके जीवन का उद्देश्य क्या है? बाइबल को पढ़कर हम परमेश्वर, यीशु मसीह, उसकी कलीसिया, उद्धार, स्वर्ग तथा नरक, और अनन्तकाल के बारे में जान सकते हैं। सो परमेश्वर ने हमें एक उद्धारकर्त्ता ही नहीं दिया है परन्तु उसे पाने और उसे अच्छी तरह से जानने के लिए उसने हमें एक मार्ग-दर्शक, एक नक्शा भी दिया है—और वह है पवित्र बाइबल। यदि हम केवल बाइबल का ही अनुसरण करें, उसी में दी हुई शिक्षाओं पर चलें, तो हम वास्तव में बुद्धिमान् ठहरेंगे, क्योंकि बाइबल को हमें परमेश्वर ने एक मार्गदर्शक के रूप में दिया है, जो यीशु तक पहुंचने और उसके साथ-साथ चलने में हमारी अगुवाई कर सकती है। यदि हम केवल बाइबल का ही अनुसरण करें तो हम उन लोगों की तरह ही बुद्धीमान् ठहरेंगे जो परमेश्वर के दिए हुए निशान के पीछे चलकर यीशु को ढूंढ़ रहे थे।

उन लोगों के विषय में तीसरी बात जो उनकी बुद्धीमानो को दर्शाती है यह है, कि वे अन्त तक गए। उन्हें यीशु को ढूंढ़ने में बहुत समय लगा होगा, उन्हें बड़ी पूछताछ करनी पड़ी होगी, मार्ग में अनेकों कठिनाईयों का सामना करना पड़ा होगा। परन्तु उन्होंने अपना साहस नहीं छोड़ा, वे बीच में रुक नहीं गए। परन्तु उसे तब तक ढूंढ़ते रहे जब तक वह मिल नहीं गया। जी हां, वे अन्त तक गए।

अक्सर बहुतेरे लोग यीशु मसीह में विश्वास लाकर, अपने पापों से मन फिराकर और उसके नाम से बपतिस्मा लेकर मसीही बन जाते हैं, और इस प्रकार से वे मसीही दौड़ में सम्मिलित हो जोते हैं। किन्तु, कदाचित् वे इसका अनुभव नहीं करते कि यहां मसीही जीवन का अन्त नहीं परन्तु आरम्भ होता है। प्रभु यीशु ने कहा, "प्राण देने तक विश्वासी रह ; तो में तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।" (प्रकाशितवाक्य २:१०)। मसीही मार्ग वास्तव में सकड़ा मार्ग है। (मत्ती ७:१३,१४)। इस पर चलने के लिये त्याग की आवश्यक्ता है, बलिदान की आवश्यक्ता है। बहुतेरे लोग सोचते हैं, कि मसीही जीवन सुख और चैन का जीवन है, परन्तु नहीं, मसीही जीवन कड़े परिश्रम का जीवन है। प्रभु यीशु के कथनानुसार, जो कोई प्रतिदिन अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं चलता वह मेरा चेला नहीं हो सकता। और फिर लूका ९:६२ में उसने कहा, "जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।" जबकि यह आवश्यक है कि हर एक मनुष्य यीशु में विश्वास करे, उसका अंगीकार करे, अपना मन फिराए, और अपने पिछले पापों की क्षमा के लिये यीशु के नाम से बपतिस्मा ले, उसी तरह से यह भी बहुत आवश्यक है कि इसके बाद वह अपना आगे का जीवन यीशु की शिक्षाओं के अनुसार व्यतीत करे, उसकी आज्ञाओं पर चले, और अन्त तक चलता रहे। क्योंकि केवल दौड़ में सम्मिलित हो जाने से ही ईनाम नहीं मिलता, परन्तु अन्त तक दौड़ने

पर ही ईनाम मिलता है। यदि आप में से कुछ लोगों ने मसीह यीशु की आज्ञाओं का पालन करके उसके पीछे चलने का निश्चय किया है, तो याद रखें कि आपको उसका अनुसरण अन्त तक करना आवश्यक है। और आप, जो भविष्य में उसके पीछे हो लेने का निश्चय कर रहे हैं, प्रभु यीशु के इन शब्दों को याद रखें, उसने कहा, "मेरे नाम के कारण सब लोग तुमसे बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा।" (मत्ती १०:२२)।

फिर, जब हम उन बुद्धीमान् लोगों के बारे में देखते हैं, तो हम पाते हैं, कि जब उन्हें यीशु मिल गया, तो उन्होंने मुँह केवल गिरकर उसे प्रणाम किया, अर्थात् उन्होंने उसकी उपासना की। क्योंकि उन्होंने उद्धारकर्त्ता को पा लिया था। आज संसार में बहुतेरे ऐसे लोग हैं जिन्हें यीशु मिल चुका है, परन्तु वे अपने मन में उसके लिये कोई विशेष आदर व भक्ति नहीं रखते, वे उसकी उपासना नहीं करते। उनके मनों में उसके प्रति कोई श्रद्धा नहीं है; कोई कृतज्ञता नहीं है, कोई धन्यवाद नहीं है। ऐसे लोगों की तुलना वास्तव में उन दस कोढ़ियों से की जा सकती है जिन्हें प्रभु यीशु ने कोढ़ से शुद्ध करके नया जीवन दिया, परन्तु उनमें से केवल एक ही उसे धन्यवाद देने के लिये वापस आया। और हम पढ़ते हैं, कि "इस पर यीशु ने कहा, क्या दसों शुद्ध न हुए तो फिर वे नौ कहां हैं?" (लूका १७:१७)। आज संसार में अनेकों लोगों के विषय में यही उदाहरण दिया जा सकता है। वे पाप के कोढ़ में जीवन बिता रहे थे, परन्तु प्रभु यीशु ने अपना लोहू बहाकर उन्हें शुद्ध किया, उन्हें नया जीवन दिया। किन्तु इसके बदले में उनके पास प्रभु यीशु के लिये कुछ नहीं है। वे उसे धन्यवाद नहीं देते, उसकी उपासना नहीं करते। परन्तु उन बुद्धीमान् लोगों को जब यीशु मिल गया तो उन्होंने उसे प्रणाम किया, उन्होंने उसकी उपासना की।

और फिर हम पढ़ते हैं कि उन्होंने "अपना-अपना थैला खोलकर उस को सोना, और लोहबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई।" अर्थात्

उन्होंने अपनी अच्छी से अच्छी भेंट उसे दी। और इस प्रकार से उन्होंने उसका आदर व सम्मान किया।

क्या आपको यीशु मिल गया है? आप उसे क्या देने के लिए तैयार हैं? प्रभु की दृष्टि में कोई भी वस्तु आपकी आत्मा से बढ़कर उत्तम नहीं है। उसके निकट आपकी आत्मा का महत्त्व इतना बड़ा है, कि उसने स्वयं अपने आपको बलिदान कर दिया ताकि आपकी आत्मा को नाश होने से बचाए। क्या आज आप अपनी आत्मा को यीशु को देने के लिये तैयार हैं? निश्चय ही, यदि आप अपनी आत्मा को उसे नहीं देंगे, तो वह अवश्य ही नाश होगी। क्योंकि केवल प्रभु यीशु ही आपकी आत्मा को बचा सकता है। केवल वही आपकी आत्मा का उद्धार कर सकता है। क्या आप तैयार हैं? प्रभु यीशु नम्रता के साथ कहता है, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?" (मत्ती १६:१६)। क्या आपने सुना?

संसार में कोई ऐसी वस्तु नहीं है, कोई ऐसी शक्ति नहीं है, और कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो आपकी आत्मा को नाश होने से बचा ले। केवल प्रभु यीशु, जिसने आपके छुटकारे का महान् दाम भरा है, आपकी आत्मा को बचाने की सामर्थ रखता है। और वह आपको बचाने के लिये अभी तैयार है। क्या आप, अपने आप को उसे देने के लिये तैयार हैं? हो सकता है, आज कदाचित् यह आपका अन्तिम अवसर हो। शायद फिर कभी यह अवसर आपको न मिल सके। इसलिये, आज ही निश्चय कीजिए, आज ही कदम उठाईए। यीशु अपने छीदे हाथ पसारे हुए आपको बुला रहा है।

७

मसीह में

प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया के आरम्भ के दिनों में, जब रोमी साम्राज्य के भीतर मसीही लोगों को घोर अत्याचारों का सामना करना पड़ रहा था, उनमें से बहुतेरों को बन्दिग्रहों में डाला जा रहा था, कुछ को जलाकर भस्म और कुछ को तलवार के घाट उतारा जा रहा था, और कुछ अन्य मसीही विभिन्न प्रकार के दुखों का सामना कर रहे थे। उन्हीं दिनों में यूहन्ना नाम का यीशु का एक प्रेरित परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नाम टापू में बन्दी था। और वहीं का उल्लेख करके यूहन्ना, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के आरम्भ में हमें बताता है, "कि मैं प्रभ के दिन आत्मा में आ गया।" और तब, प्रभु ने यूहन्ना पर उन सब बातों को प्रगट किया, जिनका वर्णन हमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मिलता है, और जो उन लोगों पर घटने वाली थीं जो कलीसिया को सता रहे थे। इस पुस्तक में हमें न केवल प्रभु और उसकी कलीसिया के विरोधियों की हार का ही पता चलता है, परन्तु हम यह भी देखते हैं, कि प्रभु ने अपने लोगों को ढांढ़स बँधाया और उसने कलीसिया को सम्बोधित करके प्रतिज्ञा करके कहा, कि "प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।" (प्रकाशितवाक्य २:१०)।

और प्रकाशितवाक्य १४:१३ में उसने यूहन्ना से कहा, "कि लिख, जो मुर्दे प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं, आत्मा कहता है, हाँ क्योंकि

वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएंगे, और उनके कार्य उनके साथ हो लेते हैं।"

प्रभु के वचन और उसकी गवाही के कारण अत्याचारों व मृत्यु का सामना करते हुए उन मसीही लोगों के लिये, प्रभु के ये शब्द बड़े ही शान्तिपूर्ण और सुखदायक थे। वहां जबकि वे मर रहे थे, ठीक उसी समय उन्हें यह संदेश मिला, कि वे जो प्रभु में मरते हैं वे धन्य हैं। धन्य शब्द का अर्थ है प्रसन्न होना, आनन्दित होना। अर्थात्, वे जो प्रभु में मरेंगे उनके लिये उनकी मृत्यु प्रसन्नता और आनन्द का कारण ठहरेगी।

प्रभु यीशु मसीह में होने का अर्थ है उसके साथ उस सम्बन्ध में होना जहां वह हमारा उद्धारकर्ता और हमारा प्रभु हो। जहां हम उसके अधिकार को अपने मनों पर अनुभव करें। किन्तु हम एक ही समय में मसीह के भीतर और मसीह के बाहर नहीं हो सकते। या तो हम पूर्ण रूप से मसीह के भीतर हैं या फिर हम उसके बाहर हैं। हम एक साथ दोनों स्थिति में नहीं हो सकते। तौभी, आज बहुतेरे लोग कहते हैं कि मैं मसीह में हूँ, परन्तु मसीह की कलीसिया में नहीं हूँ। यह बात बिल्कुल असम्भव है। क्योंकि कोई भी मनुष्य मसीह में नहीं हो सकता यदि वह उसकी देह में नहीं है और बाइबल सफ़ाई से बताती है कि कलीसिया मसीह की देह है। (कुलुस्सियों १:१८)। हम यह भी पढ़ते हैं, कि वे जो उसकी आज्ञाओं का पालन करके उद्धार पाते हैं उन्हें वह उसी समय अपनी कलीसिया में मिला लेता है। (प्रेरितों २ : ४७)। सो वे जो मसीह में है वे उसकी कलीसिया में है, और वे जो उसकी कलीसिया में है वे मसीह में हैं। प्रेरित यूहन्ना के दिनों में वे सब मसीही जो दुख उठा रहे थे वे सब के सब मसीह की कलीसिया में थे।

परन्तु वे जो मसीह में मरते हैं, किस प्रकार से धन्य हैं? सबसे पहिले, २ तीमुथियुस २:१० में पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि उद्धार

मसीह यीशु में है। और कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ मनुष्य उद्धार प्राप्त कर सके। उद्धार प्राप्त करने का केवल एक ही स्थान है, और वह है मसीह। इसलिये, यदि मेरा उद्धार हुआ है तो मैं मसीह हूं। और मसीह में होकर यदि इस संसार में मेरी मृत्यु भी हो जाए, तो मुझे कोई चिन्ता नहीं, कोई हानि नहीं। क्योंकि मेरा उद्धारकर्ता परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह है, और वह मेरी आत्मा को नाश होने से बचाने की सामर्थ रखता है।

फिर २ कुरिन्थियों ५:१७ में हम यूं पढ़ते हैं: "सो यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो वे सब नई हो गईं।" सो इस से पहिले हमने देखा, कि उद्धार यीशु मसीह में है, और यहाँ हम देखते हैं कि जो मनुष्य मसीह में है वह एक नई सृष्टि है, अर्थात वह एक नया मनुष्य है। वह एक नई सृष्टि है, उसका एक नया जन्म हुआ है, क्योंकि उसने अपनी सब पुरानी बातों से अपना मन फिराया है, उसका पुराना मनुष्य मसीह की मृत्यु की समानता में होकर बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़ा जा चुका है, और इसलिए उसका एक नया जीवन है। उसकी पुरानी इच्छाएँ बदल चुकी हैं। पहिले वह मसीह की कलीसिया का सतानेवाला था, अब वह स्वयं उसके लिए दुख उठाकर आनन्द पाता है; पहिले वह अपना जीवन अपनी इच्छानुसार बिता रहा था, परन्तु अब उसकी इच्छा केवल मसीह की इच्छा है। वह एक नया मनुष्य है, क्योंकि उसकी मंज़िल बदल चुकी है। पहिले वह आग की उस भयानक झील के समीप आता जा रहा था जहाँ सदा का रोना और दांतों का पीसना होगा, परन्तु अब उसका उद्देश्य मसीह में उस जगह पहुंचने का है जहां न मृत्यु रहेगी, न शोक, न विलाप, न कोई दुख—जहां केवल परमेश्वर और उसके लोग होंगे। इसलिये, "यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं, वे सब नई हो गईं।"

इसमें कोई संदेह नहीं कि "यूहन्ना कहता है, कि अब जो मसीह में मरते हैं वे धन्य हैं। क्योंकि रोमियों ८:१ में हम पढ़ते है : "सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं : क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।" पवित्रशास्त्र, २ थिस्सलुनीकियों १:७:९ में, बताता है कि "उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहिचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे।" और हम फिर पढ़ते हैं कि "देखो वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आँख उसे देखेगी, वरन जिन्होंने उसे बेधा था, वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे।" (प्रकाशित-वाक्य १:७)। स्वयं प्रभु यीशु ने कहा कि "इससे अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे, और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे।" (यूहन्ना ५:२८,२९)।

कदाचित् बाइबल किसी भी अन्य विषय पर इतनी अधिक स्पष्ट नहीं है जितनी कि इस पर कि एक दिन प्रभु यीशु वापस आएगा, और उस दिन वे लोग जो परमेश्वर का विरोध करते हैं, और वे जो मसीह के सुसमाचार की आज्ञाओं का पालन नहीं करते उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। वे उसके कारण छाती पीटेंगे और पहाड़ों व चट्टानों से कहेंगे कि हम पर गिर पड़ो और उसके प्रकोप से हमें बचा लो। (प्रकाशितवाक्य ६:१६)। उस दिन सब का पुनरुत्थान होगा, सब जी उठेंगे, और दुष्ट व अधर्मी लोग अपनी बुराई का दण्ड प्राप्त करने के लिये जी उठेंगे।

परन्तु वे जो यीशु मसीह में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। उनका पुनरुत्थान अनन्त विनाश का दण्ड प्राप्त करने के लिये नहीं, परन्तु अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए होगा। वे किसी भी कारण रोएं-पीटेंगे नहीं परन्तु प्रभु की महिमा और जय-जयकार करेंगे। वे इसलिये जी उठेंगे ताकि अनन्त जीवन के उस मुकुट को प्राप्त करें जिसे प्रभु उन सब को देगा जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं। (२ तीमुथियुस ४:८)। यही विशेष कारण था कि प्रेरित यूहन्ना, आत्मा की प्रेरणा पाकर, उन शहीद होनेवाले मसीहियों को लिखकर कहता है, कि अब जो मसीह में मरते हैं, वे धन्य हैं। क्योंकि उनकी मृत्यु दुख का नहीं परन्तु आनन्द का कारण बनेगी, उनकी मृत्यु हार का नहीं परन्तु विजय का कारण बनेगी। क्योंकि वे मसीह में हैं।

और यदि कोई मसीह में है तो उसने उद्धार प्राप्त कर लिया है, वह एक नई सृष्टि है, और इसलिये उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं। सो आज हर एक मनुष्य के सामने एक बहुत बड़ा प्रश्न है, और वह महत्वपूर्ण प्रश्न यह है, कि "**क्या मैं मसीह में हूँ ?**" यह बहुत ही आवश्यक है, कि हर एक मनुष्य अपनी मृत्यु से पूर्व इस बात को जान ले कि क्या वह मसीह में है या मसीह के बाहर है ? क्योंकि यदि वह मसीह में नहीं है तो उसके पास उद्धार पाने की आशा नहीं है, और इसलिये, मृत्यु के बाद वह अवश्य ही अनन्त विनाश का दण्ड पाएगा। यदि वह मसीह में नहीं है तो वह कदापि एक नई सृष्टि नहीं है। और प्रभु यीशु ने कहा, "यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।" (यूहन्ना ३:३)। यदि वह मसीह में नहीं है, तो उस पर दण्ड की आज्ञा हो चुकी है, और वह प्रभु के प्रकोप से कभी न बचेगा।

सो मैं कैसे जान सकता हूँ, कि मसीह में होने के लिये मैं क्या करूँ ? क्या बाइबल में इस प्रश्न का उत्तर मुझे मिलता है ? जी हां, गलतियों ३:२७ में प्रेरित कहता है, "और तुम में से जितनों ने मसीह

में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" अर्थात् बपतिस्मा लेकर हम मसीह को पहिन् लेते हैं, हम उसके भीतर हो जाते हैं। उदाहरण स्वरूप जब मुझे ठण्ड लगती है तो मैं एक गरम कोट पहिन लेता हूं, अब मुझे ठण्ड नहीं लगती, क्योंकि मैं कोट के भीतर हो गया हूं, मैंने कोट पहिन लिया है। इसी प्रकार से, जब बपतिस्मा लेकर हम मसीह को पहिन लेते हैं, तो हम मसीह के भीतर हो जाते हैं, हम मसीह में हो जाते हैं। किन्तु, बाइबल की शिक्षानुसार, बपतिस्मा केवल वही लोग ले सकते हैं जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, और अपना मन फिराते हैं, और यीशु को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करते हैं। यदि कोई विश्वास, मन फिराव, और अंगीकार के बिना बपतिस्मा लेता है, तो उसका बपतिस्मा बाइबल से सहमत नहीं है। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८; ८:३६-३८)। जबकि मसीह के भीतर होने के लिये बपतिस्मा लेना आवश्यक है, उसी तरह से, मसीह में विश्वास करना, और अपने पापों से पश्चात्ताप करना और मसीह का अंगीकार करना भी बड़ा आवश्यक है। कोई भी मनुष्य केवल बपतिस्मा लेकर ही उद्धार प्राप्त नहीं कर सकता और न ही कोई मनुष्य केवल विश्वास के द्वारा उद्धार पा सकता है। (याकूब २:१४-२६)।

परन्तु मान लीजिए, मैं यीशु में विश्वास कर लेता हूँ, और अपने पापों से मन फिरा लेता हूँ, और उसके नाम का अंगीकार करके, उसके नाम से अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लेता हूं। सो अब मैं कहाँ हूं ? निश्चय ही, अब मैं मसीह में हूं। परन्तु, अब आगे यदि मैं मसीह में न चलूं और मेरी मृत्यु हो जाए, तो मेरी मृत्यु कहां होगी ? मसीह के भीतर या मसीह के बाहर ? प्रत्यक्ष ही है, कि मेरी मृत्यु मसीह के बाहर होगी। क्योंकि मैंने मसीह में बपतिस्मा लेकर मसीह को पहिन तो लिया परन्तु अन्त तक उसमें बना नहीं रहा। सुनिए, मैं आपको एक साधारण सा उदाहरण देता हूं। मान लीजिए, बाहर बड़े ज़ोर की

बारिश हो रही है, और मुझे किसी बड़े ही आवश्यक काम से अपने एक मित्र के घर जाना है। सो मैं एक अच्छी सी बरसाती पहिन लेता हूँ जिसके साथ एक टोप भी जुड़ा हुआ है जो मेरे सिर को भीगने से बचाएगा। अब मैं उस बरसाती के भीतर हूं। सो, मैं अपने मित्र के घर जाने को निकल पड़ता हूँ। बारिश और भी तेज़ हो जाती है, परन्तु मैं भीगता नहीं। क्योंकि मैं बरसाती के भीतर हूं। अब, मान लीजिए, आधी दूर जाकर मैं उस बरसाती को उतार देता हूं। सो अब बारिश सीधी मुझ पर पड़ने लगी, अब मैं बुरी तरह भीगने लगा। क्यों? क्योंकि अब मैं बरसाती के भीतर नहीं हूं। अपनी यात्रा के आरम्भ में तो मैंने बरसाती को पहिन लिया था, परन्तु पूरा मार्ग तय करने से पहिले मैं बरसाती के बाहर हो गया।

इस छोटे से उदाहरण से आप समझ सकते हैं, कि जबकि मनुष्य को उद्धार पाने के लिये, एक नई सृष्टि बनने के लिये मसीह में होना आवश्यक है। उसी प्रकार से यह भी उतना ही आवश्यक है कि वह उसमें बना रहे, और अन्त तक उसमें बना रहे, ताकि अन्त में जब उस उसकी मृत्यु हो तो उसकी मृत्यु मसीह में हो। क्योंकि वे, जो मसीह में मरते हैं, वे धन्य हैं।

मत्ती ७ अध्याय में हम कुछ ऐसे लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिनकी मृत्यु मसीह के बाहर हुई थी। वे लोग अपने सारे जीवन भर अपने आपको प्रभु के अनुयायी समझते रहे, और अपने जीवनकाल में उन्होंने बहुतेरे ऐसे कार्य भी किए जो उन्होंने यह समझकर किए कि वे सब प्रभु के नाम में कर रहे थे। परन्तु प्रभु ने कहा, "जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" फिर उसने कहा, "उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्ट आत्माओं को

नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए ?" परन्तु प्रभु ने कहा, "तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।"

यहां हम देखते हैं, कि अपने जीवनकाल में वे प्रभु का नाम ले लेकर उस से प्रार्थनाएं करते थे, उन्होंने प्रभु के नाम में प्रचार किया था, और उसके नाम से अनेकों कार्य किये थे। और इसी आधार पर, अपनी मृत्यु के समय, उनका विचार था कि उनकी मृत्यु प्रभु में होगी। परन्तु उन्होंने एक आवश्यक बात पर ध्यान नहीं दिया था, अर्थात्, कि मसीह में केवल वही लोग मरते हैं जो उसके स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलते हैं। और परमेश्वर ने अपनी इच्छा को प्रभु यीशु मसीह के द्वारा सब मनुष्यों पर प्रगट किया है, और उसी इच्छा को आज हम बाइबल के नए नियम में पढ़ सकते हैं। सो हम देखते हैं, कि उन्होंने प्रभु का अनुसरण तो किया परन्तु अपनी इच्छा अनुसार, उसकी इच्छानुसार नहीं, परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं।

आज भी संसार में बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो प्रभु के पीछे चलते तो हैं परन्तु अपनी इच्छानुसार चलते हैं। वे बिलाम की तरह हैं जिसके बारे में हम पुराने नियम में पढ़ते हैं, कि जब मोआबियों के राजा बालाक ने उस भविष्यद्वक्ता को अपने यहां बुलाया कि वह आकर इस्राएलियों को शाप दे, तो बिलाम ने परमेश्वर से पूछा, कि वह जाए या न जाए, परमेश्वर ने उसे जाने को मना किया। परन्तु दूसरी बार बालाक ने और भी अधिक सोने-चान्दी का लोभ देकर उसे बुलाया। और हम पढ़ते हैं, कि बिलाम दोबारा परमेश्वर से पूछने गया। यह बिलाम की सबसे बड़ी गलती थी। वह जानता था कि परमेश्वर ने उसे एक बार मना कर दिया है, कि वह न जाए, और यही उसके लिये बहुत होना चाहिए था। परन्तु प्रत्यक्ष ही है, कि बिलाम की अपनी इच्छा यह थी कि किसी प्रकार परमेश्वर उसे जाने की अनुमति दे दे।

वह अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा बनाना चाहता था। सो हम पढ़ते हैं, कि परमेश्वर ने उसे हां कर दी। और बिलाम चल पड़ा। परन्तु मार्ग में परमेश्वर ने उसकी गलती को उस पर प्रगट किया। और हम आगे देखते हैं, कि जब बिलाम ने देखा कि उसने राजा की आज्ञा टालकर उसका विरोध किया है, और परमेश्वर की आज्ञा पर न चलकर, परमेश्वर का भी विरोध किया है, तो उसे अपने प्राणों का भय लगा, और उसने ये शब्द कहे : "……सौभाग्य यदि मेरी मृत्यु धर्मियों की सी, और मेरा अन्त भी उन्हीं के समान हो!" बिलाम जानता था कि वह परमेश्वर की आज्ञानुसार नहीं चला, और इसलिये उसकी मृत्यु धर्मियों की सी न होगी।

बहुतेरे लोग धर्मियों की सी मृत्यु तो प्राप्त करना चाहते हैं, परन्तु धर्मियों की सी मृत्यु प्राप्त करने से पहिले धर्मियों का सा जीवन व्यतीत करना आवश्यक है। पवित्रशास्त्र कहता है, कि यीशु, जो पाप से अज्ञात था, उसी को परमेश्वर ने हमारे लिये पाप ठहराया, ताकि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। (२ कुरिन्थियों ५:२१)।

क्या आप यीशु मसीह में हैं? यदि आप अभी तक अपना जीवन पाप में व्यतीत कर रहे हैं, तो आपके पास यह सुअवसर है कि आप यीशु मसीह में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। और उस में होकर, यदि अन्त तक आप उसी में बने रहें, तो निश्चय ही आपकी मृत्यु प्रभु में होगी और, "जो मुर्दे प्रभु में मरते हैं, वे धन्य हैं।"

८

केवल एक

हम अपने आज के पाठ का आरम्भ बाइबल में से इफिसियों की पत्री के चार अध्याय को पढ़कर करेंगे। इस पत्री को यीशु मसीह के प्रेरित पौलुस ने उन मसीही लोगों के नाम लिखा जो उस समय इफिसुस में रहते थे। किन्तु, नएं नियम में पाए जानेवाले प्रत्येक सिद्धांत और शिक्षाएं हमारे लिये उपदेश तथा आदर्श हैं। हमें उन्हें पढ़ना चाहिए और अपने जीवनों में उन्हें व्यवहार में लाना चाहिए, क्योंकि "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।" (२ तीमुथियुस ३ : १६, १७)।

सो आईए, इफिसियों ४ अध्याय मे से पढ़ें, प्रेरित पौलुस, जो इस समय बन्दीग्रह में था, लिखकर कहता है, "सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सबके ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है।"

यहाँ हम देखते हैं, कि प्रेरित धार्मिक एकता के एक सिद्धान्त का वर्णन करता है। उसने अनेकों वस्तुओं का वर्णन किया और कहा, कि वे सब एक-एक हैं। उदाहरण स्वरूप, दो या चार परमेश्वर नहीं है, केवल एक ही परमेश्वर है। और परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना ४ : २४)। कुछ लोग अपनी कल्पना तथा कारीगरी से मूरतों को गढ़कर उनके सामने झुकते हैं, वे सच्चे व जीवते परमेश्वर के स्थान पर काल्पनिक तथा निर्जीव मूरतों को महिमान्वित करते हैं। परन्तु किसी भी मनुष्य की कल्पना इतनी बड़ी नहीं हो सकती कि वह सर्वश्रेष्ठ महान् परमेश्वर का कोई चित्र या आकार बना सके। पवित्र बाइबल का लेखक, यिर्मयाह १० : ३-६ में कहता है, "मूरत तो वन में से किसी का काटा हुआ काठ है जिसे कारीगर ने वसूले से बनाया है। लोग उसको सोने-चान्दी से सजाते और हथौड़े से कील ठोंक ठोंककर दृढ़ करते हैं कि वह हिल डुल न सके। वे खरादकर ताड़ के पेड़ के समान गोल बनाई जाती हैं, पर बोल नहीं सकतीं ; उन्हें उठाए फिरना पड़ता है, क्योंकि वे चल नहीं सकतीं। उन से मत डरो, क्योंकि न तो वे कुछ बुरा कर सकती हैं और न कुछ भला। हे यहोवा (परमेश्वर), तेरे समान कोई नहीं है; तू महान् है, और तेरा नाम पराक्रम में बड़ा है।" सो, केवल एक ही सच्चा व जीवता परमेश्वर है; वह हमारी सुन सकता है, हमें देख सकता है और हमारी सहायता कर सकता है।

फिर प्रेरित कहता है, कि एक ही प्रभु है। अर्थात् प्रभु यीशु मसीह। प्रभु का अर्थ है स्वामी, मालिक, वह जो हम पर अधिकार रखता है। प्रभु यीशु ने हमारा उद्धार करने के लिये अपना लोहू बहाया, उसने हमारी छुड़ौती के लिए एक बहुत बड़ा दाम भरा। इसलिये वह हमारा प्रभु है, हमें केवल उसी के अधिकार में होकर रहना चाहिए। केवल एक ही प्रभु है, और वह है यीशु मसीह।

फिर, एक ही विश्वास है। आज संसार में अनेकों विश्वास हैं,

परन्तु एक ही सच्चा विश्वास है। और वह विश्वास परमेश्वर के वचन पर आधारित है। रोमियों १० : १७ के अनुसार "विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" कोई भी विश्वास जिसका आधार परमेश्वर का वचन नहीं है वह विश्वास झूठा है। यदि हम सब केवल परमेश्वर का वचन ही सुनें तो हम सबका केवल एक ही विश्वास होगा। हम सब केवल एक ही बात कहेंगे, एक सा मन रखेंगे, और एक ही सुसमाचार का प्रचार करेंगे। हम धार्मिक दृष्टिकोण से बंटे हुए नहीं होंगे, न ही हम भिन्न-भिन्न प्रकार के मसीही होंगे, परन्तु केवल एक ही नाम से कहलाएंगे, "क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया; जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों ४ : १२)। निःसंदेह, केवल एक ही सच्चा विश्वास है, और उस विश्वास की नींव मसीह का वचन है।

परन्तु वह बताता है, कि एक ही देह है। यह कदाचित् बड़ा अजीब सा लगता है, क्योंकि आपके पास एक देह है, मेरे पास एक देह है, और हम सबके पास एक-एक देह है, किन्तु पवित्रशास्त्र के अनुसार केवल एक ही देह है। सो वह देह क्या है ? कौन सी देह के विषय में वह यहां बता रहा है ? आईए, कलुस्सियों १ : १७, १८ पदों को पढ़े; यहां लिखा है, "और वही (अर्थात् यीशु मसीह) सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं। और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है।" सो यहां से हम देखते हैं, कि पवित्रशास्त्र में देह का अभिप्राय कलीसिया से है। फिर, इफिसियों १ : २२, २३ में हम फिर पढ़ते हैं, कि परमेश्वर ने "सब कुछ उसके (अर्थात् यीशु मसीह के) पांवों तले कर दिया : और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है।" कलीसिया मसीह की देह है, अर्थात् देह कलीसिया है। परन्तु पवित्रशास्त्र के अनुसार कितनी देह हैं ? केवल एक। और देह क्या है ? देह कलीसिया है। सो जबकि

देह केवल एक है, और देह कलीसिया है—तो फिर पवित्रशास्त्र के अनुसार कितनी कलीसिया हैं ? आप देख सकते हैं, केवल एक। परन्तु, पवित्रशास्त्र की स्पष्ट शिक्षा के विपरीत आज हम संसार में क्या देखते हैं ?

आज संसार में सैकड़ों कलीसियाएं विद्यमान् हैं। वे सब अलग-अलग नामों से कहलाती हैं, अलग-अलग विश्वास रखती हैं, अलग-अलग तरह की शिक्षाएं देती हैं। परन्तु पवित्रशास्त्र आज भी उपदेश देकर कहता है कि केवल एक ही देह है, अर्थात् केवल एक ही कलीसिया है।

कलीसिया का अर्थ है एक देह, एक झुंड, एक मन्डली। और यह मन्डली उन सब लोगों से मिलकर बनी हुई है जिन्हों ने यीशु मसीह का सुसमाचार सुनकर उस पर विश्वास किया है; जिन्होंने अपने पापों व पूर्व जीवन से अपना मन फिराया है; और जिन्हों ने अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लिया है। उन्हों ने विश्वास किया है कि यीशु मसीह उनके पापों के कारण बलिदान हुआ, और वह उनका उद्धार कर सकता है। उन्हों ने अपना मन फिराया है कि अब वे अपना आगे का जीवन पाप में नहीं परन्तु मसीह में व्यतीत करेंगे। उन्होंने बपतिस्मा लिया है, अर्थात् वे मसीह की आज्ञानुसार, उसके नाम से, जल के भीतर गाड़े गए हैं, जो कि इस बात का प्रतीक है कि वे पाप के लिये मरके अपने पुराने मनुष्यत्व को एक कब्र में गाड़ चुके हैं, और इस प्रकार से मसीह की आज्ञा मानने के द्वारा उनका नया जन्म हुआ है। वे सब, जो इस प्रकार से प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करते हैं, प्रभु यीशु अपनी प्रतिज्ञा अनुसार उनका उद्धार करता है और उन्हें अपनी कलीसिया में मिलाता है, जो उसकी देह है, उसकी मन्डली है, और वह केवल एक ही है।

अकसर लोग हम से पूछते हैं, "कि मसीह की कलीसिया का एक

सदस्य बनने के लिये मैं क्या करूं ? मुझे क्या-क्या शर्तें पूरी करनी होंगी ?" मेरे पास कोई अधिकार नहीं है कि मैं आपको बताऊं कि मसीह की कलीसिया का सदस्य बनने के लिये आप को क्या करना चाहिए, और न ही यह अधिकार पृथ्वी पर किसी अन्य मनुष्य के पास है। आप का अधिकार आप के घर पर है, मेरा अधिकार मेरे घर पर है, मसीह का अधिकार मसीह के घर पर है; जो कि उसकी कलीसिया है। इसलिये केवल यीशु मसीह ही आपको बता सकता है कि आप उसके घर अर्थात् उसकी कलीसिया में किस प्रकार से आ सकते हैं। और अपने वचन में उसने हमें यह स्पष्टता से बताया है। आप कदाचित् एक छोटे से गाँव में रहते हों; हो सकता है, आपका घर एक बस्ती में है, शायद आप किसी बड़े शहर में रहते हों; चाहे आप कहीं भी किसी भी स्थान पर क्यों न हों, परन्तु संसार के सब लोगों के लिये प्रभु की केवल एक ही आज्ञा है। वे सब जो उसके सुसमाचार को सुनकर उस पर विश्वास करते हैं, और अपना मन फिराते हैं, और उसके नाम से अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेते हैं, उन्हें प्रभु स्वयं अपनी कलीसिया में मिला लेता है, जो उसकी एकमात्र मन्डली है, जिसका वह सिर और उद्धारकर्त्ता है, और जिसे लेने के लिये वह एक दिन वापस आनेवाला है।

सो, एक ही परमेश्वर है, एक ही प्रभु यीशु मसीह है, एक ही विश्वास है, और एक ही कलीसिया है, और फिर वह आगे लिखकर कहता है, कि एक ही बपतिस्मा है। यहाँ कदाचित कोई पूछे, कि "बपतिस्मा" क्या है ? बपतिस्मा शब्द वास्तव में हमारी हिन्दी या उर्दू भाषा का शब्द नहीं है, परन्तु यह शब्द यूनानी भाषा के "बैपटिज़डो" शब्द से लिया गया है। और यूनानी भाषा में "बैपटिज़डो" का अर्थ है—गाड़े जाना या दफ़न होना, या डुबाना। बपतिस्मा, विश्वास तथा मन फिराव की ही तरह नए नियम की एक विशेष शिक्षा है। मरकुस

१६ : १५, १६ में हम पढ़ते हैं, कि प्रभु यीशु ने अपने चेलों को एक अन्तिम आज्ञा देकर संसार में भेजा, "और उस ने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" फिर इसी तरह से, प्रेरितों २ : ३८ में हम पढ़ते हैं, कि जब लोगों ने यीशु के सुसमाचार को सुनकर उसके चेलों से पूछा कि उन्हें मुक्ति पाने के लिये क्या करना चाहिए, उन्हों ने उन्हें उत्तर देकर कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।"

किन्तु, पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार केवल एक ही बपतिस्मा है। और यह बपतिस्मा केवल उन्हीं लोगों को लेना चाहिए जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, जिन्होंने अपना मन फिराया है, और उसके नाम का अंगीकार किया है। बाइबल के अनुसार, बपतिस्मे के द्वारा मनुष्य जल के भीतर गाड़ा जाता है, जो इस बात को प्रकट करता है कि उस मनुष्य का पुराना मनुष्यत्व मर चुका है, और एक कब्र के भीतर गाड़ा जा चुका है, और तब वह जल से बाहर आता है, जो इस बात को प्रकट करता है कि अब वह एक नए जीवन का आरम्भ करने के लिये जी उठा है। इसी को नया जन्म कहते हैं। प्रभु यीशु ने कहा, "यदि कोई नए सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।" और, फिर अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए उसने आगे कहा, "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" (यूहन्ना ३ : ३, ५)।

और फिर; रोमियों ६ : ३-६ में, प्रेरित पौलुस कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा

पाने से हम उसके साथ गाड़े गए; ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।"

सो केवल एक ही बपतिस्मा है, और यह बपतिस्मा उन लोगों के लिये है जो प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनकर उस पर विश्वास करते हैं, और अपने पापों से मन फिराते हैं, और यीशु को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करते हैं। बाइबल के इस बपतिस्मे के द्वारा मनुष्य जल के भीतर गाड़ा जाता है, और यह बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिये लिया जाता है।

परन्तु तौभी, बाइबल की इस स्पष्ट व साधारण शिक्षा के विपरीत, आज संसार में अनेकों तरह के बपतिस्मे प्रचलित हैं। उदाहरण के रूप से, कुछ लोग व्यक्ति के सिर पर जल छिड़ककर बपतिस्मा देते हैं, कुछ लोग जल उंडेलकर बपतिस्मा देते हैं। और एक बड़ी ही प्रचलित शिक्षा यह है, कि अधिकांश लोग छोटे-छोटे बालकों को गोद में लेकर उनके सिर पर जल छिड़ककर बपतिस्मा देते हैं। मुझे यह कहने में किसी भी तरह से संकोच नहीं, कि वे लोग जो आज इन बातों को सुन रहे हैं उन में से हज़ारों लोग इस बड़ी गलती पर हैं कि उनका बपतिस्मा हो चुका है। जब कि सच्चाई यह है, कि जब वे कुछ ही महीने के नन्हें से बालक थे, उस समय जबकि उन्हें कुछ होश नहीं था, उस समय जब वे यीशु में विश्वास नहीं कर सकते थे, अपना मन नहीं फिरा सकते थे, जबकि वे एक मासूम, निष्पाप छोटे से बच्चे थे, उस समय एक व्यक्ति ने उन्हें अपनी गोद में लेकर बपतिस्मे के नाम पर

उनके सिर पर जल की कुछ बूंदे छिड़की थीं, और बाद में जब वे बड़े हुए तो उन्हें अपने माता-पिता इत्यादि से पता चला कि उनका बपतिस्मा हो चुका है ! आप से मैं केवल एक ही बात कहना चाहूंगा कि आप पश्चात्ताप करें और बाइबल की शिक्षानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें। केवल तभी आपका वह बपतिस्मा होगा जिसके बारे में बाइबल बताती है।

सो याद रखें, जबकि हम अपने आज के पाठ का अंत करते हैं, कि एक ही परमेश्वर है, एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास है, एक ही देह अर्थात् कलीसिया है और एक ही बपतिस्मा है, और हां, हमारी एक ही आशा है।

वे लोग जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को माना है और जो उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं उनकी एक ही आशा है, अर्थात्, प्रभु यीशु मसीह एक दिन वापस आएगा और वह अपने अनुयायियों को अपने साथ ले जाएगा, और वे उसके साथ उसके स्वर्गीय राज्य में सदा आनन्द से रहेंगे। वहाँ, "वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा। और वह उनकी आंखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी..." (प्रकाशितवाक्य २१ : ३, ४)। क्या आपके पास यह आशा है ?

पृथ्वी पर इस जीवन के समाप्त होने के बाद आपके पास क्या आशा है ? यदि आपके पास प्रभु यीशु नहीं है, तो आपके पास कोई आशा नहीं है, क्योंकि केवल वही आपकी आत्मा को नरक के दन्ड से बचा सकता है, क्योंकि उसने आपको पाप के दन्ड से बचाने के लिये एक बहुत बड़ा दाम दिया है। क्रूस के ऊपर से बहे उसके लोहू की एक-एक बूंद आपके पापों के छुटकारे की कीमत थी। वह आज आपका उद्धार करना चाहता है। क्या आप उसके पास आने को तैयार हैं ?

९

परमेश्वर की दृष्टिमेंट

अपने पाठ के आरम्भ में, आईये हम बाइबल में से यशायाह की पुस्तक के ५५ अध्याय को निकालें, यहां हम ६-९ पदों तक यूं पढ़ते हैं, "जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो ; दुष्ट अपनी चाल चलन और अनर्थकारी अपने सोच-विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा। क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच-विचारों में आकाश और पृथ्वी का सा अन्तर है।"

यदि कोई मनुष्य अपना जीवन परमेश्वर से बहुत दूर रहकर पाप में व्यतीत कर रहा है ; शायद वह शराब पीता है, या जुआ खेलता है, या हत्या व चोरी इत्यादि करता है। वह अपने मन में कहता, है कि परमेश्वर मुझे कभी भी क्षमा नहीं करेगा, ऐसा कोई मार्ग नहीं है कि मेरे अपराध क्षमा किए जाएं क्योंकि मैं पाप में बहुत नीचे जा चुका हूं। जब मनुष्य ऐसी कल्पना करता है तो वह परमेश्वर की सामर्थ को सीमित करता है। परन्तु बात यह है, कि मनुष्य परमेश्वर के बारे में ऐसा क्यों सोचता है ? इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि हम अकसर परमेश्वर की कल्पना मनुष्य के रूप में करते हैं। जब हम परमेश्वर के

बारे में विचार करते हैं, तो हम अकसर कल्पना करके सोचते हैं, कि वह शायद एक बहुत बूढ़ा व्यक्ति है, जिसके सारे बाल सफ़ेद हैं, और जिसकी आयु बहुत लम्बी है। और क्योंकि हम परमेश्वर को एक मनुष्य के रूप में देखने का प्रयत्न करते हैं, इसलिये यह बात हमें बड़ी असम्भव सी लगती है कि परमेश्वर क्योंकर एक बड़े से बड़े अपराधी को, एक ऐसे मनुष्य को जो अपना जीवन रात-दिन पाप में व्यतीत करता है, क्षमा कर सकता है। क्योंकि जब हम किसी मनुष्य के ऊपर या अपने ऊपर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि शायद हम अन्य लोगों के छोटे-मोटे अपराध या ग़लती को क्षमा कर दें, परन्तु यदि कोई अपराध हमारी दृष्टि में बहुत बड़ा है तो हम उसे कभी भी क्षमा नहीं करते।

परन्तु परमेश्वर एक मनुष्य नहीं है। और न उसके विचार और कार्य मनुष्य के विचारों व कामों के समान हैं। वह हरएक मनुष्य को निमन्त्रण देकर अपने पास बुलाता है; चाहे वह कितना ही दुष्ट हो, बड़े से बड़ा पापी, अपराधी व अनर्थकारी हो। वह कहता है, यदि वह मनुष्य अपने पाप, दुष्टता, अपराध और अनर्थ के कामों को छोड़कर मेरी ओर फिरे तो मैं उस पर दया करूंगा, और उसे पूरी रीति से क्षमा करूंगा। क्योंकि प्रभु कहता है, कि मेरे विचार मनुष्यों के विचारों के समान नहीं हैं, उनमें आकाश और पृथ्वी का सा अन्तर है। उदाहरण स्वरूप, हो सकता है कि कोई वस्तु हमारी दृष्टि में बहुत छोटी वा महत्त्वरहित हो; परन्तु वही वस्तु परमेश्वर की दृष्टि में बहुत बड़ी वा महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। हो सकता है हमारी दृष्टि में कोई मनुष्य बड़ा ज्ञानी या धनी प्रतीत हो; परन्तु वही मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में महामूर्ख वा निर्धन हो सकता है!

जब परमेश्वर ने शाऊल को इस्राएल के ऊपर राज्य करने को तुच्छ जाना, तो उसने भविष्यद्वक्ता शमूएल को बेतलहम में यिशै के

घर में भेजा, ताकि वह यिशै के पुत्रों में से एक को लेकर, परमेश्वर की ओर से, इस्राएल पर राज्य करने के लिये उसका अभिषेक करे। शमूएल ने वहां पहुंचकर सबसे पहिले उसके बड़े पुत्र एलीआब पर दृष्टि की, और उसके डील-डौल को देखकर सोचा कि निश्चय ही यही परमेश्वर का अभिषिक्त होगा। परन्तु परमेश्वर ने शमूएल से कहा, "न तो उसके रूप पर दृष्टि कर और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा कि दृष्टि मन पर रहती है।" (१ शमूएल १६:७)। और इसके विपरीत कि यिशै ने अपने सारे पुत्रों को शमूएल के सामने कर दिया, केवल एक को छोड़कर जो कि सबसे छोटा था और उस समय भेड़ बकरियां चराने गया था, तौभी परमेश्वर ने उन में से किसी का भी अभिषेक करने की आज्ञा शमूएल को न दी। और फिर हम देखते हैं, कि उसका सबसे छोटा पुत्र दाऊद बुलाया गया, और परमेश्वर ने शमूएल को आज्ञा देकर कहा, कि इसी का अभिषेक कर। यिशै और दाऊद के बड़े भाई कदाचित् इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते थे, कि परमेश्वर उनमें से सबसे छोटे भाई दाऊद को इस्राएल पर राज्य करने के लिये चुनेगा। परन्तु परमेश्वर ने उनकी तरह दाऊद को बाहरी रूप से नहीं देखा, उसने दाऊद को भीतर से देखा और उसने उसमें वह बड़ी विशेषता देखी जो उस समय मनुष्यों की आंखों से छिपी थी। परन्तु आगे चलकर हम देखते हैं कि दाऊद एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध राजा हुआ जिसने इस्राएल पर चालीस वर्ष तक राज्य किया। परमेश्वर की प्रशंसा और बड़ाई में लिखे दाऊद के भजन आज भी लाखों लोगों के लिये प्रेरणादायक हैं।

फिर, परमेश्वर ने मूसा नाम के एक व्यक्ति को भी एक बहुत बड़ा काम करने के लिये चुना। जबकि दाऊद को अन्य लोग अपनी दृष्टि में छोटा समझते थे, मूसा स्वयं अपने आप को अपनी दृष्टि में बहुत छोटा

और निर्बल समझता था। जिन दिनों में मूसा का जन्म हुआ था, इस्राएली लोग मिस्र देश में बन्धुए होकर रहते थे, वे उनके दास थे। परन्तु जब मूसा बड़ा हुआ तो एक दिन परमेश्वर ने मूसा से बातें करके उस से कहा कि "इस्राएलियों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है, और मिस्त्रियों का उन पर अन्धेर करना भी मुझे दिखाई पड़ा है। इसलिये आ, मैं तुझे फ़िरौन (अर्थात् मिस्रियों के राजा) के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।" यह सुन, मूसा ने परमेश्वर से यह कहने के विपरीत, कि मैं तेरी आज्ञानुसार करने के लिये तैयार हूं, उसने परमेश्वर से कहा, कि परमेश्वर "मैं कौन हूं जो फ़िरौन के पास जाऊं, और इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आऊं?" यह बात मूसा के लिये असम्भव थी। उसने अपने आपको मिस्र के राजा और मिस्र की सारी सेना के सामने अकेला देखा। परन्तु वह यह न देख सका कि उसे भेजनेवाला वह है जो फ़िरौन और मिस्र और संसार की सारी सेनाओं से भी महासामर्थी है। इस विषय में हम आगे पढ़ते हैं, कि परमेश्वर ने मूसा की बात सुनकर कहा, मूसा, "निश्चय ही मैं तेरे संग रहुंगा, तू जा।" परन्तु मूसा अभी भी तैयार नहीं था, वह अभी भी भय से कांप रहा था, उसने कहा, परन्तु परमेश्वर वे लोग मेरी प्रतीति नहीं करेंगे और न मेरी सुनेंगे। परमेश्वर ने उससे कहा, तू जा, मैं तेरे संग हूं, मैं तेरे द्वारा उनके सामने अनेकों चिन्ह दिखाऊंगा। परन्तु मूसा! वह अभी भी अपने आपको परमेश्वर की दृष्टि से न देख सका! उसने अपने ऊपर दृष्टि डाली, और कहा, परन्तु प्रभु मैं तो बोलने में निपुण नहीं हूं, मेरी जीभ लड़खड़ाती है। ओह! मूसा बड़ी ही कठिनाई से इस बात को देख सका कि प्रभु के द्वारा वह सब कुछ कर सकता है। और जैसा कि हम पढ़ते हैं, वही भयभीत व कमज़ोर मूसा जब परमेश्वर की आज्ञा मानकर मिस्र के भीतर गया, तो परमेश्वर ने उसके द्वारा मिस्र में ऐसे बड़े-बड़े आश्चर्य के काम दिखाए कि उन्हें देखकर सारा मिस्र घबरा उठा; और फ़िरौन ने भयभीत होकर

इस्राएलियों को अपने देश में से निकल जाने की आज्ञा दे दी। निश्चय ही मूसा अपनी दृष्टि में बड़ा ही निर्बल वा अयोग्य था, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वह उसकी प्रजा का एक बहुत बड़ा अगुवा था। (निर्गमन ३-१४)।

प्रभु यीशु ने भी अपने नए नियम में ऐसे अनेकों उदाहरणों का वर्णन किया है, जिनमें उसने हमें सिखाया कि परमेश्वर का देखना मनुष्य का सा नहीं है। एक स्थान पर लिखा है कि "वह मन्दिर के भन्डार के सामने बैठकर देख रहा था, कि लोग मन्दिर के भन्डार में किस प्रकार पैसे डालते हैं और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला। इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर दो दमड़ियां, जो एक अधेले के बराबर होती हैं, डालीं। तब उसने अपने चेलों को पास बुलाकर उनसे कहा ; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मन्दिर के भन्डार में डालनेवालों में से इस कंगाल विधवा ने सबसे बढ़कर डाला है। क्योंकि सब ने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इसने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था, अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है।" (मरकुस १२: ४१-४४)।

कितनी अजीब बात है! यहां जबकि बहुतेरे धनी लोग सैकड़ों व हज़ारों रुपये दे रहे थे, प्रभु ने उनकी कोई प्रशंसा नहीं की ; परन्तु उस निर्धन विधवा ने केवल दो पैसे दान में डाले, और प्रभु ने कहा, कि इसने सबसे बढ़कर डाला है। मनुष्य के दृष्टिकोण से यह बात बिल्कुल उल्टी है। क्योंकि जब कोई धनी मनुष्य बहुत सारा दान देता है, तो लोग उसकी बड़ी प्रशंसा व मान-सम्मान करते हैं, परन्तु यदि कोई निर्धन थोड़ा-बहुत कुछ देता है तो उसका लोगों के निकट कोई महत्त्व नहीं होता। परन्तु प्रभु ने उस कंगाल विधवा के छोटे से दान में एक बहुत बड़ी विशेषता देखी, वह विशेषता, जो उन धनी लोगों के बड़-बड़े दोनों में नहीं थी ; और वह महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि जबकि

उन धनी लोगों ने अपने धन की बहुतायत में से दान दिया, उस विधवा ने अपनी घटी में से, जो कुछ उसका था, सारा का सारा दे दिया। जबकि उन धनी लोगों ने जो कुछ भी दिया उनके पास अभी भी बहुत कुछ बाकी था, परन्तु उस कंगाल विधवा ने अपनी सारी जीविका दे दी। जब उसने दिया तो उसके पास अपने लिये कुछ भी बाकी न बचा।

बहुतेरे लोग दान तो देते हैं परन्तु अपनी बढ़ती में से देते हैं। वे देते हैं जब उनके पास कुछ अतिरिक्त होता है। वे केवल तभी देते हैं जब उन्हें देने में कोई कष्ट न हो, या अपनी किसी इच्छा का बलिदान न करना हो। बहुतेरे लोग जो हफ्ते में एक बार चन्दा या दान देते हैं वे अकसर चार-आठ आने या बहुत हुआ तो रुपया-दो रुपया होता है, जबकि हफ्ते का उनका अपना खर्च जोड़ा जाए तो पान, बीड़ी, सिगरेट, सिनेमा इत्यादि का जोड़ कई रुपओं में आता है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि प्रभु के निकट ऐसे दानों की कोई प्रशंसा नहीं है। प्रभु ऐसे दान से प्रसन्न होता है जिसे मनुष्य अपनी घटी में से दे, जिसे देने में उसे कुछ कष्ट उठाना पड़े; वह दान जिसमें बलिदान है। उस कंगाल विधवा के वर्णन में मैं इस बात को भी अनदेखा नहीं कर सकता, कि जबकि वहां अनेकों बड़े-बड़े धनी लोग सैकड़ों रुपए दान में डाल रहे थे, तो उसके पास केवल दो ही पैसे थे और वह उन्हें ही देने के लिये ले आई। कुछ लोग जब उनके पास देने के लिये अधिक नहीं होता तो वे देने में शर्माते हैं, यदि उनके पास केवल दो ही पैसे हैं तो उसे दान में डालते हुए वे बड़े शर्माते हैं; और उसे बड़ा छिपाकर डालते हैं कि "कहीं कोई देख न ले।" परन्तु उस कंगाल विधवा ने अपना छोटा सा दान छिपाकर या डरकर या किसी प्रकार के दबाव के कारण नहीं दिया उसने प्रसन्नता से अपनी सारी जीविका डाल दी। जबकि मनुष्यों की दृष्टि में यद्यपि वह दान बहुत छोटा था, कदाचित् न होने के समान था,

परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वह बहुत बड़ा दान था ; क्योंकि वह मनुष्य की बहुतायत में से नहीं परन्तु घटी में से डाला गया था ; और क्योंकि परमेश्वर का देखना मनुष्य का सा नहीं है ।

फिर एक और जगह, यीशु ने लोगों को प्रार्थना करने का महत्त्व सिखाने के बाद, उनसे कहा, "कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए ; एक फ़रीसी था और दूसरा चुंगी लेनेवाला । फ़रीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्यों की नाईं अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूं । मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं ; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं ।" परन्तु दूसरी ओर, प्रभु ने कहा, "चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आँखें उठाना भी न चाहा, बरन अपनी छाती पीट-पीटकर कहा ; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर ।" और प्रभु यीशु ने लोगों से कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, कि वह दूसरा (अर्थात् फ़रीसी) नहीं ; परन्तु यह मनुष्य (चुंगी लेनेवाला) धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया ।" इसलिये, प्रभु ने कहा, "जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा ; और जो अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा ।" (लूका १२ : ६-१४) ।

यहां हम देखते हैं, कि दो मनुष्य थे; दोनों प्रार्थना करने के लिये गए । किन्तु, जबकि चुंगी लेनेवाले की प्रार्थना को तो परमेश्वर ने स्वीकार किया परन्तु फ़रीसी की प्रार्थना को परमेश्वर ने अस्वीकार कर दिया । क्यों ? इसका कारण बिल्कुल स्पष्ट है । क्योंकि वह फ़रीसी अपने आपको धर्मी समझता था, उसने परमेश्वर से कहा, कि वह दूसरा मनुष्य बड़ा पापी है, परन्तु मैं बड़ा धर्मी हूं ; उसने अपने आपको बहुत बड़ा बनाया ; उसके व्यवहार में दीनता और नम्रता नाम तक को

नहीं थी। परन्तु वह चुंगी लेनेवाला इतना दीन था कि उसने अपनी आखें भी ऊपर उठाना न चाहा, और उसने परमेश्वर से बिनती करके कहा, कि मुझ पापी पर दया कर। वह फ़रीसी लोगों की दृष्टि में बहुत बड़ा आदमी समझा जाता था क्योंकि वह उनका धार्मिक अगुवा था, उसका ओहदा बहुत बड़ा था, उसका बड़ा मान-सम्मान था। परन्तु चुंगी लेनेवाला आम लोगों की दृष्टि में बड़ा ही अधर्मी वा अपराधी समझा जाता था। किन्तु, परमेश्वर के दृष्टि में ऐसा नहीं था ; क्योंकि उसका देखना मनुष्यों का सा नहीं है ; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है परन्तु परमेश्वर की दृष्टि मन पर होती है।

प्रभु यीशु ने कहा, "धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।" (मत्ती ५:३)।

परन्तु फिर, प्रभु यीशु ने एक और मनुष्य के बारे में दृष्टान्त देकर कहा, "कि किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं। और उसने कहा; मैं यह करूंगा ; मैं अपनी बखारियां तोड़कर उनसे बड़ी बनाऊंगा ; और वहां अपना सब अन्न और संपत्ति रखूंगा : और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी है ; चैन कर, खा, पी, सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा: हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा : तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किस का होगा ?" और तब प्रभु ने कहा, "ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।"

यहां हम देखते हैं कि एक मनुष्य है, जिसके जीवन का केवल एक ही उद्देश्य था ; कि वह किस तरह से अधिक से अधिक धन बटोर ले। और वह बहुत धनवान हो गया। वह सब लोगों की दृष्टि में बहुत बड़ा आदमी था, वह अपनी दृष्टि में बहुत बड़ा आदमी था ;

चहुत बड़ा धनवान था। परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में, वह एक कंगाल, निर्धन, और एक बहुत बड़ा मूर्ख था। क्योंकि परमेश्वर की भेदनेवाली आंखें उस मनुष्य को भीतर से देख सकती थीं और उसने देखा कि वह एक बहुत बड़ा मूर्ख है। क्योंकि उसने अपनी मरनहार देह के लिये तो बहुतायत से इकट्ठा किया था, परन्तु अपनी अमर आत्मा के लिये उसने कुछ भी नहीं जोड़ा था। उसके पास अपनी देह को सुसज्जित करने के लिये अनेकों अच्छे-अच्छे वस्त्र थे, परन्तु उसकी आत्मा नंगी थी ; उसके पास अपनी देह को तन्दरुस्त रखने के लिये बहुत सारी उपज थी, परन्तु उसकी आत्मा भूखी वा निर्बल थी। और अब, परमेश्वर ने उससे कहा, जबकि तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, तो ये सब बस्तुएं जो तूने जीवनभर इकट्ठा की हैं तेरे किस काम आएंगी ? क्या वे वस्त्र तेरी आत्मा को ढांक सकेंगे ? क्या वह भोजन तेरी आत्मा को बचा सकेगा ? मित्रो, वह मनुष्य वास्तव में बड़ा मूर्ख था।

परन्तु आज कितने ही लोग इसी प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वे अपने जीवन का हर एक क्षण धन-सम्पत्ति व सुख बटोरने में बिता रहे हैं। उनके जीवन का केवल एक यही उद्देश्य है कि किस प्रकार से वे अधिक से अधिक सम्पत्ति व सुख अपने लिये बटोर लें। किन्तु उन्हें अपनी आत्मा के लिये कुछ भी प्राप्त करने की कोई चिन्ता नहीं। क्या वे लोग उस मूर्ख मनुष्य से कुछ भी कम हैं ?

क्या आप जानना चाहते हैं कि आप परमेश्वर की दृष्टि में कैसे लगते हैं ; सुनिये, परमेश्वर अपने वचन में कहता है, "कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों ३ : २३)। परमेश्वर की दृष्टि में आपका यह चित्र है। पापी, अधर्मी, और परमेश्वर की महिमा से रहित। परन्तु परमेश्वर का वचन हमें यह भी बताता है कि "पाप की मजदूरी (या फल) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६ : २३) परमेश्वर आप से प्रेम करता है, वह आपकी खोई हुई आत्मा को बचाना

चाहता है। उसने मनुष्य से इतना प्रेम किया कि अपने एकलौते पुत्र, यीशु, को हमारे पापों के कारण बलिदान होने को दे दिया।

इस से कुछ अंतर नहीं पड़ता, कि आप अपनी दृष्टि में कैसे लगते हैं? इस से भी कुछ अन्तर नहीं पड़ता, कि आप अन्य लोगों की दृष्टि में कैसे लगते हैं। विशेष बात देखने की यह है, कि आप परमेश्वर की दृष्टि में कैसे लगते हैं? प्रभु यीशु इस संसार में मनुष्य को बदलने के लिये आया? वह मनुष्य को एक नया रूप देने के लिये आया; वह मनुष्य को पाप और अधर्म से धोकर उसे एक नई सृष्टि बनाने के लिये आया। पवित्र बाइबल कहती है, "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है।" (२ कुरिन्थियों ५:१७)। आप भी अपने पापों से उद्धार प्राप्त करके एक नई सृष्टि बन सकते हैं। यदि आप परमेश्वर की इच्छानुसार, यीशु मसीह में विश्वास करेंगे और पापों से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा लेंगे, तो वह आपका उद्धार करके आपको एक नया मनुष्य बनाएगा, और तब आप परमेश्वर की दृष्टि में एक मूर्ख नहीं परन्तु एक बुद्धिमान् मनुष्य ठहरेंगे। क्योंकि प्रभु ने कहा, "इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर चटान पर बनाया। और मेंह बरसा और बाढें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नेव चटान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" (मत्ती ७:२४-२७)। प्रभु आपको उचित निश्चय करने के लिये सुबुद्धि दे।

१०

आप किस मूल्य पर बेच रहे हैं ?

आज से कई हज़ार वर्ष पूर्व एसाव और याक़ूब नाम के दो भाई थे। उनके पिता का नाम इसहाक तथा माता का नाम रिबका था। एसाव बड़ा था। और याक़ूब छोटा था। एसाव के बारे में हम पढ़ते हैं, कि वह एक बड़ा चतुर शिकारी था, परन्तु याक़ूब अकसर घर में ही रहता था। इन दोनों भाईयों के बारे में एक बड़ा ही रोचक वृत्तान्त हमें उत्पत्ति की पुस्तक के २५ अध्याय में मिलता है। लिखा है, एक दिन, "याक़ूब भोजन के लिये कुछ दाल पका रहा था : और एसाव मैदान से थका हुआ आया। तब एसाव ने याक़ूब से कहा, वह जो लाल वस्तु है, उसी लाल वस्तु में से मुझे कुछ खिला, क्योंकि मैं थका हूं। याक़ूब ने कहा, अपना पहिलौठे का अधिकार आज मेरे हाथ बेच दे। एसाव ने कहा, देख, मैं तो अभी मरने पर हूं : सो पहिलौठे के अधिकार से मेरा क्या लाभ होगा ? याकूब ने कहा, मुझ से अभी शपथ खा : सो उस ने उस से शपथ खाई : और अपना पहिलौठे का अधिकार याकूब के हाथ बेच डाला। इस पर याकूब ने एसाव को रोटी और पकाई हुई मसूर की दाल दी; और उस ने खाया पिया, तब उठकर चला गया।" सो लिखा है, "यों एसाव ने अपना पहिलौठे का अधिकार तुच्छ जाना।"

पहिलौठे का अधिकार परिवार में सबसे बड़े पुत्र का होता था। इसका अभिप्राय यह होता था, कि पिता की मृत्यु के बाद, परिवार में सबसे बड़ा पुत्र परिवार का मुखिया समझा जाता था, उसे पिता के

अनेकों अधिकार प्राप्त होते थे, परिवार की सम्पत्ति पर उसका दुगना अधिकार होता था।

परन्तु एसाव को उस समय बड़ी ज़ोर की भूख लगी थी। उसे उस समय उस लाल वस्तु के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। वह अपना पेट भरने के लिये सब कुछ करने को तैयार था। सो उस ने अपना पहिलौठे होने का अधिकार केवल मसूर की दाल के लिये बेच डाला। एसाव के पास एक बहुत बड़ी वस्तु थी परन्तु उसने उसे तुच्छ जाना और बड़े ही सस्ते दामों पर बेच डाला!

परन्तु जो महत्त्वपूर्ण वस्तु एसाव के पास थी उससे भी कहीं अधिक बढ़कर एक महत्वपूर्ण वस्तु आपके पास है। वह अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण वस्तु आप सब के पास है, प्रत्येक मनुष्य के पास है; चाहे, आप नर हों या नारी, अमीर हों या ग़रीब, परमेश्वर ने उस वस्तु को प्रत्येक मनुष्य को दिया है। और वह अनमोल, वस्तु है आपकी आत्मा। क्या आपने कभी इस महत्त्वपूर्ण बात पर विचार किया है? आप शारीरिक रूप से कदाचित् दुर्बल, अस्वस्थ या बिल्कुल निर्धन हों; इस संसार में कदाचित आपके पास कुछ भी न हो, परन्तु सम्पूर्ण सृष्टि में आप परमेश्वर की महिमा हैं, क्योंकि आप परमेश्वर के स्वरूप और उसकी समानता पर रचे गए हैं। एसाव की तरह कदाचित् आप के पास कोई सांसारिक अधिकार न हो, इस संसार के दृष्टिकोण से कदाचित् आप निर्धन या कंगाल हों। परन्तु स्वर्ग के दृष्टिकोण से आप एक बड़े ही महान् प्राणि हैं, क्योंकि आप सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के स्वरूप व उसकी समानता पर बनाए गए हैं। और परमेश्वर आत्मा है। इसलिये आप एक आत्मिक प्राणि हैं। आपकी आत्मा स्वर्ग के दृष्टिकोण से इतनी अधिक बहुमूल्य है, कि संसार का सारा धन-सम्पत्ति और जो कुछ भी इस पृथ्वी पर पाया जाता है वह सब मिलकर भी आपकी आत्मा के बराबर नहीं हो सकते।

यदि आप अपनी आत्मा को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखें तो आपको यह समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी, कि क्यों परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपने एकलौते पुत्र यीशु को संसार में मरने के लिये भेज दिया ; क्यों उस ने आपके और मेरे पापों के कारण अपने पुत्र का लोहू बहाया ? क्या कारण था, कि वह जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया ? क्यों उस महान्, दयालु, व प्रेमी परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते पुत्र को मरते हुए नहीं बचाया ? और उस समय जब वह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच में लटका हुआ अपने पिता को पुकार-पुकारकर कह रहा था, "हे मेरे परमेश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया ?" तो क्यों परमेश्वर ने उस से अपना मुंह मोड़ लिया ?

क्या आपने कभी अपनी आत्मा के ऊपर प्रभु यीशु मसीह के दृष्टिकोण से विचार किया है? उसने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ? और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा ?" (मरकुस ८:३६, ३७)। मित्रो, यहां प्रभु यीशु हमें मनुष्य की आत्मा के गम्भीर महत्त्व को समझा रहा है। उस ने कहा, यदि एक मनुष्य संसार के सारे धन सम्पत्ति को प्राप्त कर ले, मान लीजिए संसार के सारे घर उसी के हों, संसार की सारी शक्ति उसी की हो, और संसार की सारी वस्तुओं पर उसका अधिकार हो, परन्तु तौभी यदि वह अपनी आत्मा की हानि उठाए, तो उन सब वस्तुओं से उसे कोई लाभ नहीं। वास्तव में उसके कहने का विशेष अभिप्राय यह है, कि वह मनुष्य अपनी मृत्यु के बाद अपने साथ कुछ भी न ले जा सकेगा, यद्यपि इस पृथ्वी पर उसके पास सब कुछ था परन्तु मृत्यु के बाद उसकी आत्मा अनन्तकाल तक नरक में दन्ड पाएगी। सो उसे क्या लाभ प्राप्त हुआ ? एक ओर तो उसने कुछ वर्षों के लिये अपने लिये सब कुछ प्राप्त कर लिया, परन्तु दूसरी ओर उसने अपनी आत्मा को हमेशा के लिए खो दिया। जिस प्रकार से

एसाव ने केवल एक समय के भोजन के लिये अपना पहिलौठे का अधिकार सदा के लिये खो दिया।

परन्तु आज संसार में हज़ारों लोग अपनी आत्माओं को एसाव की तरह बेच रहे हैं। एसाव ने अपना पहिलौठे का अधिकार केवल मसूर की दाल के लिये बेच डाला। किन्तु, आज बहुतेरे लोग एसाव की ही तरह अपनी आत्माओं को संसार में विभिन्न वस्तुओं के लिये बेच रहे हैं। बहुतेरे लोग अपनी आत्मा को इसलिये बेच रहे हैं क्योंकि वे अपनी आत्मा का मूल्य नहीं जानते। जिस तरह से एसाव ने अपने पहिलौठे के अधिकार का महत्व नहीं जाना, वे लोग अपनी आत्मा का महत्त्व नहीं जानते। वे ऐसे छोटे-छोटे बच्चों के समान हैं जो एक गुब्बारे के बदले में, या किसी एक सुन्दर खिलौने के बदले में बड़ी से बड़ी मूल्यवान वस्तु को भी प्रसन्नता से दे देते हैं। क्योंकि वे उस मूल्यवान वस्तु का महत्त्व नहीं जानते, वे उसे तुच्छ समझते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं, कि आज हज़ारों लोग अपनी आत्मा को केवल इसलिये बेच रहे हैं, क्योंकि वे समझ नहीं रखते। भजन संहिता ४९ : २० में लेखक कहता है, "मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हों परन्तु यदि वे समझ नहीं रखते, तो वे पशुओं के समान हैं जो मर मिटते हैं।" और यह सच है, कि आज हज़ारों लोग पशुओं के समान हैं, क्योंकि वे समझ नहीं रखते। मेरा विश्वास है, आप सब ने एक पशु देखा है, उसे हम सूअर कहते हैं। अब मान लीजिए, एक सूअर को लेकर उसे आप अच्छी तरह नैहलाएं, उसके शरीर के ऊपर ख़ुशबुदार पाऊडर छिड़कें, और कदाचित् उसे अच्छे से कपड़े पहिनाएं, और उसे अपने घर में रखें। फिर कुछ देर के लिये, मान लीजिए, आप बाज़ार चले जाएं। अब, जब आप बाज़ार से वापस आएंगें तो आप उस पशु को कहाँ पाएंगे ? जी हां, बिल्कुल ठीक, आप उसे कीचड़ और गंद में खेलते पाएंगे। अब, मान लीजिए, आप उसे पकड़कर दोबारा साफ़ करते हैं, और इस बार उसकी परख करने के लिए आप उसके सामने दो बड़े-

बड़े बर्तन रख देते हैं। एक बर्तन में तो आप सारा कूड़ा-कचरा इत्यादि भर देते हैं, और दूसरे को आप विभिन्न मूल्यवान वस्तुओं से भर देते हैं। अब आप बैठकर देखते हैं, कि वह पशु किस बर्तन को अपने लिए चुनेगा ? जी हां, आपका अनुमान बिल्कुल ठीक है, वह पशु उसी बर्तन के पास जाएगा जिसमें सारा गंद भरा हुआ है ! क्योंकि उसे मूल्य परखने की समझ नहीं है। बिल्कुल ठीक ऐसे ही, आज हज़ारों लोग हैं, वे अपनी आत्मा की क़ीमत नहीं पहिचानते। वे अपनी आत्मा को, एसाव की तरह, संसार की छोटी-छोटी वस्तुओं के लिए बेचते फिरते हैं। वह वस्तु कदाचित् भोजन हो, कपड़ा या मकान हो, धन हो या मान हो।

वे उस यहूदा की तरह हैं, जिसने चांदी के केवल तीस सिक्कों के लिए अपने प्रभु को बेच डाला। बहुतेरे लोग अपनी आत्मा को धन के हाथों बेच रहे हैं। उनके जीवन का केवल एक ही उद्देश्य है, अर्थात् वे अधिक से अधिक, खूब ढेर सारा धन बटोरकर अपने लिये इकट्ठा कर लें। उन लोगों की तुलना वास्तव में उस मूर्ख धनवान के साथ की जा सकती है, जिसका दृष्टान्त देकर प्रभु यीशु ने कहा, कि जब उसकी भूमि में बड़ी उपज हुई, "तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहाँ अपनी उपज इत्यादि रखूं। और उस ने कहा; मैं यह करूंगा : मैं अपनी बखारियां तोड़कर उन से बड़ी बनाऊंगा; और वहाँ अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूंगा : और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण तेरे पास बहुत वर्षों के लिए सम्पत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह। प्रभु यीशु ने बताया, 'परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा; हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया, जाएगा : तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है वह किस का होगा ?" और फिर प्रभु ने लोगों से कहा कि "ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।" (लूका १२ : १६-२१)। वह परमेश्वर की दृष्टि में सबसे बड़ा मूर्ख है। क्योंकि उस ने अपने प्राण से भी अधिक अपने धन-सम्पत्ति को

महत्त्व दिया। उसने कहा, मुझे इस बात की कोई चिन्ता नहीं, कि मेरी आत्मा हमेशा के लिये नरक की उस आग में डाली जाए जहां सदा का रोना और दांतों का पीसना है, परन्तु अभी तो मुझे ढेर सारा धन मिल ही गया है, सो मौज मार।

अनेकों लोग अपने धन से इतना अधिक प्रेम करते हैं कि उसे अपने पास समेटकर रखने के लिये वे बड़े से बड़ा बलिदान भी करने के लिये तैयार हो जाते हैं, और यहां तक कि उसे खोने के विपरीत वे अपनी आत्मा को बेचने से भी नहीं झिझकते। नए नियम में हम एक और धनी मनुष्य के बारे में पढ़ते हैं। यह मनुष्य बड़ा ही धनी था, परन्तु उसके मन में मुक्ति पाने की इच्छा थीं, वह पाप से छूटकर अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहता था। सो हम पढ़ते हैं, कि एक दिन वह प्रभु यीशु के पास आया। और उस ने प्रभु से पूछा, कि प्रभु अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं? प्रभु जानता था कि सांसारिक दृष्टिकोण से वह एक अच्छा मनुष्य है, परन्तु उस ने देखा कि उसके मन का झुकाव सबसे अधिक धन की ओर है। सो प्रभु ने उस से कहा, कि तू अवश्य ही अनन्त जीवन का अधिकारी हो सकता है, परन्तु तुझ में एक बात की घटी है, एक काम कर, जा, और जो कुछ तेरा है, उसे बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले। परन्तु लिखा है, यह सुनकर, "इस बात से उसके चिहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।" (मरकुस १० : १७ - २२)। जी हां, वह अपनी आत्मा की क़ीमत सुनकर चला गया, वह दाम उसे बड़ा भारी लगा। सो उसने अपने धन को समेटा, और अपनी आत्मा को सस्ते मूल्य पर बेचकर वह चला गया।

बहुतेरे लोग, इसी प्रकार से, अपनी आत्मा को बेच रहे हैं, क्योंकि उसे बचाने के लिये वे कुछ भी खोना नहीं चाहते। प्रभु यीशु ने

कहा, "यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो पाँव रहते हुए नरक में डाला जाए। और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल, काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो आंख रहते हुए तू नरक में डाला जाए।" (मरकुस ९ : ४५-४७)।

मित्रो, आज मैं आप से पूछता हूं, कि वह कौन सी ऐसी वस्तु है जिसके कारण आप नरक में डाले जाएंगे ? मैं आप से निवेदन करके कहता हूं, कि आप आज अपने मनों को टटोलें, और देखें, कि वह कौन सी ऐसी वस्तु है जिसके कारण स्वर्ग के द्वार आपके लिये सदा बन्द रहेंगें। क्या आप सुन रहे हैं ? क्या वह वस्तु धन है? क्या वह आपका बड़ा ओहदा या पदवी है ? क्या वह वस्तु आपका स्वार्थ है ? क्या वह वस्तु पाप है ? क्या वह आपका परिवार है ? क्या वह आपका धर्म या समाज है ? सोचिए, सोचिए; विचार कीजिए। क्या वस्तु है वह ? क्योंकि उन वस्तुओं के बिना परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना आपके लिये इस से भला है, कि उनके होते हुए आप नरक में डाले जाएं।

बहुतेरे लोग अपने मन में पूर्वद्वेष के कारण अपनी आत्माओं को बेच रहे हैं। वे कहते हैं, हमारा तो वही विश्वास है, हमारे बाप-दादे इसी पर चलते आए हैं, हम तो इसे नहीं छोड़ेंगे, हम नहीं बदलेंगे, चाहे जो कुछ भी हो। परन्तु वास्तव में वे अपनी आत्माओं को अपने मन की कठोरता, पूर्व-निश्चय, और ढिठाई के कारण बेच रहे हैं। वे पूर्व-युग के उन यहूदियों की तरह हैं, जो सुनते हुए भी नहीं सुनते थे, और देखते हुए भी नहीं देखते थे।

परन्तु, आप किस मूल्य पर बेच रहे हैं ? जी हां, आप अपनी आत्मा किस मूल्य पर बेच रहे हैं ?

क्या आप अपनी आत्मा को संसार में बिकने से बचाना चाहते हैं ? तो यीशु मसीह के पास आईए, अपनी आत्मा को पूर्ण रूप से उसके हाथों में दे दीजिए । वह आप को यह कहकर बुला रहा है, "हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा । मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे । क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है ।" (मत्ती ११ : २८-३०) ।

मित्रो, प्रभु यीशु आपकी आत्मा को बचाना चाहता है । वह आपके पापों के बोझ को अपने ऊपर उठाना चाहता है, ताकि आप विश्राम पाएं । उसकी यह प्रतिज्ञा है, कि संसार में जो कोई भी उस पर पूरे मन से विश्वास करेगा, और अपने पापों से मन फिराएगा, और अपने पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा लेगा, प्रभु उस मनुष्य का उद्धार करेगा । आज आपके लिये यह एक बड़ा ही अच्छा अवसर है, कि आप इस बात का निश्चय करें, कि क्या आप अपनी आत्मा को बचाना चाहते हैं या बेचना चाहते हैं ? यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न हर एक मनुष्य के लिये एक व्यक्तिगत प्रश्न है । कोई और मनुष्य आपके लिये इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता, क्योंकि आप स्वयं अपनी आत्मा के ज़िम्मेदार हैं ।

११

प्रार्थना कैसे करें

मसीही जीवन में प्रार्थना का एक विशेष स्थान है। जब एक व्यक्ति यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनकर उस पर विश्वास करता है, और उसकी आज्ञानुसार अपना मन फिराकर, उसके नाम से, अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेता है, तो उसका मेल यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ हो जाता है। यीशु मसीह की आज्ञा का पालन करने के द्वारा उस मनुष्य का नया जन्म होता है, और वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है। (यूहन्ना ३ : ३, ५)। प्रेरित पौलुस इस बात को यूं कहकर समझाता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २६, २७)।

सो, जब एक मनुष्य मसीह में होने के कारण परमेश्वर की सन्तान बन जाता है, तो उसे यह अधिकार प्राप्त होता है कि वह परमेश्वर से बातें कर सकता है। वह उसके सामने अपनी आवश्यकताओं को रख सकता है, और अपनी कठिनाईयों को हल करने में उस से सहायता ले सकता है। एक मसीही होने के कारण, मनुष्य के पास यह एक विशेष अधिकार होता है, कि वह किसी भी समय परमेश्वर से प्रार्थना कर सकता है। किन्तु बहुतेरे लोग प्रार्थना के महत्त्व से अनजान हैं। वे जानते नहीं कि उन्हें किस प्रकार से प्रार्थना करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कुछ लोग प्रार्थना करते हैं, परन्तु जो मांगने का तरीका है, वे उस तरह से नहीं माँगते।

नए नियम में, हम प्रभु यीशु के जीवन के बारे में अनेकों बातों को पढ़ते हैं। और उन में से एक विशेष बात जो उसके जीवन में थी, वह थी प्रार्थना। वह सदा प्रार्थना करता था। और उसने अपने चेलों को भी यही सिखाया कि वे प्रतिदिन प्रार्थना में लगे रहें।

लूका १८ अध्याय में हम यीशु के बारे में पढ़ते हैं कि "उस ने इस के विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए, उन से यह दृष्टान्त कहा। कि किसी नगर में एक न्यायी रहता था; जो न परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था। और उसी नगर में एक विधवा भी रहती थी: जो उसके पास आ-आकर कहा करती थी, कि मेरा न्याय चुकाकर मुझे मुद्दई से बचा। उस ने कितने समय तक तो न माना परन्तु अन्त में मन में विचारकर कहा, यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता, और न मनुष्यों की कुछ परवाह करता हूं। तौभी यह विधवा मुझे सताती रहती है, इसलिये मैं उसका न्याय चुकाऊंगा। कहीं ऐसा न हो कि घड़ी-घड़ी आकर अन्त को मेरा नाक में दम करे। प्रभु ने कहा, सुनो, कि यह अधर्मी न्यायी क्या कहता है? सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात दिन उसकी दुहाई देते रहते हैं; और क्या वह उनके विषय में देर करेगा? मैं तुम से कहता हूं" प्रभु ने कहा, "वह तुरन्त उनका न्याय चुकाएगा; तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?" यहाँ प्रभु अपने अनुयायियों को यह सिखाना चाहता था, कि जब कि वह अधर्मी न्यायी उस विधवा का न्याय चुकाने से न रुका, तो हमारा धर्मी वा प्रेमी परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर क्यों न देगा। परन्तु तौभी, जब प्रभु वापस आएगा तो क्या वह अपने लोगों के भीतर धर्मी परमेश्वर में इस प्रकार का दृढ़ विश्वास पाएगा जैसा विश्वास उस विधवा का उस अधर्मी न्यायी में था?

परमेश्वर के सन्तान होने के कारण, उस पर हमारा पूर्ण विश्वास होना चाहिए। और हमें उस से प्रार्थना करना नहीं छोड़ना चाहिए। प्रार्थना का अभिप्राय केवल शब्दों से नहीं है। अनेकों लोग प्रार्थना

करते हुए डरते हैं, घबराते हैं, क्योंकि वे सोचते हैं कि वे प्रार्थना में अच्छे-अच्छे ऊंचे शब्दों का उपयोग नहीं कर सकते। उनका ध्यान विशेष रूप से प्रार्थना की ओर नहीं परन्तु शब्दों की ओर रहता है। अकसर देखा जाता है, कि कुछ लोग प्रार्थना करने के लिये अन्य मनुष्यों की लिखी हुई पुस्तकों की सहायता लेते हैं। वे किसी और मनुष्य की प्रार्थना को पढ़कर प्रार्थना करना चाहते हैं। परन्तु परमेश्वर इस प्रकार की प्रार्थनाओं को स्वीकार नहीं करता। प्रार्थना का अर्थ है, कि प्रार्थना करनेवाला व्यक्ति अपने मन से अपनी आवश्यकताओं वा अपनी कठिनाईयों को परमेश्वर के सम्मुख रखे। इसके लिये बड़े-बड़े ऊंचे शब्दों की आवश्यकता नहीं है। प्रार्थना करने के लिये मुझे पुस्तकों और शब्दकोषों की आवश्यकता नहीं है। यदि मैं परमेश्वर की संतान हूं तो मैं जानता हूं कि परमेश्वर मेरी बातों को समझने की सामर्थ रखता है। जब हमारे नन्हे-मुन्हे बालक हम से तोतली भाषा में कुछ मांगते हैं, तो हम जानते हैं कि वे क्या मांग रहे हैं, तो क्या महान् परमेश्वर अपने बालकों की टूटी-फूटी भाषा नहीं समझ सकता ?

किन्तु दूसरी ओर, कोई मनुष्य मुंह और होठों से तो परमेश्वर से प्रार्थना कर सकता है, परन्तु उसी समय उसका मन कहीं और हो सकता है। परमेश्वर इस प्रकार की प्रार्थना को कभी स्वीकार नहीं करता। वह चाहता है कि उसके लोग देह और आत्मा दोनों में उसके पास आएं। जो इस तरह से प्रार्थना करते हैं, उनके बारे में प्रभु ने कहा, "कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है।" (मत्ती १५ : ८)। प्रार्थना के बारे में कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना बड़ा ही आवश्यक है।

सबसे पहले, मनुष्य के भीतर प्रार्थना करने की इच्छा होनी चाहिये। कोई भी मनुष्य वास्तव में उचित रूप से तब तक प्रार्थना नहीं कर सकता जब तक कि उसके हृदय में प्रार्थना करने की इच्छा न हो। जब किसी व्यक्ति को खाने की भूख वा इच्छा होती है, तो वह

उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करता है; उसे खाने में आनन्द आता है; वह उसे खाकर तृप्त होता है; और उसके लिये धन्यवादी होता है। इसी तरह से यदि मनुष्य के भीतर प्रार्थना करने की भूख वा इच्छा हो, तो वह प्रार्थना करने के लिये बेचैन हो जाएगा; उसे प्रार्थना करने में आनन्द आएगा; और वह अपनी आत्मा में संतोष का अनुभव करेगा; और वह परमेश्वर का इस बात के लिये धन्यवाद करेगा, कि उसके पास यह अधिकार है कि वह प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर से बातें कर सकता है।

फिर, प्रार्थना के बारे में दूसरी आवश्यक बात यह है, कि हमारी प्रार्थना पूर्ण विश्वास के साथ होनी चाहिए, प्रार्थना करते हुए हमें कोई संदेह नहीं करना चाहिए, परन्तु परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखना चाहिए। पवित्र बाइबल का एक लेखक कहता है, कि जब हम में से कोई परमेश्वर से मांगे तो "विश्वास से मांगे, और कुछ संदेह न करे; क्योंकि संदेह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। ऐसा मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा। वह व्यक्ति दुचित्ता है, और अपनी सारी बातों में चंचल है।" (याकूब १ : ६-८)। सो इसलिये यदि कोई मनुष्य संदेह के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करता है, तो वह दुचित्ता है; उसके दो मन हैं; उसकी प्रार्थना में दृढ़ विश्वास वा भरोसा नहीं है। उसकी प्रार्थना समुद्र की उन लहरों की तरह है जो हवा से उठती और शीघ्र ही मिट जाती हैं।

यह ठीक है कि परमेश्वर अपने लोगों की हरएक प्रार्थना का उत्तर उनकी इच्छानुसार नहीं देता। परन्तु इस में कोई संदेह नहीं कि वह अपने लोगों की प्रत्येक प्रार्थना का उत्तर देता है। कभी-कभी उसका उत्तर "नहीं" हो सकता है, कभी उसका उत्तर यह भी हो सकता है कि हम प्रतीक्षा करें, और कभी उसका उत्तर "हां" हो सकता है। किन्तु, हमें उसके न्याय वा इच्छा को स्वीकार करना चाहिए। हमें उस से

पूरे विश्वास और भरोसे से मांगना चाहिए, यह समझते हुए, कि वह हमारी प्रार्थना का उत्तर अवश्य देगा। परन्तु वह क्या उत्तर देगा, यह हमें पूर्ण रूप से परमेश्वर पर ही छोड़ देना चाहिए। और जो भी उत्तर वह दे, चाहे वह हमारी इच्छा के विपरीत हो, हमें उसे स्वीकार करना चाहिए। हमें जानना चाहिए कि वह सर्वज्ञानी परमप्रधान परमेश्वर है, और हम उसके संतान है, वह हम से बहुत अधिक ज्ञान रखता है, और वह बहुत अच्छी तरह से जानता है कि कौन सी वस्तु हमारे लाभ की है और कौन सी वस्तु हमारे लिये हानिकारक है। मान लीजिए, एक छोटा बालक अपने पिता के हाथ में छुरी या एक भरी हुई पिस्तौल देखकर उसे लेने की ज़िद करने लगे, पिता जानता है कि वह वस्तु उसके लिये हानिकारक है सो वह उसको नहीं देता। परन्तु वह छोटा बालक इस बात को नहीं समझता, वह कदाचित् उस से खेलना चाहता हो, और शायद वह अपने पिता से नाराज़ भी हो जाए, परन्तु पिता तौभी उसके हाथ में वह वस्तु नहीं देगा; क्योंकि वह उस से प्रेम करता है।

इसलिये, जब हम उससे प्रार्थना करें तो हमें चाहिए कि हम उसकी इच्छा के अनुसार उस से मांगे। प्रेरित यूहन्ना कहता है, "और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार उस से कुछ माँगते हैं, तो वह हमारी सुनता है।" (१ यूहन्ना ५ : १४)। इसका अर्थ यह है, कि हम परमेश्वर से अपनी प्रार्थना का उत्तर अपनी इच्छानुसार न मांगे, परन्तु परमेश्वर की इच्छानुसार माँगे। हमें अपने उद्धारकर्त्ता, प्रभु यीशु मसीह, की तरह प्रार्थना करनी चाहिए। उस ने कहा, "कि हे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।" यहां हम देखते हैं, कि यीशु के सामने निरादर और शर्म से भरा एक कटोरा था जिसे वह शीघ्र ही पीने जा रहा था। वह अपने मन में उन दुखों के

कारण व्याकुल नहीं था जो उस पर आनेवाले थे; न ही वह उस बलिदान के कारण उदास था जो उसे संसार के सब लोगों के पापों के कारण क्रूस के ऊपर देना था। परन्तु संसार के हरएक मनुष्य के पापों का वह बड़ा बोझ जो उसके ऊपर आनेवाला था; जिसके कारण परमेश्वर की ओर से दोषी ठहराया जाकर, प्रत्येक मनुष्य के लिये उसे नरक का स्वाद चखना था, और इसलिये उसका सम्बन्ध अपने पवित्र पिता से टूटनेवाला था, यह बात उसके लिये असहनीय थी। सो उस ने व्याकुल होकर पिता से प्रार्थना की, कि "अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले : तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो।" (लूका १४ : ३६)।

यही हमारी प्रार्थना होनी चाहिए। जब हमारे सामने कोई संकट हो; जब हमारे सामने कोई परीक्षा हो; जब हमें किसी वस्तु की आवश्यकता हो, तो परमेश्वर से हमारी यही बिनती होनी चाहिए, कि तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो। मेरी नहीं, परन्तु तेरी इच्छा पूर्ण हो। इसके बाद हम कहीं नहीं पढ़ते, कि यीशु ने इस बारे में दोबारा पिता से प्रार्थना की हो; क्योंकि वह जानता था कि पिता ने उसकी सुन ली है, और वह अवश्य ही उसकी प्रार्थना का उचित उत्तर देगा। इसलिये, जब उसके शत्रु उसे घूंसे और थप्पड़ मार रहे थे, जब वे उसे क्रूस पर लिटाकर उसके हाथों और पैरों में कीलें ठोक रहे थे, और जब उन्हों ने उसकी अधमरी देह को सूली पर लटकाकर पृथ्वी और आकाश के बीच में उसे मरने के लिये छोड़ दिया; तो वह उनके लिये यह कहकर प्रार्थना कर रहा था कि "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।" (लूका २३ : ३४)। जी हां, वे नहीं जानते थे कि वे क्या कर रहे हैं, परन्तु यीशु जानता था कि वे परमेश्वर पिता की इच्छा पूर्ण कर रहे थे। क्योंकि परमेश्वर की यही इच्छा थी, कि वह हमारे पापों

के कारण दन्डित किया जाए, ताकि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। (२ कुरिन्थियों ५ : २१)।

प्रभु यीशु की प्रार्थना से न केवल हम परमेश्वर की इच्छानुसार मांगना ही सीखते हैं, परन्तु हम यह भी सीखते हैं कि हम अपने शत्रुओं और विरोधियों के लिये प्रार्थना करें; और उन्हें क्षमा करें जो हमारे विरोध में कुछ करते हैं। जब वह इस पृथ्वी पर था, तो उसने अपने चेलों को प्रार्थना करने का ढंग सिखाकर उन से कहा, कि तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो, कि परमेश्वर "जिस प्रकार से हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।" और उस ने कहा, "इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।" (मत्ती ६ : १२, १४-१५)।

और फिर, उस ने एक उदाहरण देकर कहा, कि एक दास था जिस ने अपने स्वामी के दस हज़ार रुपये देने थे। एक दिन उस स्वामी ने अपने दास से रुपयों की माँग की। परन्तु जब कर्ज़ चुकाने को उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने आदेश देकर कहा, कि उसका सम्पूर्ण परिवार और सब कुछ बेचा जाए और उस से कर्ज़ भरा जाए। परन्तु वह दास अपने स्वामी के पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाकर रोने लगा, और उस से दया की भीख मांगने लगा। इस पर उसके स्वामी ने उस पर तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका सारा कर्ज़ क्षमा कर दिया। परन्तु जब वह दास बाहर निकला तो उसकी दृष्टि अपने एक संगी दास पर पड़ी, जिस ने उसके सौ रुपए देने थे। उस ने उसे पकड़कर कहा कि मेरे सौ रुपए दे। जब उसके साथी ने सौ रुपए लौटाने में अपनी असमर्थता दिखाई तो उसने उसका गला घोटा वा उसे मारा। इस पर उस ने उस से बिनती करके कहा, कि धीरज धर मैं तेरा सारा कर्ज़ चुका दूंगा। परन्तु वह दास न माना

और उस ने पीटकर उसे एक कोठरी में बन्द कर दिया। वहाँ उस स्वामी के और भी बहुत से दास थे जो यह सब देखकर बड़े ही उदास हुए और उन्हों ने अपने स्वामी को इस घटना का पूरा हाल सुना दिया। वह स्वामी इस बात को सुनकर बड़ा क्रोधित हुआ। तब उस ने उस दास को बुलाकर उस से कहा, कि तू ने जो मुझ से बिनती की, तो मैंने तो तेरा इतना बड़ा कर्ज़ पूरा क्षमा कर दिया। सो जैसे मैंने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करनी नहीं चाहिए थी ? और इसलिये, उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दन्ड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया। (मत्ती १८ : ३२-३४)।

यह दृष्टान्त कहकर, प्रभु यीशु ने आगे कहा, कि "इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।" (मत्ती १८:३५)। इसलिये, यदि हम परमेश्वर से अपने अपराधों की क्षमा की आशा रखते हैं, तो हमें भी अन्य लोगों के अपराधों को क्षमा करना चाहिए। और यदि हम ऐसा नहीं करते तो हम किस प्रकार से यह आशा रख सकते हैं, कि परमेश्वर हमारे अपराधों को क्षमा करेगा ?

नम्रता प्रार्थना में एक और आवश्यक वस्तु है। बहुतेरे लोग केवल इसीलिये प्रार्थना करते हैं कि वे परमेश्वर को बताएं कि वे कितने अच्छे और ईश्वर-भक्त हैं। दूसरे शब्दों में, वे अपने आप को परमेश्वर के निकट धर्मी ठहराने का प्रयत्न करते हैं। और इसके विपरीत, कि वे अपनी गलतियों और बुराइयों के लिये परमेश्वर से क्षमा माँगें, वे उसके निकट अपने भले कामों की प्रशंसा करते हैं। इस बात को जिस सुंदर ढंग से प्रभु यीशु ने बताया वह ध्यान देने योग्य है, उस ने कहा, "कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फ़रीसी था और दूसरा चुंगी लेनेवाला। फ़रीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं

और मनुष्यों की नाईं अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगीलेनेवाले के समान हूं। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं। परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर से खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा, वरन अपनी छाती पीट-पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर।" और प्रभु यीशु ने कहा, मैं तुम से कहता हूं, वह दूसरा नहीं; परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।" (लूका १८ : ६-१४)।

मित्रो, मनुष्य के पास यह एक बहुत बड़ा अधिकार है, कि वह अपने सृष्टिकृता से बातें कर सकता है। जिस प्रकार से परमेश्वर अपने पवित्र वचन बाइबल के द्वारा हम से बातें करता है, उसी तरह से हम भी प्रार्थना के द्वारा उस से बातें कर सकते हैं। क्या आपके पास यह विशेष अधिकार है? क्या आप परमेश्वर के संतान हैं? पवित्र बाइबल कहती है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २६, २७)।

१२

आप क्या चुनेंगे ?

परमेश्वर ने संसार में मनुष्य को अनेकों आशीषें दी हैं, और इनमें से बहुतेरी आशीषें ऐसी हैं जिन्हें उसने सब मनुष्यों को सामान्य रूप से दी हैं। अर्थात्, चाहे कोई मनुष्य परमेश्वर को मानता हो या नहीं, चाहे कोई उसकी आज्ञाओं का पालन करता हो या नहीं, परन्तु तौभी वह इन आशीषों में सहभागी है। उदाहरणार्थ, परमेश्वर ने सब मनुष्यों को शारीरिक रूप से आवश्यक अंग दिये हैं ; उसने मनुष्य के लिये सब प्रकार की खाने-पीने की वस्तुएं दी हैं ; हर एक मनुष्य परमेश्वर के बनाए हुए सूरज, चांद व सितारों के प्रकाश में चलता है। परमेश्वर सबके ऊपर वर्षा भेजता है। दिन भर के परिश्रम से थकने के बाद हम उसकी बनाई हुई रात में आराम करते हैं। इसी प्रकार की अनेकों और-और आशीषों का वर्णन भी किया जा सकता है, जिन्हें परमेश्वर ने सब मनुष्यों को समान रूप से दिया है।

परन्तु आज हम एक बहुत बड़ी आशीष के बारे में देखेंगे जिस से परमेश्वर ने हर एक मनुष्य को आशीषित किया है। और वह आशीष है, निश्चय करने की, चुनने की। परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को चुनने की शक्ति दी है, वह चुन सकता है, निश्चय कर सकता है। वह चुन सकता है, कि उसे किस मार्ग पर चलना है। कौन सी बात उसकी भलाई के लिये है, और कौन सी बात उसकी बुराई के लिये है। परमेश्वर ने मनुष्य को बिजली से चलनेवाले पंखे की तरह नहीं बनाया है, जिसे जब चाहो बटन दबाकर चला लो और जब चाहो बन्द कर

दो। परन्तु उसने मनुष्य के भीतर निश्चय करने की शक्ति दी है। और हर एक मनुष्य अपनी इच्छा अनुसार अपने जीवन को बनाने के लिये चुन सकता है, निश्चय कर सकता है। परन्तु निश्चय दो तरह के हो सकते हैं, एक निश्चय अच्छा हो सकता है, और एक निश्चय बुरा हो सकता है। पवित्र बाइबल में हमें ऐसे बहुतेरे लोगों के बारे में मिलता है जिनके सामने जब निश्चय करने का समय आया, तो उनमें से कुछ ने अच्छे निश्चय किए और कुछ ने बुरे। उन लोगों ने जो कुछ भी चुना, उनके निश्चय आज हमारे लिये बड़े ही शिक्षाप्रद हैं।

इस विषय में, पहिला उदाहरण जो हम देखते हैं, वह है पृथ्वी पर सबसे पहिले मनुष्यों का। आदम और हव्वा, जिन्हें परमेश्वर ने बनाकर एक सुन्दर बाटिका में रखा। परमेश्वर ने उन्हें सब वस्तुओं पर अधिकार दिया। किन्तु, वाटिका में लगे एक वृक्ष के फल को खाने को परमेश्वर ने उन्हें मना किया था, और उन्हें कड़ी चेतावनी देकर कहा था, कि जिस दिन वे उसे खाएंगे उस दिन वे अवश्य ही मर जाएंगे। परन्तु कुछ समय बाद, जब मनुष्य के भीतर शरीर की अभिलाषा, और आंखो की अभिलाषा, और जीविका का घमन्ड जागृत हुआ, तो मनुष्य ने पहिली बार परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ने का निश्चय किया। लिखा है, "सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया ; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।" (उत्पत्ति ३:६)। और, तब हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया। उसने उन्हें अपनी उपस्थिति में से निकाल दिया, ताकि वे उस से अलग होकर कड़े परिश्रम और दुखों से भरा जीवन व्यतीत करें, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएं। (उत्पत्ति ३:१६-१९)। वास्तव में यह निश्चय बड़ा ही भयंकर निश्चय था। यदि वे इ सबात को चुन लेते, कि वे कभी भी परमेश्वर की आज्ञा को नहीं तोड़ेंगे, तो यह निश्चय बड़ा ही अच्छा निश्चय होता। वे सदा

परमेश्वर की उपस्थिति में रहते, और उन्हें कभी भी दुखों वा पीड़ाओं का सामना नहीं करना पड़ता।

इस घटना के सैकड़ों वर्ष बाद, जब मनुष्यों में पाप की बहुतायत के कारण, परमेश्वर ने यह घोषणा करके कहा, कि वह एक बहुत भयानक जल-प्रलय भेजकर पृथ्वी पर से सब मनुष्यों को नाश करेगा। तो नूह नाम के एक धर्मी व्यक्ति ने सब लोगों के बीच में परमेश्वर की मनसा का प्रचार किया। परन्तु बाइबल बताती है, कि उनमें से एक ने भी अपना मन नहीं फिराया। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानने के विपरीत अपने पापों के भीतर रहना चुन लिया। परन्तु नूह ने परमेश्वर की आज्ञा मानने का निश्चय किया। सो हम देखते हैं कि जबकि परमेश्वर ने नूह और उसके घराने की रक्षा की और उन्हें बचाया, बाकी सारे लोग उस जल प्रलय के द्वारा नाश हुए। यहां हम दो प्रकार के निश्चय देखते हैं; एक तो अच्छा निश्चय, जिसे नूह और उसके घराने ने किया, और एक बुरा निश्चय जो अन्य लोगों ने किया। (उत्पत्ति ६, ७; १ पतरस ३:२०)।

सैंकड़ों वर्ष पूर्व, परमेश्वर के भक्त यहोशू ने सारे इस्राएलियों को ललकार कर कहा कि, "आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देशमें तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूंगा।" (यहोशू २४: १५)। जबकि सारे इस्राएलियों के सामने एक बहुत बड़ा निश्चय था, यहोशू ने एक बड़ी ही उत्तम बात चुन ली, उसने परम-प्रधान यहोवा परमेश्वर की सेवा करना चुन लिया।

बाइबल में हम एक और व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं जिसने केवल यहोवा परमेश्वर की ही उपासना करने को चुन लिया। जबकि वहाँ

के राजा ने एक कड़ी आज्ञा निकलवाई, कि यदि कोई भी मनुष्य तीस दिन तक राजा को छोड़ किसी और की उपासना करेगा तो वह शेरों की मांद में डाला जाएगा। दानिय्येल नाम का वह व्यक्ति तौभी परमप्रधान परमेश्वर की उपासना में नित्य लगा रहा। हम पढ़ते हैं, कि राजा की आज्ञा के विरोध में दानिय्येल को पकड़कर शेरों की मांद में डाल दिया गया। परन्तु दानिय्येल ने जिस जीवते परमेश्वर की उपासना करने को चुना था वही राजा और उन शेरों का बनानेवाला था। उसने उन शेरों को दानिय्येल के सामने चुहों के समान कर दिया, और वे उसे कुछ हानि न पहुंचा सके। (दानिय्येल ६:६-२४)। वास्तव में, दानिय्येल का निश्चय बड़ा उत्तम था।

फिर, अच्छा निश्चय करनेवाले मूसा नाम के एक और व्यक्ति के बारे में हम यूं पढ़ते हैं, लिखा है, "मूसा ने सयाना होकर फ़िरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा। और मसीह के कारण निन्दित होने को मिसर के भन्डार से बड़ा धन समझा : क्योंकि उसकी आंखे फल पाने की ओर लगी थीं।" (इब्रानियों ११:२४-२६)। मूसा के पास यह सुअवसर था, कि वह मिसर के राजा की बेटी का पुत्र कहलाए, मिसर के राज-महल में रहे, और आनन्द वा सुख भोगे। परन्तु मूसा ने थोड़े दिन के सुख भोगने के विपरीत परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना चुन लिया।

नए नियम में हम प्रभु यीशु के प्रेरितों के बारे में पढ़ते हैं। सबसे पहिले हम यहूदा के बारे में पढ़ते हैं, जिसने चान्दी के तीस सिक्कों के लोभ में आकर अपने प्रभु को घात होने के लिये पकड़वा दिया। परन्तु यहूदा का यह निश्चय अच्छा नहीं था, उसका निश्चय बुरा था। सो हम देखते हैं, कि उसके विवेक ने उसे दोषी ठहराया, और उसने स्वीकार किया कि मैंने एक निर्दोष व्यक्ति को घात के लिये पकड़वाकर पाप किया है; और वह स्वयं फांसी लगाकर मर गया। (मत्ती २७:१-५)।

फिर हम यीशु के अन्य प्रेरितों के बारे में पढ़ते हैं, कि वे उसके जी उठने और स्वर्गारोहण के बाद उसका प्रचारक निडर होकर सब लोगों के बीच में करने लगे। और एक जगह लिखा है, कि जब महासभा के अगुवों और महायाजक ने उन्हें यीशु के नाम से कुछ भी करने या कहने को सख्त मना किया, तो उन्होंने उन्हें उत्तर देकर कहा, "कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर, परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है।" (प्रेरितों ५:२९)। वास्तव में उनका यह निश्चय बड़ा ही अच्छा निश्चय था। और उनका यह निश्चय इतना पक्का था, कि लगभग सभी प्रेरितों ने अपने इस निश्चय के कारण अनेकों यातनाएं उठाईं, और अपने प्राणों को भी दे दिया। वे मनुष्यों की नहीं, परन्तु परमेश्वर की मानते थे ; वे मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से डरते थे, क्योंकि प्रभु यीशु ने उन्हें सिखाया था कि, "जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना ; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है। (मत्ती १०:२८)। सो प्रेरितों ने जिस वस्तु को चुन लिया, वह वास्तव में बड़ी उत्तम थी।

किन्तु, आज हमारे सामने भी कुछ निश्चय हैं, जिन्हें हमें अवश्य ही करना है। हमारे सामने भी आज कुछ वस्तुएं हैं, जिनमें से हमें अवश्य ही चुनना है।

आप यीशु मसीह के बारे में क्या सोचते हैं ? उसके बारे में आपका क्या विचार है ? आपकी दृष्टि में क्या वह एक शिक्षक या नबी ही था, या आप उसे परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करते हैं ? आज संसार में बहुतेरे लोग यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, परन्तु कुछ लोग उसे परमेश्वर का पुत्र स्वीकार नहीं करते। यह प्रश्न बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है, कि आप यीशु के बारे क्या कहते हैं ? नए नियम में हम पढ़ते हैं, कि एक बार जब प्रभु यीशु ने अपने चेलों से यही प्रश्न पूछा, कि लोगों का उसके बारे में क्या विचार है ? तो उन्होंने कहा, कि कुछ लोग तो कहते हैं, कि तू एलिय्याह या यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता है, और कुछ का

विचार है, कि तू बहुतेरे नबियों में से कोई एक नबी है। परन्तु तब यीशु ने अपने चेलों से पूछा, कि तुम मुझे क्या कहते हो? तो लिखा है, कि उन्होंने उत्तर देकर कहा, "कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" आप उसे क्या कहते हैं?

क्या आप यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करते हैं, या उसका इन्कार करते हैं? यदि आप उसकी बातों को नहीं मानते, उसकी आज्ञाओं पर नहीं चलते, तो आप उसका इन्कार करते हैं, उसे तुच्छ जानते हैं। और उसने कहा कि "जो मुझे तुच्छ जानता है, और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात् जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।" (यूहन्ना १२:४८)। आज आपके सामने एक निश्चय है, आप क्या चुनेंगे? क्या आप उसे परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करेंगे या उसका इन्कार करेंगे?

और यदि आप उसे परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करते हैं, तो क्या आप अन्त तक उसके पीछे चलेंगे? यह प्रश्न बहुत बड़ा है? जिस प्रकार से कि यह आवश्यक है कि हर एक मनुष्य परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिये यीशु मसीह को स्वीकार करे, उतना ही यह भी आवश्यक है कि हर एक मनुष्य अंत तक उसके पीछे चले। यीशु ने कहा, "द्वार मैं हूं" (यूहन्ना १०:९), और उसने यह भी कहा कि, "मार्ग मैं हूँ" (यूहन्ना १४:६)। भीतर प्रवेश पाने के लिये जितना आवश्यक यह है, कि मनुष्य द्वार तक आए, द्वार से चलकर भीतर जाना भी उतना ही आवश्यक है। परन्तु बहुतेरे लोग यीशु को स्वीकार करके द्वार तक ही रह जाते हैं, और इस प्रकार के लोग अकसर द्वार से ही वापस लौट जाते हैं, क्योंकि वे प्रभु के मार्ग को अपनी कल्पनाओं के अनुसार नहीं पाते। द्वार के पास आने से पहिले, उनके विचार में प्रभु का मार्ग एक सरल मार्ग था, जिस पर मानों फूल ही फूल बिछे दिखाई पड़ते हों। परन्तु द्वार के पास आकर जब वे भीतर झाँककर देखते हैं, तो उन्हें

प्रभु का मार्ग बड़ा ही कठिन प्रतीत होता है, जिस पर कांटे बिछे हैं। सो वे लौट जाते हैं। वे सकरे मार्ग को चुनने के विपरीत संसार के उस चौड़े मार्ग को चुन लेते हैं, जिसका अन्त विनाश है। परन्तु प्रभु यीशु ने कहा, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है ; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते है।" (मत्ती ७ : १३,१४)।

यह आवश्यक है कि आज आप इस बात का निश्चय करें कि आप किस की सेवा करेंगे। पवित्र शास्त्र कहता है कि "आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे।" (यहोशु २४:१५)। प्रभु यीशु ने कहा, "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता,-वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा ; तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।" प्रेरित पौलुस मसीही लोगों को लिखकर कहता है, कि "क्या तुम नहीं जानते, कि जिसकी आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आपको दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो : और जिसकी मानते हो, चाहे पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है? परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।" (रोमियों ६:१६-१८) यहां उसके कहने का अभिप्राय यह है, कि वे लोग मसीही बनने से पहिले पाप की सेवा करते थे और वे इसलिये पाप या शैतान के दास थे, परन्तु अब, जब उन्होंने यीशु मसीह में विश्वास किया और पापों से मन फिराकर उसके नाम से अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया, तो वे धार्मिकता के दास बन गए, अब वे मसीह के सेवक बन गए। (रोमियों ६:१-६)। कोई भी मनुष्य पूर्णरूप से दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। वह या तो शैतान की सेवा

कर सकता है या परमेश्वर की। आप किसकी सेवा करते हैं ? आप किस के दास हैं ? इसलिये, "आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे।"

प्रभु यीशु ने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा" प्रभु ने कहा, "वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६:१६)। यहां हम देखते हैं, कि जबकि उद्धार पाने के लिये मनुष्य को उसमें विश्वास करना और बपतिस्मा लेना चाहिए, परन्तु दोषी ठहराये जाने के लिए केवल विश्वास न करना ही बहुत है। आप क्या चुनेंगे ?

क्या आप जानते हैं, कि भविष्य में एक दिन आ रहा है, जब आपकी आत्मा शरीर को छोड़कर अपने हमेशा के घर को चली जाएगी ? परमेश्वर का वचन बड़ी स्पष्टता से बताता है, कि केवल दो ही स्थान हैं जिनमें से एक में हर एक मनुष्य की आत्मा का अनन्त निवास होगा—या तो स्वर्ग में, जहां परमेश्वर और उसकी महिमा होगी, या नरक में, जहां विनाश और सदाकाल का रोना वा दांतों का पीसना होगा। पवित्र बाइबल कहती है, "उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहिचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे।" (२ थिस्सलुनीकियों १:७-९)।

प्रभु यीशु ने अधर्मी लोगों के बारे में बोलकर कहा, "और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती २५: ४६)। आपका निश्चय क्या है ? आपको चाहिये कि आप आज उस स्थान को चुन लें, जहां आप अनन्त काल तक रहेंगे। शायद आज के बाद यह सुनहरा अवसर आपको फिर प्राप्त न हो।

१३

क्रोधित, शोकित, या आनन्दित ?

मैं परमेश्वर पिता का धन्यवाद करता हूं, कि उसने हमें एक बार फिर से यह सुअवसर प्रदान किया है कि हम अपना ध्यान गम्भीरता पूर्वक उसके मधुर वचन की ओर लगाएं। परमेश्वर का वचन वास्तव में सामर्थपूर्ण है। आज से लगभग दो वर्ष पूर्व "सत्य-सुसमाचार" के इस कार्यक्रम का आरम्भ हुआ था। और इन दो वर्षों के भीतर हमारे सुननेवाले हज़ारों श्रोताओं ने हमें पत्र लिखे हैं। उन में से सैकड़ों ने बाइबल के पाठों का अध्ययन करने की माँग की, अनेकों लोगों ने विभिन्न प्रश्न पूछे। बहुतेरे लोगों ने हमें लिखकर बताया कि प्रभु का वचन सुनकर उनके जीवनों में एक बड़ा परिवर्तन हुआ है। अनेकों लोगों ने परमेश्वर के वचनानुसार उद्धार की योजना को सुनकर प्रभु यीशु में विश्वास किया है, तथा अपने पापों से पश्चात्ताप करके अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लिया है। हाल ही में आए एक पत्र के अनुसार, दस लोगों ने एक साथ बपतिस्मा लिया, एक अन्य पत्र के अनुसार पांच व्यक्तियों ने प्रभु के नाम से बपतिस्मा लिया, तथा अनेकों और हैं जिन्हों ने प्रभु के वचन को सुनकर उसे ग्रहण किया है तथा उसकी आज्ञाओं को मानने के लिये अपने आप को सौंप दिया।

वास्तव में, परमेश्वर का वचन प्रभावपूर्ण है। पवित्र बाइबल के अनुसार, परमेश्वर कहता है, "जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर उपज

उपजाते हैं जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है, उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैंने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा।" (यशायाह ५५ : १०-११)।

किन्तु, परमेश्वर के वचन को सुनने का परिणाम सदा एक सा ही नहीं निकलता। उसके वचन को सुनकर सभी लोग उसे ग्रहण नहीं करते। उसके वचन को सुनकर सब लोग अपने आप को उसकी आज्ञा मानने के लिये नहीं सौंप देते।

अनेकों लोग परमेश्वर के वचन को सुनकर क्रोधित हो उठते हैं, वे उसकी निन्दा करते हैं, वे उसे सुनना नहीं चाहते, क्योंकि वह उनके पापों को ; उनकी त्रुटियों को दर्शाता है। वे उसके वचन के सम्पर्क में नहीं आना चाहते, क्योंकि वह उनके मनों पर पड़े हुए परदे को हटाकर उनके वास्तविक चित्र को प्रकट करता है। वे उसके वचन के सामने नहीं आना चाहते, क्योंकि परमेश्वर का वचन एक ऐसा आईना है जिसके सामने आकर सब कुछ स्पष्ट दिखाई देता है।

बाइबल में, प्रेरितों ७ अध्याय में, हमें स्तिफ़नुस नाम के यीशु के सुसमाचार के एक प्रचारक के बारे में मिलता है। वास्तव में, स्तिफ़नुस वह पहिला मसीही था जिसने यीशु का प्रचार करने के कारण अपने प्राणों को खोया। हम पढ़ते हैं कि स्तिफ़नुस आत्मिक उन्माद से भर-कर, यहूदी लोगों के एक जन-समूह को यीशु का प्रचार करता है। उस ने उन्हें बताया, कि यीशु उनके बीच में उनका उद्धार करने को आया, उन्हें अनन्त जीवन देने के लिये आया, उन्हें स्वर्ग का मार्ग बताने के लिये आया। परन्तु उन्हों ने उसे ग्रहण नहीं किया, उन्हों ने उसका निरादर किया, उसका उपाहस उड़ाया, और यहाँ तक, कि उसे एक क्रूस पर चढ़ाकर उसे निर्दयता से मार डाला। उस ने कहा, कि जबकि तुम्हें

चाहिए था कि तुम उसे स्वीकार करते और अपने पापों से फिरकर उसकी आज्ञाओं को मानते, तुम ने इसके विपरीत उसका विरोध किया और उसे मार डाला। लिखा है, उस की बातें सुनकर वे लोग जल गए, और उस पर दांत पीसने लगे, परन्तु स्तिफ़नुस उन्हें यीशु के बारे में बताता रहा·····तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिये, और एक चित्त होकर उस पर झपटे। और उसे नगर के बाहर निकालकर पत्थरवाह करने लगे।

सो हम देखते हैं, कि वे लोग स्तिफनुस के प्रचार को सुनकर क्रोधित हो उठे, और यहां तक, कि वे अपने मनों में जल गए, और उस पर दांत पीसने लगे। वे लोग नहीं चाहते थे कि कोई उनके पापों तथा त्रुटियों को इस प्रकार से दर्शाए; वे नहीं चाहते थे, कि वे यीशु को ग्रहण करें और वह उन्हें उनके पापों से शुद्ध करे, क्योंकि वे उन्हीं में अपना जीवन बिताना चाहते हैं। इसी प्रकार से, आज भी सैकड़ों लोग प्रभु के वचन को सुनकर अपना मन फिराने के विपरीत क्रोधित हो उठते हैं, क्योंकि वे अपने कामों की निन्दा नहीं सुनना चाहते; वे अपने पापों को, अपने बुरे कामों को, तथा अनुचित मार्गों को छोड़ना नहीं चाहते।

कुछ लोग प्रभु के वचन को सुनकर इसलिये भी क्रोधित हो उठते हैं, क्योंकि उसकी आज्ञाएं उन्हें मूर्खतापूर्ण लगती है। वे उसके वचन को उस नामान कोढ़ी की तरह सुनते हैं, जिसके बारे में हम २ राजा ५ अध्याय में पढ़ते हैं। नामान के पास संसार की कदाचित् सभी वस्तुएं थीं। उसके पास यश था, मान था, धन था, परन्तु वह कोढ़ी था। परन्तु एक दिन जब नामान को पता चला कि इस्राएल देश में परमेश्वर का एक भविष्यद्वक्ता है, जिसके द्वारा परमेश्वर लोगों से बातें करता है, और वह नामान को कोढ़ से चंगा कर सकता है। तो नामान बहुत सा धन इत्यादि लेकर इस्राएल देश को उस भविष्यद्वक्ता से मिलने को चल पड़ा। जब वह इस्राएल में पहुंचा तो, परमेश्वर के जन ने अपने एक दूत के द्वारा उसके पास यह कहला भेजा, कि तू जाकर

यरदन नदी में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू कोढ़ से शुद्ध होगा। लिखा है, "परन्तु नामान यह कहता हुआ चला गया, कि मैं ने तो सोचा था, कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और खड़ा होकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ को दूर करेगा!" उसने कहा, "क्या दमिश्क की आबाना और पर्पर नदियां इस्राएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं? क्या मैं उन में स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता हूं?" और लिखा है, "इसलिये वह जलजलाहट से भरा हुआ लौटकर चला गया।"

परन्तु नामान यहां एक बड़ी भारी मूर्खता कर रहा था। वह परमेश्वर के वचन की सामर्थ की तुलना अपने ज्ञान से कर रहा था। वह उसकी आज्ञा को नहीं, परन्तु यरदन के जल को महत्व दे रहा था। किन्तु कुछ देर पश्चात् जब उस ने अपने आप को नम्र किया, तो उस ने अपना मन फिराया, और, "तब उस ने परमेश्वर के भक्त के वचन के अनुसार यरदन को जाकर उस में सात बार डुबकी मारी, और उस का शरीर छोटे लड़के का सा हो गया; और वह शुद्ध हो गया।"

आज भी परमेश्वर के वचन के प्रति अनेकों लोगों का व्यवहार नामान का सा है। वे उसकी आज्ञाओं को सुनकर क्रोधित हो उठते हैं, उनका उपहास उड़ाते हैं। बहुतेरे लोगों के लिये यीशु के क्रूस की कथा ठोकर का कारण है। उनके लिये यह स्वीकार करना लगभग असम्भव सा है, कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु के कारण संसार के सब लोगों का मेल परमेश्वर के साथ स्थापित हो सकता है। बहुतेरे लोग यीशु के सुसमाचार की आज्ञाओं को सुनकर नामान की तरह जल-जलाहट से भरकर पूछते हैं, कि कोई क्योंकर यीशु के नाम से जल में बपतिस्मा लेकर पापों से शुद्ध हो सकता है? परन्तु क्या कोई मनुष्य इसका उत्तर दे सकता है, कि नामान किस प्रकार से यरदन में डुबकी लगाकर शुद्ध हो गया? क्या वह परमेश्वर की सामर्थ नहीं थी?

इसी प्रकार से आज, जब हम यीशु की आज्ञा को मानते हैं, उस ने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।" (मरकुस १६ : १६), सो उसकी आज्ञा को मानने के फलस्वरूप हमारा उद्धार उसकी सामर्थ से होता है। किन्तु, जब लोग नामान की तरह अपने ज्ञान पर घमन्ड करके परमेश्वर के वचन को तुच्छ जानते हैं, तो वे क्रोध व जलजलाहट से भरे, अपने पापों को लिये हुए नामान की तरह लौट जाते हैं।

परन्तु, परमेश्वर के वचन को सुनकर अकसर लोग न केवल क्रोधित ही हो उठते हैं, बहुतेरे लोग उसके वचन को सुनकर उदास हो जाते हैं, और उस मनुष्य की तरह शोक करते हुए लौट जाते हैं, जिसका वर्णन हमें मरकुस १० अध्याय में मिलता है। लिखा है, कि एक बार जब यीशु मार्ग में जा रहा था "तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उस से पूछा, हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं? यीशु ने उस से कहा, तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर। तू आज्ञाओं को तो जानता है; हत्या न करना, व्यभिचार न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना। उस ने उस से कहा, हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूं। यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया, और उस से कहा, तुझ में एक बात की घटी है; जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले। इस बात से उसके चिहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।"

सो वह मनुष्य जो अनन्त जीवन को पाने की अभिलाषा लेकर प्रभु के पास आया था, प्रभु की बात सुनकर उदास हो गया, और शोक करता हुआ चला गया। क्यों? क्योंकि वह बहुत धनी था! उसके

पास बहुत धन था, और वह अपने धन से बड़ा प्रेम करता था। परन्तु प्रभु ने उस से कहा, कि अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिये तुझे मेरे पीछे चलना होगा, और मेरे पीछे चलने से पहिले तुझे उस वस्तु का त्याग करना होगा जिस से तू सबसे अधिक प्रेम करता है। किन्तु यह बात उस मनुष्य के लिये बड़ी कठिन थी। वह अनन्त जीवन तो पाना चाहता था, परन्तु कुछ त्याग करना नहीं चाहता था।

आज भी संसार में अनेकों लोगों की दशा उस धनी मनुष्य के समान है, जो प्राप्त करना तो चाहते हैं परन्तु कुछ देना नहीं चाहते। वे चाहते हैं कि उन्हें मुक्ति प्राप्त हो, वे चाहते हैं कि उन्हें अनन्त जीवन मिले, परन्तु इसके बदले में वे कुछ भी नहीं देना चाहते। वास्तव में, जब प्रभु के पीछे चलने के लिये उन्हें कुछ त्यागने को कहा जाता है तो वे यह सुनकर बड़े उदास हो जाते हैं। और निःसंदेह, वे उसी मनुष्य की तरह शोक करते हुए वापस चले जाते हैं। परन्तु कोई भी मनुष्य बिना त्याग के यीशु के पीछे नहीं चल सकता। उस ने कहा, "जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं, और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं। और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। जो अपने प्राण बचाता है," यीशु ने कहा, "वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।" (मत्ती १० : ३७, ३८)।

कोई भी मनुष्य यीशु के पीछे अपना धन, परिवार, या संसार की किसी अन्य वस्तु को साथ लेकर नहीं चल सकता। केवल एक ही वस्तु है जिसे साथ लेकर आप यीशु के पीछे चल सकते हैं, और वह है "क्रूस"! इसका अर्थ यह नहीं है, कि आप एक क्रूस अपने हाथ में लेकर या गले में लटकाकर चलें, परन्तु इसका अर्थ यह है कि यीशु का अनुसरण करने में प्रत्येक दुख व कठिनाई का सामना करने के लिये सदा तैयार रहें। कोई भी मनुष्य तब तक अनन्त जीवन प्राप्त नहीं कर

सकता जब तक वह अपनी सारी वस्तुओं और स्वयं अपने आप को भी प्रभु की आज्ञाओं के सामने महत्त्वरहित न समझे।

परन्तु बहुतेरे लोग ये बातें सुनकर, उस धनी मनुष्य की तरह उदास हो जाते हैं। वे उद्धार पाने की अभिलाषा तो रखते हैं परन्तु कुछ भी त्यागना या छोड़ना नहीं चाहते। किन्तु, कोई भी मनुष्य त्याग व प्रभु की आज्ञापालन के बिना अनन्त जीवन में प्रवेश नहीं कर सकता। प्रभु अपने वचन के द्वारा स्पष्टता से बताता है, कि मनुष्य उसके पास केवल यह विश्वास लेकर नहीं आए कि वह उसका उद्धार कर सकता है, परन्तु उसे चाहिए कि वह अपना मन फिराए, अर्थात् अपने पापों को छोड़े; पूर्व विश्वास तथा मनुष्यों की बनाई हुई शिक्षाओं को त्यागे और प्रत्येक उस वस्तु को अपने से दूर करे जो उसे प्रभु की आज्ञा मानने से रोकती है।

प्रभु यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपना प्राण (अर्थात् आत्मा) खो दे, या उस की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा?" (लूका ९ : २३-२५)।

मित्रो, परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, वह आपको नाश होने से बचाना चाहता है। मनुष्य को पाप के दन्ड से बचाने के लिये वह प्रभु यीशु मसीह के रूप में इस संसार में प्रकट हुआ। प्रभु यीशु ने संसार के सब लोगों के पापों को अपने ऊपर लेकर क्रूस की भयानक मृत्यु का दन्ड सहा। प्रभु यीशु आज आपका उद्धार करना चाहता है, वह आपको अनन्त जीवन देना चाहता है। उसने कहा, जो मुझ पर विश्वास करेगा, और अपने पापों तथा पूर्व जीवन से अपना मन फिराएगा, और मेरे

नाम से बपतिस्मा लेगा मैं उसका उद्धार करूंगा। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८)।

आज से लगभग १९०० वर्ष पूर्व जब प्रेरित पतरस ने इसी सुसमाचार का प्रचार लोगों की एक भीड़ के बीच में किया, तो लिखा है, "सो जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्हों ने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।" (प्रेरितों २ : ४१)। और आज, फिर से हज़ारों लोगों ने उसी सुसमाचार को सुना है। कदाचित् कुछ लोग इसे सुनकर क्रोधित हुए होंगे, कुछ लोग इसे सुनकर उदास व शोकित, हुए होंगे। परन्तु मेरा विश्वास है, कि उन्हीं लोगों में आज कुछ इस प्रकार के भी लोग हैं, जो उन तीन हज़ार लोगों की तरह आनन्दित हुए होंगे, जिन्होंने अपना मन फिराकर यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लिया। क्या आप प्रभु की आज्ञा मानने के लिये तैयार हैं? वह आपको यह कहकर बुला रहा है, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती ११ : २८)।

१४

सब मनुष्य दुख क्यों भोगतें हैं ?

अक़सर हम सोचते हैं, कि संसार में लोगों को तरह-तरह के दुखों का सामना क्यों करना पड़ता है। क्यों सब लोग दुख उठाते हैं ? क्यों वे लोग भी जो अच्छा जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करते हैं दुखों के शिकार होते हैं ? अक़सर हम सुनते हैं, कि संसार के किसी भाग में भूकम्प या भारी तूफ़ान के आ जाने पर हज़ारों लोग बे-घर-बार हो गए, अन्य सैंकड़ों लोग हवाई जहाज़ की दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं, अन्य सैंकड़ों रेल दुर्घटनाओं में मारे जाते या घायल होते हैं। फिर जल में दुर्घटनाएं होती हैं, सड़कों पर दुर्घटनाएं होती हैं, अनेकों तरह की बीमारियां हैं, भुखमरी हैं, बाढ़ और सूखा है, और इसी प्रकार से अनेकों अन्य वस्तुएं हैं, जिनके कारण लोगों को दुखों का सामना करना पड़ता है। परन्तु लोगों पर ऐसी आपत्तियां क्यों आती हैं ? कुछ लोगों का विचार है, कि वे लोग, जिन पर इस प्रकार के संकट आते हैं, अपने पापों का फल भुगत रहे हैं। जब यरुशलेम में एक गुम्मट के गिरने से कुछ व्यक्तियों की मृत्यु हो गई, तो वहां के लोग कहने लगे कि वे लोग बड़े पापी थे। परन्तु प्रभु यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम समझते हो, कि वे अठारह जन जिन पर शीलोह का गुम्मट गिरा, और वे दबकर मर गए : यरुशलेम के और सब रहनेवालों से अधिक अपराधी थे ? मैं तुम से कहता हूं" यीशु ने कहा, "कि नहीं ; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम भी सब इसी रीति से नाश होगे।" (लूका

१३:४,५) । सो इस प्रकार की दुर्घटनाएं लोगों पर परमेश्वर के न्याय के रूप में नहीं आतीं, परन्तु उनका घटना आकस्मिक, या स्थिति अनुसार, या फिर प्राकृतिक स्वभाव का होता है ।

कभी-कभी हम ऐसे लोगों को भी देखते हैं जो जन्म से अन्धे, लंगड़े, या अपंग हों । ऐसे लोगों को देखकर कुछ लोग सोचते हैं, कि कदाचित् वे अपने पिछले जन्म का फल भुगत रहे हैं । परन्तु यह सत्य नहीं है । सबसे पहले हमें यह स्मरण रखना चाहिए, कि पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार प्रत्येक मनुष्य के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है । (इब्रानियों ९:२७) । अर्थात्, मरने के बाद मनुष्य फिर से जन्म नहीं लेता । तो फिर वे लोग ऐसे क्यों जन्मे? यूहन्ना ९ अध्याय में हमें इसी प्रकार की एक घटना का उल्लेख मिलता है । लिखा है, प्रभु यीशु और उसके चेले एक बार मार्ग में जा रहे थे, कि उन्होंने एक अन्धे व्यक्ति को देखा, यह मनुष्य जन्म से ही अन्धा था सो उसके चेलों ने उस से पूछा कि "हे रब्बी, किसने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या इसके माता-पिता ने ?" इस पर "यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इसने पाप किया था ; न इसके माता-पिता ने : परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों ।"

जब मैं इस प्रकार के किसी मनुष्य को देखता हूं तो मेरा मन परमेश्वर के प्रति धन्यवाद से परिपूर्ण हो उठता है, मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं कि उसने मुझे अन्धा, लंगड़ा, या गूंगा उत्पन्न नहीं किया । वास्तव में ऐसे लोगों को देखकर हमें परमेश्वर के प्रति आदर तथा भय से परिपूर्ण हो जाना चाहिए । उन में हम परमेश्वर के कामों को देखते हैं । उनके द्वारा परमेश्वर हमें चेतावनी देता है, कि उन्हें देखकर हम अपने मनों में परमेश्वर का भय रखें, और अपने अंगों को उसकी महिमा के कार्यों को करने में लगाएं ।

परन्तु कुछ लोग अपनी गलतियों के कारण भी दुख उठाते हैं । उदाहरण स्वरूप, वे लोग जो शराब पीते हैं या अन्य नशीली वस्तुओं

का उपयोग करते हैं, या जुआ खेलते हैं, या इसी प्रकार के कोई और काम करते हैं, यदि उन पर कोई संकट आता है तो वे अपनी ही गलती के कारण दुख उठाते हैं। इसी प्रकार के लोगों में वे लोग भी सम्मिलित हैं जो अपनी आय को देखकर अपना खर्चा नहीं चलाते, और वे जो अपने परिवार को नियोजित नहीं रखते।

इसके अतिरिक्त, कुछ अन्य लोगों के दुख उठाने का कारण उनका अपना ही आलसीपन होता है। वे काम नहीं करना चाहते। ऐसे ही लोगों के बारे में बुद्धिमान् लेखक, नीतिवचन २२:१३ में कहता है, कि "आलसी कहता है, बाहर तो सिंह होगा! मैं चौक के बीच घात किया जाऊंगा।" अर्थात्, वे बहाने बनाते हैं, क्योंकि वे बाहर नहीं जाना चाहते, वे परिश्रम नहीं करना चाहते। नीतिवचन २६:१४ में लेखक फिर कहता है, "जैसे किवाड़ अपनी चूल पर घूमता है, वैसे ही आलसी अपनी खाट पर करवटें लेता है।" सो यदि इस प्रकार के लोगों को भोजन, वस्त्र या किसी अन्य वस्तु की घटी होती है, तो वे अपने ही आलसीपन के कारण दुख उठाते हैं, ऐसे लोग अपने दुखों, के लिये स्वयं अपने आपको ही दोषी ठहरा सकते हैं।

किन्तु, रोमियों ८:२८ में हम पढ़ते हैं, "कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" तो क्या इसका अर्थ यह हुआ, कि उन लोगों के लिये दुख और संकट भी भलाई का ही कारण सिद्ध होते हैं? जी हां, इसका बिल्कुल यही अर्थ है। परन्तु याद रखें, कि इस योजना में केवल वही लोग सम्मिलित हैं जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं। और प्रभु ने कहा कि, जो मुझसे प्रेम रखते हैं वे मेरी आज्ञाओं को मानते हैं। (यूहन्ना १४: १५)। अर्थात् वे लोग जो प्रभु की आज्ञाओं को मानते व उन पर चलते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई को ही उत्पन्न करती हैं।

इस बात का एक बड़ा ही अच्छा उदाहरण हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक के आठ अध्याय में मिलता है। मसीहीयत का यरुशलेम में अभी आरम्भ ही हुआ था, कि यीशु के सुसमाचार के प्रचारक स्तिफ़नुस को लोगों ने पत्थरवाह करके मार डाला। इसके बाद, लिखा है, "उसी दिन यरुशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा, और प्रेरितों को छोड़ सबके सब यहूदिया, और सामरिया देशों में तित्तर-बित्तर हो गए।" सो फिर क्या हुआ? इससे क्या भलाई उत्पन्न हुई? चौथे पद में हम पढ़ते हैं कि "जो तित्तर-बित्तर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे"

अर्थात्, इससे पहिले, वे सबके सब मसीही यरुशलेम में ही रहते थे। वहीं पर उन्होंने सुसमाचार सुना, वहीं पर उन्होंने प्रभु की आज्ञा का पालन किया, और अब वे सब वहीं रहते थे। परन्तु प्रभु ने उन्हें आज्ञा देकर कहा था, कि तुम संसार में सब जगह जाकर लोगों को सुसमाचार सुनाओ, उन्हें चेला बनाओ और बपतिस्मा दो। सो जब उन पर उपद्रव हुआ, जब उन पर दुख और संकट आए, तो वे यरुशलेम को छोड़कर भागे। और जहां-जहां वे लोग गए उन्होंने यीशु के सुसमाचार को लोगों को सुनाया। और इसका परिणाम यह हुआ कि मसीहीयत शीघ्रता से संसार के अन्य भागों में फैलने लगी, और अनेकों देशों में मसीह की कलीसियाओं की स्थापना होने लगी। परन्तु इस सब के पीछे क्या कारण था? उपद्रव, दुख, संकट, अत्याचार! यदि आरम्भ में यरुशलेम की कलीसिया के ऊपर उपद्रव न होता तो वे इधर-उधर तित्तर-बित्तर न होते।

सो कभी-कभी परमेश्वर के लोगों पर दुख व संकट आते हैं, उस समय वे समझ नहीं पाते कि उनके ऊपर वे उपद्रव क्यों हो रहे हैं। कदाचित् ऐसे समय में अन्य लोग उनका उपहास उड़ाएं, और कहें, कि देखो ये लोग मसीही हैं, ये कितने ईश्वर-भक्त बनते हैं, परन्तु तौभी इन्हें कितने दुखों का सामना करना पड़ रहा है। किन्तु परमेश्वर के

लोगों को यह सदा याद रखना चाहिए, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं।

परमेश्वर अपने लोगों से प्रेम रखता है, और इसी कारण एक पिता के समान वह उन्हें ताड़ना भी देता है। बाइबल में, भजन संहिता का लेखक कहता है, "क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसको तू ताड़ना देता है, और अपनी व्यवस्था सिखाता है।" (भजन ९४:१२) और फिर, नीतिवचन का लेखक कहता है. "जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उस से प्रेम रखता है, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है।" (नीतिवचन १३:२४)। इसलिये, यदि कोई परमेश्वर के हाथ से दुख सहे तो यह उसके लिये प्रसन्नता की बात है, क्योंकि यह इस बात का संकेत है कि परमेश्वर उस से प्रेम रखता है। परन्तु ऐसे समय में परमेश्वर के प्रति हमारा व्यवहार अक़सर उन बालकों के समान होता है, जो अपने माता-पिता की मार और डांट को बड़ा बुरा समझते हैं, क्योंकि वे जानते नहीं कि वह उन्हीं की भलाई के लिये है।

अकसर लोग बीमार पड़ जाते हैं, इसके बहुत से कारण हो सकते हैं, हो सकता है उन्होंने किसी अनुचित वस्तु का उपयोग किया हो, या किसी दुर्घटना का शिकार बने हों। परन्तु कभी-कभी हमारी बीमारी के पीछे भी परमेश्वर का हाथ होता है। सम्भव है किसी वस्तु की बहुतायत के कारण हमारा मन फूल उठा हो, और हम घमन्डी या अभिमानी बन गए हों—तब एकाएक हम बहुत बुरी तरह बीमार पड़ जाते हैं—उसका कुछ भी कारण हो सकता है—परन्तु उस सबके पीछे परमेश्वर का हाथ होता है। सम्भव है परमेश्वर हमें नम्रता का पाठ सिखाना चाहता हो। और तब, जब हम घर में या हस्पताल में बीमारी के बिस्तर पर पड़े होते हैं, तो हमारे स्वभाव में कितनी नम्रता आ जाती है। रोग-ग्रस्त, दुर्बल और शक्तिहीन होकर हम कितने नम्र बन जाते हैं! हम बार-बार परमेश्वर को याद करते हैं, उस से प्रार्थनाएं

करते हैं; और अन्य लोगों से बिनती करते हैं कि वे हमारे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करें।

अनेकों समय हमारे जीवनों में उपद्रव व संकट कदाचित् इसलिये आते हैं क्योंकि हम परमेश्वर के मार्ग से भटककर अपनी इच्छानुसार चलने लगते हैं। इस महत्त्वपूर्ण पाठ को हम योना नबी के जीवन से सीखते हैं। आप में से जिन लोगों ने बाइबल में से योना की पुस्तक को पढ़ा है, आप को स्मरण होगा कि योना परमेश्वर का नबी था। परमेश्वर ने योना को आज्ञा देकर कहा, कि नीनवे नगर को जाकर वहां के लोगों में मन फिराव का प्रचार कर क्योंकि उनकी बुराई बहुत बढ़ गई है। परन्तु योना को यह कार्य बड़ा कठिन जान पड़ा, सो वह वहां से भागा, और लिखा है, कि वह तर्शीश को जानेवाले एक जहाज़ पर सवार हो गया। परन्तु मार्ग में परमेश्वर ने समुद्र में एक प्रचन्ड आन्धी चलाई, समुद्र में एक बड़ा तूफ़ान उठा, और यहां तक कि जहाज़ टूटने पर था। जहाज़ पर सवार सभी लोग अपने-अपने प्राणों के लिये भयभीत हो उठे। तब वे योना के पास आए, योना जानता था कि वह संकट उसी के कारण था, क्योंकि वह परमेश्वर की आज्ञा को टालकर भाग रहा था, सो उसने उन लोगों से कहा, कि मुझे समुद्र में फेंक दो तो यह तूफ़ान शान्त हो जाएगा। और लिखा है, कि जब उन्होंने योना को समुद्र में फेंक दिया तो समुद्र की भयानक लहरें थम गईं।

परन्तु योना के लिये परमेश्वर ने एक जल जन्तु ठहराया था जिसने योना को निगल लिया। तब तीन दिन और तीन रात योना उस जन्तु के पेट में रहा। और लिखा है, वहां संकट में पड़े हुए योना ने परमेश्वर की दोहाई दी। उसने अपने पाप से मन फिराया और परमेश्वर के सम्मुख अपने-आपको नम्र किया। तब परमेश्वर की योजनानुसार उस बड़े जन्तु ने योना को पृथ्वी पर लाकर उगल दिया। तब

परमेश्वर ने योना को आज्ञा देकर कहा, कि वह नीनवे के नगर को जाए, और तब योना परमेश्वर के वचनानुसार नीनवे को गया।

सो इस प्रकार से, जब हम परमेश्वर के सामने उल्टी चाल चलने लगते हैं, जब हम उसकी आज्ञा को सुनकर टालना चाहते हैं, तो अक्सर हमारे जीवनों में एकाएक कोई प्रचन्ड तूफ़ान उठ खड़ा होता है। उस समय कदाचित् हम भयानक रूप से बीमार पड़ जाएं, या किसी वस्तु की हानि उठाएं, या किसी और संकट में फंस जाएं। परन्तु उसका कारण यह होता है, कि परमेश्वर हमारा ध्यान हमारी गलतियों पर दिलाना चाहता है। वह चाहता है, कि उस समय संकट में पड़े हुए, योना नबी की तरह, हम अपनी गलती को अनुभव करें, और अपने पाप से मन फिराकर, अपने आप को उसकी आज्ञा मानने के लिये उसे सौंप दें।

किन्तु, कभी-कभी हमारे दुखों का कारण यह भी हो सकता है, कि परमेश्वर कदाचित् हमारे विश्वास की परीक्षा ले रहा हो। इस सच्चाई को हम इब्राहीम के जीवन में बड़ी ही स्पष्टता से देखते हैं। आप में से जिन लोगों ने बाइबल में उत्पत्ति नाम की पुस्तक को पढ़ा है, आप ने इब्राहीम के बारे में अवश्य पढ़ा होगा। इब्राहीम परमेश्वर का भक्त था, वह परमेश्वर से डरता था। उस समय इब्राहीम बहुत बूढ़ा था। उसके यहां केवल एक पुत्र को छोड़कर और कोई सन्तान नहीं थी। स्वभाविक ही है, कि इब्राहीम अपने पुत्र से अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करता था। यदि इस संसार में इब्राहीम को कोई वस्तु अधिक प्रिय थी, तो वह उसका पुत्र था। परन्तु इब्राहीम के ऊपर एक भारी परीक्षा आई। एक दिन, परमेश्वर ने इब्राहीम को आज्ञा देकर कहा, कि अपने एकलौते पुत्र को लेकर एक पहाड़ के ऊपर जा और उसे मेरे निमित्त बलि करके चढ़ा। सो इब्राहीम एक बड़े संकट में पड़ गया, उसके सामने एक बहुत भारी परीक्षा थी। परन्तु इब्राहीम परमेश्वर में बड़ा विश्वास रखता था, वह उससे डरता था। सो वह परमेश्वर की आज्ञानुसार, अपने पुत्र को साथ लेकर उसे अपने हाथों से बलि करने के लिये निकल पड़ा। परन्तु परमेश्वर अपने लोगों को परीक्षा में से निका-

लना भी जानता है। सो जब निश्चित स्थान पर पहुंचकर, इब्राहीम ने अपने पुत्र को बलि करने के लिये अपना हाथ उठाया, तो एकाएक परमेश्वर ने उसे यह कहकर रोका, "उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उस से कुछ कर : क्योंकि तूने जो मुझसे अपने पुत्र, वरन अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा ; इससे मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।"

सो मित्रो, आज मैंने आपको इस प्रकार से यह बताने का प्रयत्न किया कि संसार में सब लोगों के ऊपर संकट क्यों आते हैं। क्यों सब लोगों को दुख उठाने पड़ते हैं।

क्या आप के ऊपर कोई संकट है ? क्या आप दुख उठा रहे हैं ? आपको दुखों का सामना क्यों करना पड़ रहा है ? बाइबल का लेखक १ पतरस ४:१५,१६ में कहता है, "तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा, या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुख न पाए। पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।" प्रभु यीशु ने कहा, कि यदि कोई मनुष्य मेरे कारण इस संसार में दुख व क्लेश सहेगा, तो उसे स्वर्ग में बड़ा फल मिलेगा। क्या आप एक मसीही होने के कारण दुख उठा रहे हैं ? क्या आप एक मसीही हैं ? यदि नहीं, तो आप यीशु मसीह में विश्वास करके, अपने पापों से पश्चात्ताप करके, और यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेकर एक मसीही बन सकते हैं। और तब, यदि एक मसीही होने के कारण आप दुख उठाएं, तो प्रभु यीशु के इन शब्दों को सदा याद रखें, उसने कहा, "धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है।" (मत्ती ५:१०-१२)।

१५

आप कैसे सुनते हैं ?

आईये, मेरे साथ बाइबल में से पहिले राजा नामक पुस्तक को निकालें। हम इसमें से १३ अध्याय को २४ पदों तक पढ़ेंगे। यह घटना, जिसके बारे में हम पढ़ने जा रहे हैं, पुराने नियम के दिनों में, यीशु मसीह के संसार में आने के सैंकड़ों वर्ष पूर्व घटी थी। मेरी आशा है, कि आप मेरे साथ इन बातों को बड़े ध्यान से देखेंगे, ताकि जिस महत्त्वपूर्ण पाठ को हम इस घटना से सीखेंगे वह हमारे जीवनों में प्रभावकारी बन सके। सो हम यूं पढ़ते हैं :

"तब यहोवा का वचन पाकर परमेश्वर का एक जन यहूदा से बेतेल को आया, और यारोबाम धूप जलाने के लिये वेदी के पास खड़ा था। उस जन ने यहोवा से वचन पाकर वेदी के विरुद्ध यों पुकारा, कि वेदी, हे वेदी ! यहोवा यों कहता है, कि सुन, दाऊद के कुल में योशिय्याह नाम एक लड़का उत्पन्न होगा, वह उन ऊंचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं, तुझ पर बलि कर देगा ; और तुझ पर मनुष्यों की हड्डियां जलाई जाएंगी। और उसने, उसी दिन यह कहकर उस बात का एक चिन्ह भी बताया, कि यह वचन जो यहोवा (परमेश्वर) ने कहा है, इसका चिन्ह यह है, कि ये वेदी फट जाएगी, और इस पर की राख गिर जाएगी। तब ऐसा हुआ, कि परमेश्वर के जन का यह वचन सुनकर जो उस ने बेतेल के विरुद्ध पुकारकर कहा, यारोबाम ने वेदी के पास से हाथ बढ़ाकर कहा, उसको पकड़ लो : तब उसका हाथ जो

उसकी ओर बढ़ाया गया था, सूख गया और वह उसे अपनी ओर खींच न सका। और वेदी फट गई, और उस पर की राख गिर गई ; सो यह चिन्ह पूरा हुआ, जो परमेश्वर के जन ने यहोवा से वचन पाकर कहा था। तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, अपने परमेश्वर यहोवा को मना और मेरे लिये प्रार्थना कर, कि मेरा हाथ ज्यों का त्यों हो जाए : तब परमेश्वर के जन ने यहोवा को मनाया और राजा का हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया। तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, मेरे संग घर चलकर अपना प्राण ठंडा कर, और मैं तुझे दान भी दूंगा। परमेश्वर के जन ने राजा से कहा, चाहे तू मुझे अपना आधा घर भी दे, तौभी तेरे घर न चलूंगा ; और इस स्थान में मैं न तो रोटी खाऊंगा और न पानी पीऊंगा। क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यों आज्ञा मिली है, कि न तो रोटी खाना, और न पानी-पीना, और न उस मार्ग से लौटना जिस से तू जाएगा। इसलिये वह उस मार्ग से जिस से बेतेल को गया था न लौटकर, दूसरे मार्ग से चला गया।" और फिर, आगे हम इस प्रकार से पढ़ते हैं :

"बेतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था, और उसके एक बेटे ने आकर उस से उन सब कामों का वर्णन किया जो परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल में किए थे ; और जो बातें उस ने राजा से कही थीं, उनको भी उस ने अपने पिता से कह सुनाया। उसके बेटों ने तो यह देखा था, कि परमेश्वर का वह जन जो यहूदा से आया था, किस मार्ग से चला गया, सो उनके पिता ने उन से पूछा वह किस मार्ग से चला गया ? और उस ने अपने बेटों से कहा, मेरे लिये गदहे पर काठी बान्धो ; तब उन्हों ने गधे पर काठी बान्धी, और वह उस पर चढ़ा, और परमेश्वर के जन के पीछे जाकर उसे एक बांज वृक्ष के तले बैठा हुआ पाया ; और उस से पूछा, परमेश्वर का जो जन यहूदा से आया था, क्या तू ही है ? उस ने कहा हां, वही हूं। उसने उससे कहा, मेरे संग घर चलकर भोजन कर। उस ने उस से कहा, मैं न तो तेरे संग लौट सकता, और न तेरे संग घर

में जा सकता हूं और न मैं इस स्थान में तेरे संग रोटी खाऊंगा वा पानी पीऊंगा। क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा मिली है, कि वहां न तो रोटी खाना और न पानी पीना, और जिस मार्ग से तू जाएगा उस से न लौटना।" इस पर, बेतेल के उस बूढ़े नबी ने उस से कहा, "जैसा तू नबी है वैसा ही मैं भी नबी हूं; और मुझ से एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा, कि उस पुरुष को अपने संग अपने घर लोटा ले आ, कि वह रोटी खाए और पानी पीए। और यह उसने उस से झूठ कहा। सो वह उसके संग लौट गया और उसके घर में रोटी खाई और पानी पीया। और जब वे मेज पर बैठे ही थे, कि यहोवा का वचन उस नबी के पास पहुंचा जो दूसरे को लौटा ले आया था। और उसने परमेश्वर के उस जन को जो यहूदा से आया था, पुकार के कहा, यहोवा यों कहता है, इसलिये कि तू ने यहोवा का वचन न माना, और जो आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी थी उसे भी नहीं माना; परन्तु जिस स्थान के विषय में उसने तुझ से कहा था, कि उस में न तो रोटी खाना और न पानी पीना, उसी में तूने लौटकर रोटी खाई, और पानी भी पीया है इस कारण तुझे अपने पुरखाओं के कब्रिस्तान में मिट्टी नहीं दी जाएगी। जब वह खा पी चुका, तब उस ने परमेश्वर के उस जन के लिये जिसको वह लौटा ले आया था गदहे पर काठी बन्धाई। जब वह मार्ग में चल रहा था, तो एक सिंह उसे मिला, और उसको मार डाला, और उसकी लोथ मार्ग पर पड़ी रही।"

यह सब कुछ आपके साथ पढ़ने से मेरा अभिप्राय यह है कि आप इस बात पर ध्यान दें, कि कोई भी मनुष्य धार्मिक दृष्टिकोण से, ईमानदार होते हुए भी, झूठ की प्रतीति कर सकता है। अभी जो वर्णन हम ने पढ़ा, इसमें हम देखते हैं कि एक ऐसा मनुष्य जो स्वयं परमेश्वर का एक नबी था, जिसके द्वारा परमेश्वर अन्य लोगों पर अपनी बातें प्रगट करता था, वह भी एक अन्य मनुष्य की बात को परमेश्वर का वचन समझकर धोखे में आ गया। विश्वास सुनने से

आता है। (रोमियों १०:१७)। परन्तु यदि कोई वास्तव में परमेश्वर का वचन सुनता है, तो उसका विश्वास परमेश्वर के वचन में होता है। किन्तु, यदि कोई मनुष्यों की बातों को सुनता है, यह समझकर की वे परमेश्वर का वचन है, तो उस व्यक्ति का विश्वास मनुष्य की बातों पर होगा। जिन दिनों में वह नबी रहता था, उस समय लोगों के पास आज की तरह बाइबल उपलब्ध नहीं थी। परन्तु उन दिनों में परमेश्वर अपने वचन को विभिन्न प्रकार से कुछ विशेष लोगों के ऊपर प्रगट किया करता था। किन्तु, मनुष्य को एक बात सदा याद रखनी चाहिए, कि परमेश्वर कभी बदलता नहीं। जिस आज्ञा को एक बार मनुष्य को वह दे देता है, वह ज्यों की त्यों ही रहती है। यह सिद्धान्त उस समय भी यूं ही था जबकी परमेश्वर अपनी इच्छा को विभिन्न लोगों के ऊपर प्रगट किया करता था, और आज भी जबकि उसने अपना वचन बाइबल में लिखित रूप में हमें दिया है।

यहूदा देश का वह परमेश्वर का जन अपने विश्वास में बड़ा ही पक्का था, और इस बात को हम इसमें देखते हैं कि जब बेतेल में राजा ने उसको अपने घर में आने और खाने-पीने के लिये निमन्त्रण देकर बुलाया, तो उसने राजा की बात मानने से यह कहकर इन्कार कर दिया कि "चाहे तू मुझे अपना आधा घर भी दे तौभी तेरे घर न चलूंगा ; और इस स्थान में मैं न तो रोटी खाऊंगा और न पानी पीऊंगा।" और उसने कहा, "क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यों आज्ञा मिली है, कि (उस स्थान पर) न तो रोटी खाना, और न पानी पीना, और न उस मार्ग से लौटना जिस से तू जाएगा।" सो हम देखते हैं, कि वह जानता था कि परमेश्वर ने उसे क्या आज्ञा दी है। परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी। परन्तु, जब बेतेल का वह बूढ़ा नबी उसके पास आया तो उस ने परमेश्वर के जन को यह कहकर मनाया, कि जैसे तू एक नबी है वैसे ही मैं भी एक नबी हूं, यह ठीक है कि परमेश्वर ने तुझे आज्ञा देकर कहा था कि तू

उस स्थान पर भोजन इत्यादि न करना ; परन्तु अभी थोड़ी ही देर पहले परमेश्वर ने मुझ पर प्रकट करके कहा है, कि तू उस मनुष्य को अपने यहां ले आ ताकि वह तेरे घर में भोजन खाए ।

और मित्रो, हम पढ़ते हैं कि उसने उस की बात मान ली और वह उस बूढ़े नबी के घर गया और उसने रोटी खाई और पानी पीया । यह उसकी एक बड़ी भारी गलती थी । उसे जानना चाहिए था, कि जिस आज्ञा को परमेश्वर ने एक बार दे दिया उसमें न तो कुछ घटाया जा सकता है, और न बढ़ाया जा सकता है, और न कुछ बदला जा सकता है । क्योंकि यहोवा परमेश्वर कभी बदलता नहीं । उसके सोच विचार मनुष्य की तरह नहीं हैं । यहूदा के उस नबी को उस बूढ़े नबी की बात मान लेने के अतिरिक्त उस से यूं कहना चाहिए था, कि परमेश्वर ने जिस आज्ञा को एक बार दे दिया उसमें कुछ भी बदला नहीं जा सकता ; उसे कहना चाहिए था, कि यदि परमेश्वर ने इस बात को तुझ पर प्रकट किया है, तो अवश्य ही वह मुझ पर भी इस बात को प्रगट करेगा क्योंकि मैं भी उसका नबी हूं । परन्तु इसके विपरीत हम पढ़ते हैं, कि उसने उस बूढ़े नबी के झूठ की प्रतीति की ; और उसकी बात को परमेश्वर का वचन समझकर मान लिया ।

आज हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि, उस ने हमें अपना सम्पूर्ण वचन एक पुस्तक के रूप में दिया है, परमेश्वर की इस पुस्तक को हम बाइबल कहते हैं । इस पुस्तक के बारे में एक स्थान पर लिखा है, "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है । ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए ।" (२ तीमुथियुस ३:१५) । सो आज हमारे पास परमेश्वर का वचन लिखित रूप में उपलब्ध है, जिसकी रचना उसकी प्रेरणा से की गई है । आज परमेश्वर अपनी इच्छा किसी भी मनुष्य पर, बाइबल के अतिरिक्त, किसी और तरह से प्रगट नहीं करता ।

आज वह किसी भी मनुष्य से एक दर्शन या स्वप्न इत्यादि के द्वारा बातें नहीं करता। क्योंकि आज उसने अपनी सम्पूर्ण इच्छा को लिखित रूप में बाइबल के भीतर मनुष्य को दिया है। जो कुछ भी हम जानना चाहते हैं परमेश्वर ने हमें अपने वचन में बताया है। सो हम पढ़ते हैं कि "विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" इसलिये, जब हम केवल बाइबल में से मसीह का वचन ही सुनते हैं, तो हमारा विश्वास केवल मसीह और उसके वचन में होता है, परन्तु जब हम मसीह के वचन के अतिरिक्त कुछ और ही सुनते हैं तो हमारा विश्वास मनुष्य के वचन पर होता है।

यहूदा के उस नबी से हम एक बहुत बड़ा पाठ सीखते हैं, और वह यह है, कि जब कभी भी हम बाइबल सम्बन्धी प्रचार सुनते हैं, या कोई प्रचारक हमें मसीह का सुसमाचार सुनाता है, चाहे वह प्रचारक कोई भी क्यों न हो, हमें चाहिए कि हम उसके प्रचार को बाइबल से मिलाएं और देखें, कि जो बातें वह कह रहा है क्या वे मसीह के वचन में हैं या नहीं? एक स्थान पर हम पढ़ते हैं, कि जब प्रेरित पौलुस और सीलास थिस्सलुनीके में प्रचार करने के बाद बिरीया नाम के एक स्थान पर आए; तो उन्हें यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि बिरीया के लोग थिस्सलुनीके के लोगों से बड़े भले थे क्योंकि, लिखा है, "उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में से ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं।" (प्रेरितों १७:११)। इस बात पर ध्यान दें, कि वे लोग प्रेरितों की शिक्षाओं को पवित्रशास्त्र से मिलाते थे और ढूंढ़ते थे कि जो बातें वे कहते थे वे पवित्रशास्त्र में लिखी हैं या नहीं। सो जबकि वे लोग प्रेरितों की शिक्षाओं को पवित्र शास्त्र के तराजू में तौलकर देखते थे कि वे बातें यों ही हैं या नहीं, तो आज हमें कितना अधिक प्रचारकों की शिक्षाओं को बाइबल से मिलाना चाहिए; जबकि आज संसार में अनेकों प्रकार के सुसमाचार सुनाए जा रहे हैं, और बाइबल के नाम पर तरह-तरह की शिक्षाएं दी जा रही हैं!

आज हज़ारों लोग उस नवयुवक नबी की तरह हैं जिसने उस बूढ़े नबी की बात परमेश्वर का वचन समझकर मान ली। जब वे सुनते हैं कि कोई मनुष्य बाइबल का प्रचार कर रहा है, तो वे उसकी शिक्षाओं पर अपनी बाइबल में से देखे बिना विश्वास ले आते हैं। वे उसपर केवल इसलिये विश्वास ले आते हैं, क्योंकि वह कहता है कि "मैं बाइबल का प्रचार कर रहा हूं" या "मैं मसीह का प्रचारक हूं।" परन्तु सुनिये, प्रेरित यूहन्ना कहता है, "हर एक आत्मा की प्रतीति न करो : बरन आत्माओं को परखो।" और मित्रो, परखने का केवल एक ही साधन है, अर्थात् पवित्र बाइबल, परमेश्वर का वचन। क्या आप सुन रहे हैं ?

सुनिये, कि प्रेरित पौलुस अपने मसीही भाईयों को लिखकर क्या कहता है, वह कहता है, "अब हे भाईयो, मैं तुमसे बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो ; और उन से दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं ; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे-साधे मन के लोगों को बहका देते हैं।" (रोमियों १६:१७,१८)। इसलिये, हमें यीशु मसीह के नए नियम में से पढ़ना चाहिए, और याद रखना चाहिए कि मसीह ने अपने प्रेरितों के द्वारा हमें क्या शिक्षा दी है। और यदि उस शिक्षा के विपरीत कोई मनुष्य हमें कोई और ही शिक्षा देता है तो हमें उसे ताड़ लेना चाहिए और उस से बचकर रहना चाहिए। यहां प्रेरित और मेरे कहने का मतलब यह कदापी नहीं है कि आप ऐसे लोगों को ताड़ लें या उन से बचकर रहें जो आपको उस शिक्षा के विपरीत शिक्षा देते हैं जिसे कदाचित आपने अपने माता-पिता, या अपने किसी प्रीस्ट या किसी धार्मिक अगुए के द्वारा सुना हो। परन्तु जिस शिक्षा का यहां वर्णन किया जा रहा है, वह नए नियम की शिक्षा है। हमें चाहिए कि हम प्रत्येक मनुष्य की शिक्षा को नए नियम की शिक्षाओं से मिलाएं और यदि वह उनके विपरीत हो तो उसे अस्वीकार कर दें।

परन्तु बहुतेरे लोग ऐसा नहीं करते। और इसलिये, सच्चाई को जान लेने के बाद भी वे झूठ की ओर झुकने लगते हैं। इसी तरह के कुछ लोग गलतिया नाम जगह पर भी थे। उन्हों ने प्रेरितों के द्वारा यीशु का सुसमाचार सुना था, और उस पर विश्वास किया था, और अपने पापों से मन फिराकर यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लिया था। (गलतियों ३:२६,२७)। परन्तु कुछ दिनों बाद, जब उन के बीच में कुछ अन्य लोग आए, तो वे उन्हें कुछ और ही बातों का प्रचार करने लगे, और गलतिया के वे लोग शीघ्र ही उनके प्रचार की ओर झुकने लगे। परन्तु जब प्रेरित पौलुस को इस बात का पता चला, तो उस ने उन्हें लिखकर कहा, "मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिरकर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं : पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्त्रापित हो।" (गलतियों १:६-८)।

सो यहां से हम देखते हैं, कि मसीह यीशु का वह सुसमाचार जो पहिले पहल सुनाया गया, और जिसका वर्णन आज हमें बाइबल में मिलता है, यदि उस सुसमाचार के विपरीत कोई मनुष्य या कोई स्वर्गदूत भी कोई और सुसमाचार सुनाए तो वह स्त्रापित हो। वास्तव में, केवल एक ही सुसमाचार है, जिसके द्वारा मनुष्य का उद्धार हो सकता है, और उसके बारे में हम यूं पढ़ाते हैं, "कि पवित्र शास्त्र के वचनके अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया ; और गाड़ा गया ; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।" (१ कुरिन्थियों १५ : १-४)।

जब हम बाइबल में से प्रेरितों के काम की पुस्तक के दूसरे अध्याय

को पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि इसी सुसमाचार का प्रचार लोगों के बीच में सबसे पहिले किया गया। और जब उन्होंने ये सब बातें सुनीं, तो लिखा है, "तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाईयो, हम क्या करें ?" लिखा है, "तब पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २:३७,३८)।

सो यहां से हम देखते हैं, कि वे लोग मसीह का सुसमाचार सुनने के बाद जानना चाहते थे कि वे अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये क्या करें ; वे उद्धार पाने के लिये क्या करें ? और हम यह भी देखते हैं, कि उन्हें क्या जवाब दिया गया, उनसे कहा गया, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।" और हम आगे पढ़ते हैं कि उनमें से तीन हज़ार लोगों ने ऐसा ही किया, और प्रभु ने उनका उद्धार किया, और अपनी कलीसिया में मिलाया। (प्रेरितों २:४१,४७)।

आज भी हमारे पास मसीह का केवल वही सुसमाचार है, और जो लोग उसे सुनकर उसमें विश्वास लाते हैं, उनके लिये आज भी प्रभु की केवल वही आज्ञा है, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" कोई भी मनुष्य यदि इसमें से कुछ भी घटाता या इसमें कुछ भी बढ़ाता है तो वह श्रापित हो। "और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं तो मुझ पर हाय।" (१ कुरिन्थियों ९:१६)।

और अब अन्त में मेरी आप से यही बिनती है, कि जिन बातों के ऊपर आज हम ने विचार किया है, और जो कुछ भी आप भविष्य में सुनेंगे, उन सब बातों को आप अपनी बाइबल से मिलाएं और देखें कि ये बातें यों ही हैं, या नहीं। क्योंकि आपकी आत्मा का उद्धार इसी मुख्य बात पर निर्भर है कि "आप कैसे सुनते हैं।"